सरल रचना-विधि

द्वितीय भाग

विद्यालंकार

सरल रचना-विधि

Simple Hindi Composition

PART II

BY

KRISHNA CHANDRA VIDYALANKAR

Revised By:-

Harish Chandra, M. A. B. T.
HEAD MASTER
D. A. V. High School, New Delhi

1st. Edition **1937.** *Price*-/**10**/-

अध्यापकों के प्रति

आठ आठ और दस दस वर्ष तक हिन्दी पढ़ने के बाद भी अधिकांश विद्यार्थी हिन्दी लिखना नहीं जानते। आश्चर्य की बात यह है कि जिन प्रान्तों में हिन्दी मातृ भाषा भी है, वहां के विद्यार्थी भी हिन्दी लेखन में बड़ी भद्दी भद्दी भूलें करते हैं। इसका कारण यह है कि हिन्दी रचना Composition पर हिन्दी के अध्यापक बहुत कम ध्यान देते हैं। अंग्रेजी का विद्यार्थी जब दूसरी तीसरी रीडर पढ़ने के साथ रचना के नियमों की भी शिक्षा पाने लगता है, वहां हिन्दी का विद्यार्थी आठ और दस साल तक भी हिन्दी रचना के नियमों से अनभिज्ञ रहता है। हिन्दी अध्यापकों के इधर ध्यान न देने का कारण यह भी है कि इस विषय पर पुस्तकें भी नहीं लिखी गईं। हमने इसी अभाव की पूर्त्ति का प्रयत्न किया है। रचना के सभी अंग—वाक्य रचना कहानी, निबन्धरचना, और पत्र-लेखन के अतिरिक्त विस्तार और बातचीत इसमें आजावें, ऐसा हमने ध्यान रखा है। हमारा विश्वास है कि इस पुस्तक के पाठ से, हिन्दी अध्यापकों को पढ़ाने में और विद्यार्थियों को रचना के नियम समझने में बहुत सुविधा होगी।

यह पुस्तक मिडिल श्रेणियों के लिए लिखी गई है। विविध स्कूलों में विद्यार्थियों का स्टैण्डर्ड भिन्न होता है। इसलिये अध्यापकों को अपने अपने स्कूल का स्टैण्डर्ड देखकर यह निश्चय कर

लेना चाहिये कि कौन कौन से प्रकरण किस श्रेणी में पढ़ाने चाहियें।

अध्यापक यदि यह पुस्तक पढ़ाने से पूर्व सरल रचना विधि का पहला भाग पढ़ लें, तो उन्हें विषय के प्रतिपादन में अधिक सुविधा होगी।

किसी भी भाषा के नियमों को हस्तगत करने के लिए, उनका अभ्यास अत्यन्त आवश्यक होता है। इस पुस्तक में अभ्यास दिये तो गये हैं, लेकिन अध्यापकों को उन्हीं पर सन्तोष न कर लेना चाहिये। हिन्दी रीडरों या अन्य पुस्तकों से भी सहायता लेकर रचना सम्बन्धी नियमों का अभ्यास कराना ठीक रहेगा।

मुझे पूर्ण आशा है कि इस पुस्तक से अध्यापकों और विद्यार्थियों की कठिनता बहुत हद तक दूर हो जावेगी और वे हिन्दी रचना के नियमों को समझा और समझ सकेंगे।

अन्त में अध्यापकों से भी एक प्रार्थना है कि इस पुस्तक के अध्यापन के सिलसिले में यदि वे पुस्तक में कोई त्रुटि देखें, तो मुझे सूचित करने की कृपा करें, ताकि आगामी संस्करण में उन पर विचार कर सकूं।

—लेखक

विषय-सूची

निबन्ध रचना

पत्र लेखन

परिशिष्ट

सरल रचनाविधि

(द्वितीय भाग)

वाक्यरचना

उद्देश्य और विधेय

जब हम एक दूसरे से बात करते हैं या कुछ लिखते हैं, तो एक या अनेक वाक्यों का प्रयोग करते हैं। वाक्य ऐसे शब्दसमूह को कहते हैं, जिसका एक अर्थ हो। घड़ा, रोटी, कुत्ता, पहाड़, गाड़ी ये सब शब्द भी सार्थक हैं, किन्तु इस समूह का कोई एक अर्थ नहीं है। अतः इसे वाक्य नहीं कह सकते।

रामचन्द्र खाता है।

मज़दूर बहुत मेहनती है।

लड़का किताब शनैः शनैः पढ़ता है।

ये सब वाक्य हैं। प्रत्येक वाक्य में क्रिया आवश्यक है। इसके विना वाक्य का कोई अर्थ नहीं रहता। रामचन्द्र + मज़दूर बहुत

मेहनती। लड़का किताब शनैः शनैः। ये सब शब्द क्रिया के बिना पूरी बात नहीं बताते। क्रिया क्योंकि किसी कार्य का किया जाना या किसी पदार्थ का होना बताती है, इसलिए वाक्य में कोई करने या होने वाला भी जरूरी है।

ऊपर लिखे वाक्यों में यदि करने या होने वाला निकाल दिया जाय, तो वाक्य किसी अर्थ को प्रकट नहीं करेगा। खाता है। है। पढ़ता है, ये सब शब्द किसी एक पूर्ण भाव को प्रकट नहीं करते। इसलिए किसी भी वाक्य में दोनों भागों का होना आवश्यक है।

प्रत्येक उस वाक्यांश को जिसके बारे में हम कुछ कहते या लिखते हैं 'उद्देश्य' कहते हैं। कर्त्ता के बारे में हम जो कुछ कहते हैं या लिखते हैं वह वाक्य का दूसरा भाग है। उसे 'विधेय' के नाम से पुकारा जाता है।

ऊपर दिये गए वाक्यों को निम्नलिखित विधि से दो भागों में बांटा जा सकता है।

उद्देश्य	विधेय
रामचन्द्र	खाता है।
मजदूर	बहुत मेहनती है।
लड़का	किताब बहुत शनैः २ पढ़ता है।

अभ्यास (१)

निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य और विधेय कौन कौन से हैं, यह बताओ—

१ तुम लिखो
२ लड़के खेलते हैं।
३ कुत्ता चोर के पीछे दौड़ा।
४ मक्खी काटती है।
५ सूर्य चमकता है।
६ लड़के प्रातःकाल फुट-बाल खेलते हैं।
७ मैं रातभर गहरी नींद सोया
८ दौड़ो
९ आदमी है।
१० बीमार कभी नहीं मरेगा
११ मैं आगे २ चलता हूँ
१२ सबने बहरे कानों सुना

अभ्यास (२)

नीचे लिखे उद्देश्यों के साथ विधेय लिखो—

१ दर्जी ......
२ बच्चा ......
३ इंजिन ......
४ मुर्गा ......
५ कई ......
६ कमला ......

अभ्यास (३)

निम्नलिखित विधेयों के साथ उद्देश्य लिखोः—

१ ...... दौड़ेगा
२ ...... खाऊँगी
३ ...... धोता है
४ ...... एकदम उड़ी
५ ...... मित्र भाव से खेलेगा
६ ...... खेलते थे

ऊपर हम देख चुके हैं कि विधेय में केवल क्रियामात्र ही नहीं होती, प्रत्युत उसमें कर्म, पूरक तथा क्रिया-विशेषण इत्यादि भी सम्मिलित हो जाया करते हैं। यथा:—

१—राम दूध पीता है। (कर्म)

२—मालवीयजी बहुत अच्छे वक्ता हैं। (क्रिया विशेषण)

३—रेलगाड़ी बहुत तेज़ चलती है। (पूरक)

इन वाक्यों में राम, मालवीयजी और गाड़ी उद्देश्य हैं।

इन तीनों के सम्बन्ध में हमने जो कहा है या लिखा है, वह विधेय है। उपर्युक्त वाक्यों में निम्नलिखित विधेय हैं:-

दूध पीता है। बहुत अच्छे वक्ता हैं। बहुत तेज़ चली।

अभ्यास (४)

नीचे लिखे वाक्यों में विधेय बताओ:—

१—मैंने रुपये जमा कराये।

२—मिस्त्री ने बहुत सुन्दर मकान बनाया।

३—राजा की सेना दुश्मन से ख़ूब लड़ी।

४—दिल्ली भारत की राजधानी है।

५—गेहूँ, चना, और जौ सरदी में पकते हैं।

६—रामचन्द्र दशरथ के पुत्र थे।

७—रेलगाड़ी की यात्रा बहुत आनन्ददायक होती है।

८—शहद खांसी को नष्ट करता है।

९—तोता प्रायः प्रत्येक देश में मिलता है।

१०—उद्यानगोष्ठी बहुत सुहावना प्रतीत होता है।

अभ्यास (५)

नीचे लिखे वाक्यों के विधेय में कर्म की पूर्ति करो:—

१. सभी ······ चाहते हैं। २. क्या तुमने ······ देखा था ? ३. रामने ······ खरीदा। ४. मैं ··· पसन्द करता हूं। ५. लेखक ······ लिखता है। ६. घोड़ा ······ खाता है। ७. बढ़ई ······ बनाता है। ८. नानी ······ सुनाती है। ६. सिपाही ······ पकड़ता है। १०. वह ······ कमाता है।

विशेषण

बहादुर सिपाही युद्ध करता है।

सफेद घोड़ा सुन्दर लगता है।

विद्वान उपदेशक व्याख्यान देता है।

प्यारी माता दूध पिलाती है।

भारत की राजधानी दिल्ली बहुत सुन्दर शहर है।

इन वाक्यों में उद्देश्य सिर्फ एक शब्द का नहीं है। सिपाही, घोड़ा, उपदेशक, माता और दिल्ली के साथ एक एक और शब्द भी है, जो उनकी कोई एक विशेषता, कोई एक गुण प्रकट करता है। कमजोर सिपाही नहीं, बहादुर सिपाही लड़ते हैं। काला नहीं, सफेद घोड़ा सुन्दर लगता है। इसी तरह मूर्ख उपदेशक नहीं, विद्वान् उपदेशक व्याख्यान देता है, दिल्ली की विशेषता भारत

की राजधानी है। विशेषता या गुण बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

यह कोई आवश्यक नहीं कि विशेषण उद्देश्य में ही कर्ता के साथ लगे। यह विधेय में कर्म के साथ भी लगता है। जैसे–पिता अपने पुत्र को प्यार करता है। सेनापति मरहठी सेना को कूच की आज्ञा देता है। वह महँगा कपड़ा लाया।

विशेषण लगाते समय एक नियम का अवश्य ध्यान रखना चाहिये। विशेष्य (जिस पदार्थ का गुण बताता हो, उसे विशेष्य कहते हैं) का जो लिंग और वचन हो, वही विशेषण का भी लिंग और वचन होना चाहिए। काला घोड़ा। हरे तोते। फटी हुई दरी। बड़ी इमारत। पीले आम। इन सब में विशेष्य और विशेषण का लिंग और वचन एक है, काली भैंस ठीक है, लेकिन काली हाथी अशुद्ध है, काला हाथी होना चाहिये।

अभ्यास (६)

नीचे लिखे वाक्यों में विशेषण लगाकर वाक्यकी पूर्ति करो:–

१. ··· कागज़ है। २. ··· तस्वीर है। ३. ··· आदमी सबकी सहायता करते हैं। ४. ··· आदमी दया का पात्र है। ५. ··· आदमी मर गया। ६. ··· किताब गुम हो गई। ७. ··· हवा चल रही है। ८. ··· रुस्तम बड़ा पहलवान है। ९. ··· यात्री खूब सोया। १०. ··· बाढ़ से गांव बह गये।

अभ्यास (७)

नीचे लिखे वाक्यों में विधेय के कर्म का विशेषण दो—

१. अध्यापक ··· विद्यार्थी को प्रेम से पढ़ाता है। २. आज मैंने ··· कपड़ा पहना। ३. कमला ··· बहिन को पढ़ाती है। ४. तुमने ··· खिड़की क्यों तोड़ी ? ५. अध्यापक ने ··· प्रश्न लिखवाये। ६. इंजिनीयर ने चनाब पर ··· पुल बनाया। ७. तुमने ··· ··· शिशु को उठा लिया*। ८. सबने ··· भाषण को बहुत पसन्द किया। ९. स्त्री ने ··· ··· गरम पानी पर ··· ··· फेंका। १०. अशोक ने ··· ··· ··· और ··· ··· ··· भिखारी को देखा।

अभ्यास (८)

नीचे लिखे वाक्यों में जो विशेषण अशुद्ध हैं, उन्हें ठीक करो—

१. नयी जहाज कहां है ? २. मैंने अपने मित्र का बड़ी मोटर कार लेली। ३. मैंने गोस्वामी तुलसीदास का रामायण पढ़ी। ४, छोटे छोटे लहरों से उलटा हुआ जहाज टूट गया। ५, आकाश में उड़ती हुई हवाई जहाज पर गोली चलाओ। ६, लाल गेंद की तरह चमकते हुए सूर्य सब को सुहावना लगता है। ७, सब रुपये कोई चुरा ले गया। ८. इतनी भी काम मैं नहीं कर सकती हूँ। ९. अशोक नामक राजा तीन हुए। १०. भौंकता हुआ कुत्ते कहां जा रहे हैं ? ११. अपना दोनों हाथ उठाओ।

---

* तुमने मिट्टी में सने शिशु को उठा लिया।

क्रियाविशेषण

वह तेजीसे भागा। मैं आहिस्ता आहिस्ता पढ़ता हूँ। बालक अपने घर गया। तुम सवेरे उठा करो। सुभाष अवश्य जायगा। प्रकाशवती रांची में आनन्दपूर्वक रहती है।

इन वाक्यों में उद्देश्य (वह, मैं, बालक, तुम. सुभाष और प्रकाशवती) और क्रियाओं (भागा, पढ़ता हूं, गया, जायगा और रहती है) के अतिरिक्त भी कुछ शब्द हैं—तेज़ी से, आहिस्ता आहिस्ता, अपने घर, सवेरे, अवश्य, रांची में, आनन्दपूर्वक। ये सब शब्द क्रिया की विशेषता या गुण—कैसे, कब, कहां, या क्यों क्रिया हुई—बताते हैं।

'वह भागा' इतना कहने से यह ज्ञान नहीं होता कि वह तेज़ भागा या शनैः? लेकिन 'तेज़ी से भागा' कहकर मैंने भागने की विशेषता बतादी।

बालक कहां गया? अपने घर गया। कब उठा करो? सवेरे। प्रकाशवती कहां और कैसे रहती है? रांची में और आनन्दपूर्वक।

क्रिया की विशेषता या गुण बताने वाले शब्दों को क्रिया-विशेषण कहते हैं। कर्ता और कर्म की भांति क्रियाविशेषण भी अनेक शब्दों का हो सकता है।

अभ्यास (९)

क्रियाविशेषण लगाते हुए नीचे लिखे वाक्यों की पूर्ति करोः—

१. कुत्ता ··· झपटा । २. आओ ··· ··· ··· चलें* । ३. सूर्य ··· निकलता है । ४ सतलुज नदी ··· निकलती है । ५. अकबर ने ··· ··· ··· राज किया । ६. घोड़े ने सवार को ··· गिरा दिया । ७. वह कागज पर ··· लिखता है । ८ ··· सच बोला करो । ९. रेलगाड़ी ··· ठहरती है । १०. वह ··· ··· ··· आराम करता है । † ११. उसने ··· ··· मुंह करके संध्या की । १२. नौकर ··· लौटेगा । १३. रोगी ··· सुधर रहा है । १४. सरस्वती ··· प्रकाशित होती है । १५. मैं परीक्षा ··· ··· जाऊँगा । १६. वह पागल ··· ··· और ··· ··· फिरता रहा । १७. कमलाने ··· ··· ··· छाता तान लिया । १८. मैं ··· ··· ··· सोगया । १९, झूठ कभी ··· बोलो । २०. इन लड़कों में सब फल ··· ··· दो ।

पूरक

वह आम खट्टा है ।

वह लड़की साफ सुथरी दीखती थी ।

धर्मदेव का घर बहुत छोटा है ।

उसका नाम राजकुमारी रक्खा गया ।

वह सम्मेलन का सभापति चुना जायगा ।

इन वाक्यों में भी प्रत्येक वाक्य की भांति उद्देश्य और विधेय हैं । ये आम, वह लड़की, धर्मदेव का घर, उसका नाम और वह

---

*आओ बाग़ में टहलने चलें ।

†वह रोटी खाने के बाद आराम करता है ।

उद्देश्य हैं, क्योंकि उनके बारे में कुछ कहा गया है। शेष वाक्यांश विधेय हैं। इन विधेयों में भी क्रियाओं के अतिरिक्त खट्टा, साफ सुथरा, बहुत छोटा, राजकुमारी, और सभाका सभापति—न तो कर्म हैं और न यहां किसी क्रियाके विशेषणके रूपमें आये हैं। लेकिन इन शब्दोंके विना वाक्य का कोई पूर्ण अर्थ नहीं निकलता। मेरा आम है, धर्मदेव का घर है, वह चुना गया आदि वाक्यों में कुछ जानने को बाकी रह जाता है। मेरा आम कैसा है, धर्मदेव का घर कैसा है, उसका नाम क्या रखा गया, वह क्या चुना गया, आदि प्रश्नों का उत्तर इन वाक्यों से तब तक नहीं मिलता, जबतक खट्टा, साफ सुथरा, बहुत छोटा है, राजकुमारी और सभापति शब्द न लिखे जावें। ये शब्द क्रिया को पूर्ण कर देते हैं। ऐसे शब्दों को पूरक कहते हैं।

अभ्यास (१०)

निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया के पूरक चुनोः—

१. मेरी छोटी बहिन बरसात में प्रायः बीमार पड़ जाती है।

२. अकबर का पुत्र जहांगीर शराबी था।

३. मेरे कुत्ते का नाम लालू है।

४. घर और गली में थूकना बहुत बुरा है।

५. ये तीन किताबें उसकी हैं।

६ छोटा ·की ने अपनी धोती पीली करली।

७. लखनऊ की पिछली प्रदर्शिनी बहुत सफल हुई।

८. मुझे वह बहुत ईमानदार लगता है।

अभ्यास (११)

नीचे लिखे अपूर्ण वाक्यों को पूरक लगाकर पूर्ण करो:—

१. उसका नाम ··· है।

२. गर्मियों में दिन ··· हो जाते हैं ।

३. प्रत्येक माता को अपना बालक ··· लगता है ।

४. दिल्ली ··· ··· ··· है ।

५. महाराणा प्रताप ··· ··· था ।

६. कमला के दुर्व्यवहार से अध्यापिका ··· हो गई ।

७. लोगों ने उसे ··· चुना ।

८. वह दुकानदार ··· दीखता है ।

९. गामा ··· ··· ··· है ।

१०. लार्ड लिनलिथगो भारत ··· ··· है ।

११. इस दूध का स्वाद तो ··· है ।

१२. रामचन्द्र और लक्ष्मण परस्पर ··· थे ।

वाक्यों की पूर्ति

अभ्यास (१२)

नीचे लिखे अपूर्ण वाक्यों की पूर्ति करो:—

१. मेरी मां भोजन ··· ··· ।

२. आओ पहाड़ी पर घूमने को ··· ।

३. डाक्टर बनर्जी ने अशोक का ··· ···

४. ··· का दूध ··· जल्दी ··· जाता है ।

५. काग़ज़ पर ··· फैल गई ।

६. कौआ ··· ··· करता है ।

७. ··· और ··· विद्यार्थी कभी मार नहीं ··· ।

८. प्रातःकाल ··· निकलता है और ··· दूर ··· जाता है ।

९. ··· लड़कियां ··· ··· पहन कर ··· ··· मेलेमें ··· जावेंगी ।

१०. पानी ··· बरसने से ··· सड़क ··· ··· हो गई थी, ··· मैं ··· समय पर ··· नहीं पहुँच सका ।

११. ऋषि दयानन्द पूर्ण ··· थे ।

१२. भारत ··· ··· है और इसलिए ··· प्यारा ··· ··· ।

१३. एक साल में छः ··· और ··· महीने होते हैं ।

अभ्यास (१३)

नीचे लिखी अपूर्ण वाक्यों वाली कहानियों को पूर्ण करो:—

एक बालक हलवाई की ··· पर ··· लेने ··· । हलवाई ··· था ··· मिठाई कम ··· । बालक ने ··· मिठाई ··· क्यों तोलते ··· ? हलवाई ने ··· दिया अच्छा तो है,··· थोड़ा भार लेजाना ··· । बालक ··· हो गया । पैसे ··· समय ··· ने चार ··· कम दिये । हलवाई ने कहा, यह तो चार ··· कम हैं । ··· बोला, ··· ··· ··· तुम्हें पैसे ··· गिनने पड़ेंगे ।

(२)

एक व्यापारी ··· गधे ··· एक घोड़े पर माल लेकर दूसरे गांव

··· रहा था। गधे पर दो मन नमक ··· और ··· पर एक मन कपास। ··· दो मन भार ··· चकनाचूर ··· ···। ·· घोड़ेसे ··· कि भाई, थोड़ा सा ··· भार ··· लेलो, मैं ··· गया हूँ। ···घोड़ा स्वार्थी था। ··· गधे की बात नहीं ···। थोड़ी दूर चलते ··· रास्ते ··· बहुत पानी ···। दोनों पानी में ··· गुज़रने ···। ··· ··· नमक तो पानी में घुलते घुलते ··· ··· गया। ··· घोड़े की ··· भीग जाने के ··· बहुत हो गई। अब ··· भी हांफने लगा और गधे से ··· ··· कि मेरा भार हलका कर। ··· ··· जवाब दिया कि पहले ·· प्रार्थना स्वीकार ··· ··· ? इसी कहते ··· जसे को तैसा।

निषेधवाचक

में जाता हूँ	मैं नहीं जाता हूं
इसे सब पढ़ सकते हैं	इसे सब नहीं पढ़ सकते
उसके तीन भाई हैं	उसके तीन भाई नहीं हैं
सुभद्रा ने पाठ याद किया	सुभद्रा ने पाठ याद नहीं किया

किसी वाक्य को निषेधात्मक बनाने के लिये उपरिलिखित वाक्यों की तरह उसमें 'नहीं' जोड़ देना चाहिये।

लेकिन बहुत से शब्द ऐसे भी हैं, जिन में निर, अ, अन, ग़ैर, ना, आदि उपसर्ग जोड़ने से निषेधात्मक वाक्य बनाये जाते हैं।

यह धर्म है	यह अधर्म है
हरि योग्य है	हरि अयोग्य है
शिवकुमार इस घटना को जानता है	शिवकुमार इस घटना से अनजान है
वीरेन्द्र अभिमानी है	वीरेन्द्र निरभिमानी है
भीम डरपोक है	भीम निडर है
ऐसा होना मुमकिन है	ऐसा होना ग़ैरमुमकिन (या नामुमकिन) है
मैं आम पसन्द करता हूँ	मैं आम नापसन्द करता हूँ

परस्परविरोधी शब्दों का प्रयोग करने से भी निषेधात्मक बनाये जाते हैं।

वह धर्मात्मा है	वह पापी है।
यह बुरा है	यह अच्छा है
फूलचन्द बदनाम हो गया	फूलचन्द प्रसिद्ध हो गया
मेरे कपड़े साफ हैं	मेरे कपड़े मैले हैं
आम मुझे अनुकूल पड़ते हैं	आम मुझे प्रतिकूल पड़ते हैं
सुशीला अभी कुमारी है	सुशीला अब विवाहित है
हरि का ट्रङ्क मज़बूत है	हरि का ट्रङ्क कमज़ोर है

अभ्यास (१४)

नीचे लिखे वाक्यों के निषेधात्मक वाक्य बनाओ। यदि दो रूप बन सकते हों, तो दो रूप भी बनाओ:—

१. मैं शीतल जल से स्नान करूंगा।

क—मैं शीतल जल से स्नान नहीं करूंगा।

ख—मैं गरम जल से स्नान करूंगा।

२. मैं इन गरमियों में काश्मीर जाऊंगा।

३. सब कन्यायें पाठशाला में उपस्थित थीं।

४. इसे तो कोई भी कर सकता है।

५. विमला बहुत चतुर बालिका है।

६. संध्या रोज़ किया करो।

७. उसकी जायदाद कलकत्ता और बम्बई में है।

८. वह राजा अत्याचारी है।

१०. राम कृष्ण से छोटा है।

११. तुमने ठीक लिखा है।

१२. मेरा दरवाजा खुला हुआ है।

१३. प्रकाश होगया।

१४. वह अपनी श्रेणी में पहली लड़की है।

१५. मेरा बटुआ खाली है।

१६. भीमसेन बहुत सुस्त है।

१७. बीमार सचेत था।

१८. मेरे कमरे में धूप आ गई।

प्रश्नवाचक

यह घड़ी तुम्हारी है।	क्या यह घड़ी तुम्हारी है ?
तुम कल गये थे।	तुम कल कहां गये थे ?
अदालत ने चोर को सज़ा दी	अदालतने चोरको क्या सज़ादी ?
यह स्लेट विद्यार्थी की है।	यह स्लेट किस विद्यार्थी की है ?
तुम्हारी कक्षा में लड़कियां हैं।	तुम्हारी कक्षामें कितनी लड़कियां हैं ?

ऊपर कुछ वाक्यों से प्रश्नात्मक वाक्य बनाये गये हैं।

प्रश्नात्मक वाक्य बनाने के लिए क्या, कहां, किस, कितनी, कौन आदि शब्द लगाये जाते हैं।

अभ्यास (१६)

निम्नलिखित वाक्यों के प्रश्नात्मक वाक्य बनाओः—

(१) वह दौड़ेगा। (२) मां रोटी पकायेगी। (३) सरस्वती सूपा में रहती है। (४) गार्ड ने सीटी बजाई। (५) मैंने टैलिफ़ोन किया। (६) उसने पुलिसथाने में रिपोर्ट की।

अभ्यास (१७)

नीचे कुछ प्रश्नवाचक वाक्य दिये गये हैं। इन का पूरे वाक्य में उत्तर दोः—

१. कमला और विद्या में कौन बड़ी है ?

२. तुम्हें गणित में अधिक रुचि है या विज्ञान में ?

३. तुम्हारी कक्षा में कितने विद्यार्थी हैं ?

४. तुम किससे मिलने दिल्ली गये थे ?

५. वह कैसे मर गया ?

६. कितने समय में ये सवाल निकाल लोगे ?

७. पिताजी तुम्हारे लिए क्या लाये थे ?

८. तुमने घर पर काम क्यों नहीं किया ?

९. यह मेज़ किसने बनाई ?

१०. तुम कब चले गये ?

प्रत्येक प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में ? चिन्ह लगाया जाता है।

अभ्यास (१८)

नीचे कुछ वाक्य लिखे हुए हैं। वे किन्हीं खास प्रश्नों के उत्तर हैं। तुम वे प्रश्न बताओ:—

१. हां, बेटा तुम मेले में जा सकते हो (पिताजी, क्या मैं मेले में जाऊं ?)

२. मैंने तो पांच रोटियां खाई हैं।

३. मैं एक घण्टे में २० पृष्ठ पढ़ सकता हूँ।

४. वायु और प्रकाश जीवन के लिए आवश्यक है।

५. मैंने शेर कभी नहीं देखा।

६. वह मेरा घनिष्ठ मित्र है।

७. कलकत्ता दिल्ली से ८०० मील है।

८. सतलुज नदी मानसरोवर से निकलती है।

९. अशोक या सुभाष कोई आया होगा।

१०. हां, आज हमारी परीक्षा हुई।

११. मैंने १९३४ में पढ़ना शुरू किया था।

१२. मैंने शुतुरमुर्ग़ देखा था।

१३. मेरा नाम धर्मवीर है।

४१. मैं यह पुस्तक शारदामन्दिर से लाया हूँ।

१५. मैं डो. ए. वी. स्कूल नई दिल्ली में पढ़ता हूँ।

१६. यह किताब मेरी है।

१७. शान्ति और सावित्री मेरी बहनें हैं।

१८. प्रकाशवती मेरी पुत्री है।

कभी कभी प्रश्न निषेधात्मक वाक्यों में भी पूछे जाते हैं। देखिये:—

क्या तुम वहां गये थे ?

हां, मैं वहां गया था।

नहीं, मैं वहां नहीं गया था।

क्या तुम वहां नहीं गये थे ?

हां, मैं वहां गया था।

नहीं, मैं वहां नहीं गया।

प्रश्न चाहे साधारण विध्यात्मकरूप में पूछा जाय, चाहे निषेधात्मक रूप में, उत्तर यदि निषेध में देना हो तो 'नहीं' और यदि स्वीकृति में देना हो तो 'हां' कहना चाहिये।

अभ्यास (१६)

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्यों में दो:—

१. क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है ?

२. क्या यह काम तुम्हें नहीं दिया गया था ?

३. क्या तुमने कर्ज़ नहीं मांगा था ?

४. क्या रेलगाड़ी एक घण्टे में ४० मील नहीं चलती ?

५. क्या भिखारी ने भीख नहीं मांगी ?

६. क्या महाराणा प्रताप अकबर से हार नहीं गया था ?

७. क्या रामचन्द्र जी ने रावण को नहीं मारा था ?

८. क्या ममुष्य कभी नहीं मरेगा ?

६. क्या यह कुली दो मन भार नहीं ले जा सकता ?

१०. क्या तुम पूरियां बेलना नहीं जानतीं ?

११. क्या यह मेरी साड़ी नहीं है ?

१२. आप में से क्या कोई भी मेरे साथ नहीं चलेगा ?

१३. वह कन्या क्या ठीक तरह से नहीं रहती ?

१४. क्या मकड़ी जाला बुनने में कमाल नहीं दिखाती ?

१५. क्या सिपाही ने भागने वाले को नहीं पकड़ा ?

वाक्य में शब्दों का क्रम

इन पिछले पृष्ठों में तुम जो जो नियम पढ़ आये हो, उन्हें ध्यान में रखने से तुम वाक्य में शब्दों के क्रम को अवश्य समझ गये होगे।

प्रत्येक वाक्य में उद्देश्य और विधेय दो भाग होते हैं और उद्देश्य पहले प्रयुक्त होता है, विधेय पीछे।

उद्देश्य में यदि संज्ञा या कर्त्ता से अधिक शब्द हों, जिन्हें हम विशेषण नाम से कह सकते हैं, तो वे कर्ता से पूर्व आयेंगे।

महावीर भीम ने दुर्योधन को हरा दिया न कि भीम महावीर ने दुर्योधन को हरा दिया।

भारत की राजधनी दिल्ली बड़ा शहर है न कि दिल्ली भारत की राजधानी बड़ा शहर है।

परन्तु कहीं कहीं जब विशेषण संज्ञा की व्याख्या के रूप में प्रयुक्त हुआ हो, तब विशेषण पीछे भी प्रयुक्त होता है। लार्ड लिनलिथगो—भारत के वायसराय—ने पिंजरापोल का निरीक्षण किया। यज्ञोपवीत संस्कार, जो आठवें वर्ष होता है, १६३७ के प्रारम्भ में होगा। पं० मदनमोहन मालवीय, जो हिन्दूविश्वविद्यालय के संस्थापक हैं, कल दिल्ली आयेंगे।

प्राय: सब विशेषण इस तरह उपवाक्य के रूप में पीछे भी लगाये जा सकते है। 'काला घोड़ा' न कह कर 'घोड़ा, जिस का रंग काला है' कहा जा सकता है, लेकिन बहुत छोटे छोटे विशेषण प्राय: पहिले ही लगाये जाते हैं। जब किसी गुण पर विशेष ज़ोर

देना हो, तभी वह उपवाक्य के रूप में पीछे लगाया जाता है।

विधेय के पदों का क्रम कर्म और क्रिया है। कर्म के विशेषण कर्म से पूर्व लगते हैं और क्रिया के विशेषण क्रिया से पूर्व। कर्म के विशेषण भी यदि व्याख्यारूप में प्रयुक्त हों, तो वे कर्म के पीछे लगाये जाते हैं।

भिखारी ने रोटी खाई। भिखारी ने कई दिन की बासी रोटी खाई। भिखारी ने रोटी, जो कई दिनों की बासी है, खाई। मैंने भागते हुए राम को देखा। मैंने राम को, जो भाग रहा था, देखा।

क्रियाविशेषण साधारणतया क्रिया के पहले लगते हैं, लेकिन कभी कभी कर्म के पूर्व भी लगते हैं।

उसने रोटी जल्दी जल्दी खाई। उसने जल्दी जल्दी रोटी खाई।

कभी २ क्रियाविशेषण उद्देश्य से भी पहले प्रयुक्त किया जाता है।

वहां मैंने फौज को परेड करते देखा। धर्म के लिए ही मैं बलि हो जाऊंगा।

पूरक प्रायः क्रिया से पहले और विशेष्य के बाद प्रयुक्त होता है। **यह कम्बल बहुत गरम है।**

वाक्य में किसी २ शब्द पर जोर देने के लिए भी, ही, तो, भर इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ये शब्द उसी शब्द के बाद आते हैं, जिन पर वक्ता जोर देना चाहता है। **रात ही को, (दिन को नहीं) प्रकाशवती दिल्ली पहुंची। रात को प्रकाशवती ही (और कोई नहीं) दिल्ली पहुंची। रात को प्रकाशवती दिल्ली**

ही (और कहीं नहीं) पहुंची। अशोक भी (दूसरे भी थे, और अशोक भी) वहां था। अशोक वहां भी (अन्य स्थानों में भी) था।

जिसके विषय में मुख्य प्रश्न किया जाय, उसके साथ प्रश्नवाचक पद 'क्या' रखा जाता है। इस का पदक्रम बदलने से वाक्य का अर्थ ही बदल जाता है। सुभाषिणी क्या खा रही है ? अर्थात कौन सी चीज़ खा रही है और क्या सुभाषिणी खा रही है ? अर्थात् क्या सुभाषिणी खा रही है या नहीं ? इन दोनों में कितना अन्तर है।

अभ्यास (२०)

निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों को ठीक क्रम से रखो:—

१. तीर से राम धनुर्धारी ने रावण को मारा।

२. मैंने पत्र मुलतान से लिखा।

३. कराची मेल से वह रवाना होगी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को।

४. बहिनें चार खेलती हैं।

५. मैं आज चांदनी चौक, दिल्ली के प्रसिद्ध बाजार में गई थी।

कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य

जिन वाक्यों में कर्म भी होता है, वे वाक्य दो प्रकार से लिखे या बोले जाते हैं। (पिता पुत्र को पढ़ाता है। पुत्र पिता द्वारा पढ़ाया जाता है।)

पहले वाक्य को कर्तृवाच्य और दूसरे को कर्मवाच्य कहते हैं। कर्तृवाच्य में कर्त्ता पहले और कर्मवाच्य में कर्म पहले आता है। वाक्य की क्रिया भी कर्तृवाच्य में कर्त्ता के अनुसार और कर्मवाच्य में क्रिया के अनुसार लगती है। आम खाया जाता है। रोटियां खाई जाती हैं।

अभ्यास (२१)

निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य बदलो:—

(१) मैं भोजन करता हूँ।

(२) सुभाष किताब पढ़ता है।

(३) धोबी कपड़े धोता है।

(४) मिस्त्री मकान बनाता है।

(५) भिखारी को अन्न दिया।

(६) मैंने चिट्ठी नहीं डाली।

(७) निकर नहीं सी गई।

(८) ड्राइवर रेलगाड़ी चलाता है।

सर्वनाम

प्रिय बालको, कुछ लोगों की भाषा पढ़ते समय बहुत अच्छी मालूम होती है और कुछ लोगों की भाषा पसन्द नहीं आती। भाषाको सुन्दर बनाने के कई नियम है। एक नियम है सर्वनामों का उपयोग। देखिये:—

राम घर गया। राम ने खाना खाया। तब राम आराम करने के लिए राम की चारपाई पर लेट गया। जब राम सो उठा तो राम ने हाथ मुँह धोया। तत्पश्चात् राम पढ़नेके लिये बैठ गया।

यह भाषा तुम्हें निहायत भद्दी मालूम होगी। यदि इसे निम्न-लिखित रूप में बदल दिया जाय, तो उसमें भद्दापन निकल जाता है। अब पढ़ो:—

राम घर गया। उसने खाना खाया। तब वह आराम करने के लिए अपनी चारपाई पर लेट गया। जब वह सो उठा, तो उसने मुंह हाथ धोया। तत्पश्चात वह पढ़ने के लिए बैठ गया।

राम शब्द के बार बार आने से जो अरोचकता आ गई थी, वह उसके स्थान पर कई अन्य शब्द (वह, उसने, अपनी इत्यादि) लगाने से दूर कर दी गई है। ऐसे शब्दों को **सर्वनाम** कहते हैं। सर्वनाम कुल ११ होते है—मैं, तू, वह, यह, आप, सो, जो, कोई, कुछ, कौन और क्या। ये और इनके रूपान्तर ही सम्पूर्ण भाषा में सर्वनाम का कार्य करते हैं। थोड़े से शब्द होते हुए भी इनका भाषा में एक महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा को सुन्दर और ललित बनाने में ये विशेष सहायता देते हैं।

अभ्यास (२२)

निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति करो और जिन वाक्यों में जहां आवश्यकता हो, सर्वनामों का प्रयोग करो।—

१. पुत्र के बीमार पड़ने ही ··· माता सुधबुध खो बैठी।

२. ··· मुझ ··· के सामने कहा था, ··· करेगा ··· भरेगा।

३. जो हमें मिलता है ··· आपकी प्रशंसा करता है।

४. आम, सेब, अंगूर सभी फल हैं। आप ··· खाना चाहें खा सकते हैं।

५. अशोक अशोक के भाई, अशोक की बहन और अशोक की माता के साथ सर्कस देखने गया।

६. माता ने माता की लड़की को रोटी बनाना सिखाया।

संयुक्त और सम्मिश्रित वाक्य

वह आया। वह बैठा। वह चला गया।

वह आया, बैठा और चला गया।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में एक ही बात कही गई है, लेकिन दूसरा वाक्य पहले की अपेक्षा कहीं सुन्दर प्रतीत होता है। दूसरा वाक्य पहले की अपेक्षा संक्षिप्त भी है।

आम रसोईघर में पड़े हैं। सेब रसोईघर में पड़े हैं।

इन दो वाक्यों के बजाय यदि यह कहा जाय कि **आम और सेब रसोईघर में पड़े हैं**, तो अधिक सुन्दर प्रतीत होता है।

अपने विचार को संक्षिप्त और सुन्दर रूप में रखने के लिए हम समुच्चयबोधक शब्दों के प्रयोग द्वारा दो या अधिक वाक्यों को एक कर देते हैं। समुच्चयबोधक शब्द अनेक प्रकार के होते हैं।

१. **संयोजक**—जो दो वाक्यों को जोड़ते हैं। **और, तथा, तथैव, एवं** आदि।

पृथक्	संयुक्त
अशोक आया। सुभाष आया।	अशोक और सुभाष आये।
मैं हिन्दी लिख सकता हूं। मैं हिन्दी पढ़ सकता हूँ।	मैं हिन्दी लिख और पढ़ सकता हूं।

घोड़े के दो कान हैं। घोड़े के चार पैर हैं।	घोड़े के दो कान और चार पैर हैं।
हमें गौ से दूध मिलता है। हमें गौ से मक्खन मिलता है।	हमें गौ से दूध और मक्खन मिलता है।
वह स्वस्थ था। वह सुदृढ़ था।	वह स्वस्थ एवं सुदृढ़ था।

२. वियोजक—जो दो वाक्यों में से किसी एक का चुनाव बताते हैं। या, वा, अथवा, चाहे, न कि, नहीं तो ऐसे शब्द हैं।

पृथक्	संयुक्त
राम आवे। कृष्ण आवे। (इन दोनों में से एक आवे।)	राम या कृष्ण कोई एक आवे।
मालिक बनो, गुलाम मत बनो।	मालिक बनो न कि गुलाम।
क्या वह आदमी मोटा है ? क्या वह आदमी दुबला है ?	वह आदमी मोटा है कि दुबला।
जल्दी करो। तुम गाड़ी चूक जाओगे।	जल्दी करो नहीं तो गाड़ी चूक जाओगे।

३. विरोधसूचक—जो पिछले वाक्य से पहले वाक्यके अर्थों का निषेध करते हों। पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, अगर, वरन् ऐसे ही शब्द हैं।

पृथक्	संयुक्त.
अशोक आया, अशोक मेरी चीज नहीं लाया।	अशोक आया, लेकिन मेरी चीज़ नहीं लाया।

वह बुद्धिमान है, वह ईमानदार नहीं है।	वह बुद्धिमान तो है परन्तु ईमानदार नहीं।
वह स्कूल जाता है, वह पढ़ता कुछ नहीं।	वह स्कूल जाता है, लेकिन पढ़ता नहीं।
मेरी आज्ञा मानो, क्या मुझे खुश करना चाहते हो ?	यदि तुम मुझे खुश करना चाहते हो, तो मेरी आज्ञा मानो

४. परिणामदर्शक, जो किसी वाक्य का परिणाम बताये। इसलिये, सो, अतः, अतएव, क्योंकि ऐसे ही समुच्चयबोधक शब्द हैं।

पृथक्	संयुक्त
बहुत गर्मी है। आज वर्षा होगी।	बहुत गर्मी है, इसलिए आज वर्षा होगी।
वह पास होगया। उसने मेहनत की थी।	वह पास हो गया, क्योंकि उसने मेहनत की थी।
दुकानदारने बिल नहीं भेजा। मैंने उसे पैसे नहीं दिये।	दुकानदार ने बिल नहीं भेजा, सो मैंने उसे पैसे नहीं दिये।

अभ्यास [२३]

नीचे लिखे वाक्यों को संयुक्त करो:—

संयोजक अव्ययों के द्वारा

१. प्राणी को हवा चाहिये। प्राणी को रोशनी चाहिये। प्राणी को पानी चाहिये।

२. बगीचे में पौधे होते हैं। बगीचे में फूल होते हैं। बगीचे में फल होते हैं।

३. हमें अपने मातापिता की आज्ञा माननी चाहिये। हमें अपने माता पिता का आदर करना चाहिये।

४. उसका सवाल ग़लत है। तुम्हारा सवाल ग़लत है।

५. माता दयालु होती है। माता सहृदय होती है।

वियोजक समुच्चयबोधक शब्दों के प्रयोग द्वारा

१. मेरी पुस्तक चोरी गई है। मेरी पुस्तक गुम हो गई है।

२. वह जाता है। वह सोता है।

३. तुम चोर हो। तुम्हारा भाई चोर है।

४. उसे एक दम पानी दे दो। वह मर जायगी। (अन्यथा)

५. वह स्वयं नहीं देखता। वह दूसरों को नहीं देखने देता।

६. वह आदमी जापान का दीखता है। वह आदमी चीन का दीखता है। वह एक देश का है।

विरोधसूचक समुच्चयबोधक शब्दों द्वारा

१. कमला ने पढ़ लिया। पार्वतीदेवी ने नहीं पढ़ा।

२. मैं ने उसे बहुत कहा। उसका दिल नहीं हुआ।

३. पढ़ने में मेहनत खूब करो। अपना स्वास्थ्य खराब मत करो।

४. बुरी लड़की अपनी मातापिता की आज्ञा नहीं मानती। अच्छी लड़की माता की आज्ञा मानती है।

५. अहल्याबाई रानी थी। अहल्याबाई को अभिमान छू तक न गया था।

६ वह स्कूल रोज़ जाता है। वह लिखता पढ़ता कुछ नहीं।

परिणामसूचक समुच्चयबोधक शब्दों के प्रयोग द्वारा:—

१. मुझे पत्र न मिला था। मैं आप के घर न आ सका।

२. नैपोलियन का एक सेनापति युद्धक्षेत्र में देर से पहुँचा। नैपोलियन हार गया।

३ राम को एक दम बन में जाना पड़ा। कैकेयी ने दशरथ से दो वर मांगे।

४. अब अंधेरा हो गया है। हमें घर चलना चाहिये।

५. मेरा सामान चोरी गया था। मैंने सिपाही से सहायता मांगी। सिपाही नया था। वह मुझे सहायता नहीं कर सका।

संयुक्त वाक्य-२

कुछ उदाहरण (क)

दो वाक्यों को संयुक्त करने के कुछ और उदाहरण देखिये:—

वह थका हुआ था। वह भूखा था।	वह न केवल थका हुआ था, परन्तु भूखा भी था।
तुमने मेरी ५०) रु० की हानि की। मैं तुम्हें माफ करता हूँ।	यद्यपि तुमने मेरी ५०) रु० की हानि की, तथापि मैं, तुम्हें माफ करता हूं।
मैं तुम पर मुकदमा चलाऊंगा। तुम मेरा रुपया दे दो।	तुम मेरा रुपया दे दो, नहीं तो मैं तुम पर मुकदमा चलाऊंगा। या यदि तुम रुपया न दोगे, तो मैं तुमपर मुकदमा चलाऊंगा।

अभ्यास २४

निम्नलिखित वाक्यों को संयुक्त करो:—

१. मैं रेल गाड़ी से कल सबेरे पहुंच जाऊंगा। रेल गाड़ी की कोई दुर्घटना न हो जाय।

२. तुम्हें आलस छोड़ देना चाहिये। तुम अपने जीवन में सफल नहीं हो सकते।

३. स्वामी श्रद्धानन्द ७२ सालके थे। वे खूब मेहनत करते थे।

४. प्रेमदेवी बीमार है। वह पढ़ नहीं सकती। वह स्कूल प्रति दिन जाती है।

५. मजिस्ट्रेट सख्त है। मजिस्ट्रेट कठोर है। वह सहृदय है। वह दयालु है। सब आदमी उसे पसन्द करते हैं।

६. रामकिशन दिल का अच्छा है। वह बहुत शिक्षित नहीं है वह मेरी सहायता बहुत नहीं कर सकता।

७ अध्यापक को मधुरभाषण करना चाहिये। अध्यापक को मधुर व्यवहार करना चाहिये।

संयुक्त वाक्यों के कुछ और उदाहरण (ख)

पृथक् वाक्य	संयक्त वाक्य
१ लक्ष्मण वीर था। राम उससे भी वीर था।	राम लक्ष्मण से ज़्यादा वीर था।
२ लम्बे भ्रमण ने मुझे थका दिया। लम्बे भ्रमण ने मेरे भाई को बहुत थका दिया।	लम्बे भ्रमण ने मेरे भाई को मुझ से भी अधिक थका दिया।
३. मैं उस को अच्छी तरह जानता हूं। मैं तुम्हें अधिक अच्छी तरह जानता हूं।	मैं उससे भी अधिक अच्छी तरह तुम्हें जानता हूं।

अभ्यास (२५)

नीचे लिखे वाक्यों को संयुक्त करो:—

१. वह दौड़ता है। मैं उससे भी ज़्यादा दौड़ता हूँ।

२. जयपाल छोटा है। वेदप्रकाश और भी छोटा है।

३. तुम्हें नींद आ रही है। मुझे और भी नींद आरही है।

४. ग्रीस प्राचीन देश है। भारतवर्ष और भी प्राचीन देश है।

५. सेनापति बड़ा अफ़सर होता है। राजा और भी बड़ा अफ़सर होता है।

संयुक्त वाक्यों के कुछ और उदाहरण (ग)

१. मैं डाक्टर के पास गया। डाक्टर वहां न था।	जब मैं डाक्टर के पास गया, तब वह वहां न था।
२. सूर्य अस्त हो गया। मज़दूरों ने काम बन्द कर दिया।	सूर्य के अस्त होने पर मज़दूरों ने काम बन्द कर दिया।
३. ईश्वरदेवी दिल्ली से गुरमानी चली गई। उस दिन से वह स्वस्थ रहने लगी।	जिस दिन से ईश्वरदेवी दिल्ली से गुरमानी गई, वह स्वस्थ रहने लगी।
४. बीमार ने दवाई पी। वह एकदम होशमें आगया।	बीमार ने ज्योंही दवा पी, वह होश में आ गया।
५. सेना लड़ती रही। अन्त में एक भी सैनिक नहीं रहा।	जब तक एक भी सैनिक रहा, सेना लड़ती रही।

अभ्यास (२६)

नीचे लिखे वाक्यों को संयुक्त करो:—

१. वह पहाड़ पर रहता था। वह पहाड़ पर मर गया।

२ राम जङ्गल चले गये। एक दम दशरथ के प्राण निकल गये।

३. मैं बिस्तरे पर बैठता हूं। मुझे एक दम नींद आ जाती है।

४, खेल खतम हो गया। हम घर चले गये।

५. चोर ने मुझे देख लिया। वह एक दम भाग गया।

६. पहले तैयार हो जाओ। तब मुझे बुलाना।

७. उसकी मां मर गई है। अब उसकी खबर लेने वाला कोई नहीं है।

८. मैंने पत्र पढ़ा। पढ़ कर हक्काबक्का हो गया।

संयुक्त वाक्यों के कुछ और उदाहरण (घ)

पृथक्	संयुक्त
१. अशोक भारतवर्ष का का सम्राट् था। वह धर्म प्रचार के कारण अमर हो गया।	अशोक, जो भारत का सम्राट् था, धर्म प्रचार के कारण अमर हो गया। या भारतवर्ष का सम्राट् अशोक धर्म-प्रचार के हो गया।

२. अशोक एक पुस्तक चाहता है। उसमें बहुत सी तस्वीरें हों।	अशोक एक पुस्तक, जिसमें बहुत सी तस्वीरें हों, चाहता है। या अशोक बहुत सी तस्वीरों वाली एक पुस्तक चाहता है।
३. तुम ने मेरी किताबें कहीं रखदी हैं। वह जगह मुझे दिखलाओ।	मुझे वह जगह दिखाओ, जहां तुमने मेरी किताबें रखी हैं
४. यह गांव है। इसमें मेरा जन्म हुआ था।	यह वह गांव है, जिसमें मेरा जन्म हुआ था।
५. अभी तुमने एक कोट सिलाया था। वह कोट कहां है?	वह कोट कहां है, जो तुमने अभी सिलाया था।
६. गोबिन्द का घर ३ मील दूर है। वह इस रातमें कैसे जायगा?	गोबिन्द, जिसका घर ३ मील दूर है, इस रातमें कैसे जायगा?
७. मैं तुम्हें और कर्ज़ कैसे दे सकता हूं। तुमने मेरा पहला कर्ज़ ही नहीं चुकाया।	मैं तुम्हें, जिसने मेरा पहले का कर्ज़ नहीं चुकाया, और कर्ज़ कैसे दे सकता हूं?
८. गौतम बुद्ध वास्तव में महात्मा थे। उन्हें सारा संसार आदर की दृष्टि से देखता है।	गौतमबुद्ध, जिसे सारा संसार आदर की दृष्टि से देखता है, वास्तव में महात्मा थे।

अभ्यास (२७)

निम्नलिखित पृथक वाक्यों को जो, जिसने, जिसका, जहां आदि के प्रयोग द्वारा संयुक्त करोः—

१. जगन्नाथ ने ऋषि दयानन्द को विष दिया था। उसे भी ऋषि ने माफ़ कर दिया।

२. रामचन्द्र गद्दी पर बैठने वाले थे। वे जंगल चले गये।

३. चोर को पकड़ना है। एक सिपाही आवे। वह खूब तेज़ भाग सकता हो।

क— ... ...

ख—चोर को पकड़ने के लिए खूब तेज़ भाग सकने वाला सिपाही आवे।

४. मालवीय जी यहां आये हैं। वे एक प्रसिद्ध वक्ता हैं।

५. मुझे एक रुपया मिल गया है। मेरे भाई से यह गुम हो गया था।

६. यह घर मेरे दादा ने बनवाया था। इसमें मैं व मेरे सब भाई पैदा हुए थे।

७. केटा का भूकम्प १६३५ की सब से बड़ी दुर्घटना थी। उसमें हज़ारों आदमी दो चार मिनटों में मर गये।

८. पं० यज्ञदत्त के पास एक कैमरा है। उससे वह फ़ोटो खींचता है।

६. मैं अपने भाई को पत्र लिख रहा हूँ। उसकी अभी शादी हुई है।

१०. कौन विद्यार्थी परीक्षा में पहले आया है। उसका नाम बताओ ?

११. गौ हमें दूध देती है। वह हमारी माता के समान पूज्य है।

१२. यह किताब शारदामन्दिर में दे आओ। वहां से तुम किताब लाये थे।

अभ्यास (२८)

निम्नलिखित पृथक् पृथक् वाक्यों को संयुक्त करो। जितने नियम तुम पढ़ चुके हो, उन सब का ध्यान रखो।

१. मैं तुम्हारे मित्र हरिकृष्ण को जानता हूँ। मैं उन्हें पसन्द करता हूँ। वे हिन्दी के बहुत बड़े कवि हैं।

२. मोहनलाल मेरा घनिष्ठ मित्र है। वह आयेगा। मैं नहीं जानता। वह कब आयेगा।

३. सब यात्री गाड़ी में बैठ गये। उसके सब दरवाज़े बन्द कर दिये गये।

४. मेरे भाई को १५) रु० मासिक की छात्रवृत्ति मिल गई। वह परीक्षा में पहला आया था। तब वह कालिज में दाख़िल हो गया।

५. पण्डित गुरुदत्त जी बहुत सख़्त बीमार थे। डाक्टरों ने उन्हें मांस खाने की हिदायत दी। लेकिन उन्होंने न खाया। वे निरामिषभोजी थे।

६ उसने परीक्षा दे दी। उसने अपनी पुस्तकें बेच दीं। इन पुस्तकों को वह सालभर रोज़ पढ़ा करता था।

७ स्पेन के गृहयुद्ध में हजारों आदमी मारे गए। स्पेन के गृहयुद्ध में हज़ारों स्त्रियां मारी गईं। स्पेन के गृहयुद्ध में हज़ारों बच्चे मारे गये। (न केवल—लेकिन का प्रयोग करो)

८. मेरा मित्र पहुँच गया। हम घूमने चल पड़े। इस मित्र को मैंने बुलाया था। इस मित्र का नाम रामकिशोर है।

९. भरत ने अपने मित्र की प्रार्थना स्वीकार कर ली। इस मित्र ने एक बार उसके प्राण बचाये थे। भरत उसे असंतुष्ट नहीं करना चाहता था।

१०. भारतमाता के ३५ करोड़ पुत्र हैं। भारतमाता उनसे आशा करती है। प्रत्येक भारतीय उसके हित को सबसे ऊंचा समझेगा।

११ रामचन्द्र मेरा बड़ा भाई था। वह फीरोज़पुर में मरा। यहीं वह पैदा हुआ था।

१२ मैं स्कूल जा रहा था। रास्ते में एक भिखारी को दो पैसे दिये। वह भिखारी अन्धा, लूला और लंगड़ा था।

१३ वह बहुत कमज़ोर है। उसे निमोनिया हुआ था। तब से वह अच्छा नहीं हुआ। निमोनिया उसे एक मास पूर्व शुरू हुआ था।

१४ मैंने बहुत जल्दबाज़ी की। मैंने घोड़ा बेच दिया। यह घोड़ा मेरे भाई का था।

१५. ये लोग कांच के मकान में रहते हैं। उन्हें दूसरों पर पत्थर नहीं फैंकने चाहियें।

१६. उसे अभी चारपाई पर लिटाया है। वह बीमार है। उसे दवा दे दो। दवा न मिलने से वह मर जायगा।

१७ गौ के दूध से मक्खन निकलता है। भैंस के दूध से ज्यादा मक्खन निकलता है। गौ के दूध का मक्खन ज्यादा गुणकारी है। विद्यार्थियों को गौ के दूध का मक्खन खाना चाहिये।

१८ भीष्मपितामह वीर थे। भीष्मपितामह सत्यव्रती थे। उन्हों ने विवाह न करने की प्रतिज्ञा की। उन्होंने राज न लेने प्रतिज्ञा की। तब उनके पिता शान्तनु सत्यवती से विवाह कर सके। भीष्म अपने पिता को दुःखी नहीं करना चाहते थे।

१९. हरि वहां नहीं था। मैं उसके भाई को संदेश देकर चला आया।

२०. तुम कुछ कह रहे थे। पास ही मिल के इंजिन का भारी शोर हो रहा था। मैं तुम्हारी बात नहीं सुन सका।

२१ वह मेरे पास आ गया। वह बीमार था। वह छुट्टी चाहता था।

२२. वह लड़का पानी में डूब रहा था। वह सहायता के लिये चिल्लाया। एक मज़दूर ने उसकी आवाज़ सुनी। वह नहर में कूद पड़ा। वह लड़के को बाहर ले आया।

२३ वह राजा था। वह बड़ा निर्दय था। वह अपनी प्रजा को बहुत कष्ट देता था। प्रजा ने उसे एक दिन मार डाला।

अभ्यास २९

नीचे दो कहानियां दी गई हैं। इनमें छोटे छोटे पृथक् पृथक वाक्य बहुत से हैं। जिन्हें तुम एक कर सकते हो, उन्हें एक वाक्य बनाओ।

[१] एक कौवा था। उसने रोटी का टुकड़ा देखा। वह उसे उठा लाया। वह उड़ा। वह वृक्ष पर जा बैठा।

एक लोमड़ी कौवे को देख रही थी। वह भूखी थी। वह रोटी खाना चाहती थी। वह दरख्त के पास गई। वह कौवे से बोली। तुम्हारे पंख काले काले हैं। वे बड़े सुन्दर लगते हैं। तुम्हारी आवाज़ भी बहुत मीठी है। तुम्हारी आवाज़ सुन्दर है। तुम गीत गाओ। मैं सुनना चाहती हूं। कौआ भोला भाला था। लोमड़ी चालाक थी। कौआ लोमड़ी की बातों में आ गया। कौआ गाने लगा। उसके मुंह से रोटी गिर गई। लोमड़ी एकदम रोटी उठाकर भागी।

[२] एक जंगल था। उसमें एक शेर रहता था। वह बहुत भयानक था। वह जंगल के पशुओं को खाता था। वह बारी बारी से पशु खाता था। जिसकी बारी आती थी, वह पशु स्वयं शेर के पास जाता था। एकदिन खरगोश की बारी आई। वह शेर

के पास चला। वह शेर को मारना चाहता था। रास्ते में इस की तरकीब वह सोचता गया। वह बहुत आहिस्ता चलने लगा। बहुत देर हो गई। वह शेर के पास पहुंचा। शेर भूख से व्याकुल था। उसे बहुत गुस्सा आ रहा था। शेर चालाक था। खरगोश उससे भी अधिक चालाक था। वह शेर के पास पहुँचा। एक दम उसने हाथ जोड़े। वह बोला। रास्ते में एक शेर मिला। वह आप का दुश्मन था। मेरे चार साथी थे। उसने उन्हें पकड़ लिया। उसने मारना चाहा। मैं भाग आया। शेर गुस्से से पागल हो रहा था। शेर भूख से पागल हो रहा था। शेर उसकी चालाकी न समझ सका। शेर बोला। वह मेरा दुश्मन कहां है? खरगोश चला। वह शेर को भी ले चला। वह शेर को एक कुएं के पास ले चला। शेर ने कुंए के अन्दर झांका। कुंए में उसने अपनी परछांहीं देखी। उसने उसे ही दूसरा शेर समझा। वह उसे मारना चाहता था। वह कुएं में कूदा। शेर मर गया।

विरामचिन्ह

जब हम किसी से बात करते हैं, तो कहीं कहीं हम एक दो क्षण के लिए ठहर जाते हैं, जिससे सुनने वाला हमारी बात को समझ सके। यदि हम बहुत जल्दी जल्दी बोलते जावें और बीच में कहीं न ठहरें, तो हमारी बात कोई न समझेगा। इसी तरह जब हम कुछ लिखते हैं, तब भी हम बीच बीच में कुछ निशान

लगाते जाते हैं, जहां पढ़ने वाले को कुछ क्षण ठहरना चाहिये। यदि हम विरामचिन्हों—ठहरने के चिन्हों—द्वारा यह न बतावें कि कहां नया वाक्य प्रारंभ होता है, कहां वाक्य समाप्त होता है, तो उसे समझना कठिन हो जायगा। विराम चिन्ह कई प्रकार के होते हैं और वे नीचे दिये जाते हैं:—

१—पूर्णविराम	।
२—अल्पविराम	,
३—अर्धविराम	;
४—प्रश्न चिन्ह	?
५—विस्मयबोधक चिन्ह	!
६—कोष्ठ	( )
७—उद्धरण चिन्ह	" "

पूर्णविराम—जहां वाक्य पूरा होता है, वहां पूर्णविराम चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। जैसे—**मैं संध्या करूंगा। चलो, गंगा किनारे चलें। वहां और भी महात्मा सन्ध्या कर रहे हैं।**

अर्धविराम—जब वाक्य में थोड़ा ठहरने की जरूरत होती है, तब इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।

१—जौहरी ही मोती, पुखराज, नीलम, हीरा, मूंगा आदि को परख सकता है।

२—माता, पिता, भाई, बहन के रिश्ते सबसे बड़े रिश्ते हैं।

३—कमला जानती है, वह परीक्षा में पास हो जायगी।

४—मैं कब रोटी पकाऊँगी, यह ठीक पता नहीं ।

५—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चारों भाई थे ।

६—हम सहायता चाहते हैं, सहानुभूति नहीं ।

सम्बोधन के पीछे भी प्रायः अल्पविराम लगता है । जैसे—

१—शीलारानी, अपनी गुड़िया तो दिखा ।

२—शिवकुमारजी, आप क्या पढ़ रहे हैं ?

क्योंकि, इसीसे, इसीलिए, जो, किन्तु, परन्तु इत्यादि से पहले भी अल्पविराम का प्रयोग होता है । जैसे—

१—मैं नहीं लिख सकी, क्योंकि पैंसिल नहीं थी ।

२—राजा मर गया, इसी से सारी सेना भाग खड़ी हुई ।

३—वही लड़की पास होगी, जो मिहनत करेगी ।

४—मैं चलता तो सही, किन्तु मुझे पाठ भी याद करना है ।

अर्ध विराम—ऐसे दो अधिक वाक्यों को, जिनके अर्थों में पास पास का सम्बन्ध होता है, पृथक् करने के लिए अर्धविराम प्रयुक्त होता है । अल्पविराम से यहां कुछ अधिक ठहरना चाहिये । जैसे—

१—आज हम जिसे पसन्द करते हैं कल उसे ही नापसन्द करते हैं; आज हम जिसकी तलाश करते हैं कल उसे ही फेंक देते हैं; आज हम जिसे चाहते हैं, कल उसी से डरने लगते हैं ।

२—हम अपना शरीर किस तरह स्वस्थ और साफ रखें; हम अपने कपड़े किस तरह स्वच्छ रखें; हम अपने दिल को किस तरह सुविचारपूर्ण रखें; हम अपने कारोबार का किस तरह प्रबन्ध

करें; अपने बालबच्चोंका किस तरह पालन करें, इन सब बातों का ज्ञान आवश्यक है।

प्रश्नचिन्ह—प्रश्नबोधक वाक्य के अन्त में यह चिन्ह लगाया जाता है। जैसे—

सावित्री, क्या यह कापी तुम्हारी है ?

ठेकेदार साहब, यह काम कितने दिनों में बन जायगा ?

विस्मयबोधक चिन्ह—आश्चर्य, भय और हर्ष आदि के बोधक पद या वाक्य के अन्त में यह चिन्ह लगाया जाता है। जैसे—**धन्य धन्य ! वाह वाह ! हाय !**

दूर से सम्बोधन करते समय भी यह चिन्ह लगाये जाते हैं। जैसे—**रामचन्द्र ! इधर आओ।**

कोष्ठ—वाक्य में आये हुए किसी प्रक्षिप्त वाक्य को अलग करने या किसी शब्दविशेष का अर्थ स्मरण कराने के लिए ( ) प्रयुक्त होता है। जैसे—अच्छी रोशनी का बल्ब (**बिजली लैम्प का लट्टू**) कल तक भेज देना। वायसराय (**ब्रिटिश सम्राट के प्रतिनिधि**) कल यहां पहुँच जावेंगे। मैंने उससे वह बात (**कल चोरी से आम खाने की शिकायत**) कह दी।

उद्धरणचिन्ह— किसी लेखक या वक्ता के किसी विशेष अंश की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करने के लिए उस अंश को उद्धरण चिन्हों (" ") में रखते हैं। जैसे—

उसने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा—"मैं आप लोगों

से एक ही निवेदन करना चाहता हूं कि आप खेलने के समय खेला करें और पढ़ने के समय पढ़ा करें"।

रामायण में लिखा है—"धीरज धर्म, मित्र अरु नारी, आपद काल परखि यह चारी।"

अभ्यास (३०)

निम्नलिखित वाक्यों में आवश्यक चिन्ह लगाओ:—

(क) बच्चो ये कपड़े जो तुम ने या हमने पहने हुए हैं तुम जानते हो किस से बनते हैं शायद तुम्हें पता न हो आओ हम तुम्हें बताएं कि ये सब कपड़े किस वस्तु के बनाये जाते हैं

(ख) महानन्द के दो मन्त्री थे मुख्य का नाम शकटार और दूसरे का राक्षस था शकटार शूद्र और राक्षस ब्राह्मण था ये दोनों अत्यन्त बुद्धिमान साहसी वीर और प्रतिभासम्पन्न थे लेकिन जहां राक्षस धीर स्वभाव का था वहां शकटार उद्धत स्वभाव का था

(ग) लिखित नहीं माना जब उसने देखा कि उसका भाई उसे दण्ड नहीं देना चाहता वह राजा के पास गया राजाने पूछा तुम यहां कैसे आये हो वह बोला मैं न्याय कराने के लिए आया हूँ

(घ) तुमने अपनी माता नानी बहन भाई पिता मित्र से जो दस कहानियां सुनी हों वे सब एक एक करके संक्षेप से तथा छोटे छोटे शब्दों में अपनी भाषा में लिख कर दिखाओ

(ङ) हाय हाय मैं ने लक्ष्मण को बिना सोचे धिक्कार कर निकाल दिया अब मैं कहां जाऊंगी और क्या करूंगी न जाने यह दुष्ट रावण कहां ले जायगा

शब्द और वाक्य का प्रयोग

शब्द

नीचे कुछ शब्द लिखे गये हैं। एक एक शब्द को लेकर वाक्य बनाओ:—

सूरज

सूरज सवेरे निकलता है। सूरज सबको अच्छा लगता है। सूरज की धूप सर्दियों में अच्छी लगती है। सूरज की धूप गर्मियों में बुरी प्रतीत होती है। आदि:—

कौन, राजा, करता हूं, सायंकाल, प्रकाश, चांदनी, अनाड़ी, हंसी, मूर्ख, स्थान, बूढ़ा, चोर, सिपाही।

अभ्यास (३१)

निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो—

रेल पेल, मेल जोल, गुत्थम गुत्थी, चहल पहल, आना जाना, टाल मटोल, रोटी पानी, हिसाब किताब, दौड़धूप, धानीमनी, कलाकौशल, फल फूल, सड़ा गला, जलाभुना।

बहुत से ऐसे शब्द होते हैं, जो परस्पर मिलते जुलते हैं, लेकिन उनके अर्थों में बहुत अन्तर होता है। इन शब्दों के अर्थों का अन्तर जान लेना चाहिये। ऐसे कुछ शब्द नीचे दिये जाते हैं।

(अध्यापक को चाहिये कि इनका अर्थ और प्रयोग ठीक ठीक समझा दे।)

बकरी-बिकरी। दम-दुम। सोना-सूना। बल्ली-बिल्ली। छुरा-छुरी। बेड़ी—बीड़ी। बेड़ा—बीड़ा। बेर-बैर। दीन-दैन।

दहाई—दुहाई। टका-टिका। भीड़-मेड़। धन-धुन। बल-बिल। चना—चुना—चीना। जोड़ा-जूड़ी। रेल—रील।

(अध्यापक को चाहिये कि इसी तरह बीसियों अन्य शब्दों का प्रयोग भी विद्यार्थियों से कराये। परन्तु यह ख्याल रखना चाहिये कि विद्यार्थी उस शब्द को खूब समझता है। जब यह अभ्यास हो चुके, तब दो या तीन शब्दों का प्रयोग एक वाक्य में कराने का अभ्यास कराना चाहिये। यह प्रयत्न कराना चाहिये कि विद्यार्थी एक या अनेक शब्दों के प्रयोग से भिन्न भिन्न अर्थों के अनेक वाक्य बनाये। इसके बाद अनेक शब्द-समूहों को प्रयोग में लाकर कहानी आदि लिखाने का अभ्यास कराये। इससे जहां बच्चों को शब्द-प्रयोग का ज्ञान होगा, वहां उनकी कल्पना शक्ति का भी सुन्दर विकास होगा।)

अभ्यास (३२)

नीचे दो-दो शब्द एक साथ लिखे हैं। ऐसे वाक्य बनाओ, जिनमें दोनों शब्दों का प्रयोग होजाय।

राजा-सिपाही (राजाने सिपाही को बुलाया)। महात्मा-सच (महात्मा ने सच बोलने का उपदेश दिया)। स्नान-नीरोग। मनुष्य-बुद्धिमान। माता-सुखी। भाई बहन। कपड़े-साफ। बुद्ध-उपदेश। अध्यापक। विद्यार्थी। दिल्ली-भारत। कलकत्ता-बंगाल। कराची-अरबसागर (कराची अरबसागर के तट पर है)। वैद्य-बीमार। किसान-बैल। रामचन्द्र-दशरथ।

अभ्यास (३३)

नीचे तीन या चार शब्दों के समूह लिखे गये हैं। उन्हें एक

एक वाक्य में प्रयुक्त करो:—

१. प्रातः काल-व्यायाम-नीरोग (प्रातः काल व्यायाम करने से *मनुष्य नीरोग रहता है या* विद्यार्थी को प्रातःकाल उठना और व्यायाम करना चाहिये) २. रामचन्द्र, लक्ष्मण, दशरथ, (रामचन्द्र और लक्ष्मण दशरथ के पुत्र थे या दशरथ के पुत्र रामचन्द्र और लक्ष्मण वन गये या रामचन्द्र और लक्ष्मण के वन जाने से दशरथ परलोक सिधारे) । ३ तस्वीर—सुन्दर—चित्रकार ४ गुलाब—सुगंध—सच्चा ५. चीन—गृहयुद्ध—भयंकर (चीन में भयंकर गृहयुद्ध छिड़ गया या भयंकर गृहयुद्ध ने चीन को कमज़ोर कर दिया) । ६. पुस्तक—तस्वीर—१०० पृष्ठ—सुन्दर । ७. घर—छोटा सा—तीन कमरे-सिर्फ़ ८. हमारी श्रेणी—पचास—हैं ६. सूर्य—सुनहली—पसन्द—हैं १०. राजा—फ़ौज—युद्ध—विजयी

अभ्यास (३४)

नीचे कुछ शब्दों के दो समूह दिये जाते हैं। तुम उन्हें प्रयुक्त करके छोटी छोटी कहानियां बनाओ:—

दो कुत्ते, परस्पर, प्रतिज्ञा, लड़ना, पाप, एक, चील, मुँह से, रोटी, दोनों कुत्ते, लड़ाई, लहू लुहान, कौआ, उठाकर, कुत्ते, पछताये ।

२—गिलहरी, पेड़, छाया, कुतर कर, फल, कुत्ते, दृष्टि, झपटा, चढ़ गई, सिर टकरा गया, चुपचाप, लज्जित ।

वाक्यों का प्रयोग

बालको, दिये हुए शब्दों का 'प्रयोग वाक्यों में करना तुम जान गये हो, लेकिन कोई सिलसिला लेकर तुम्हें दिये हुए वाक्यों का प्रयोग भी अपनी भाषा में करना सीखना चाहिये। वहां दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ, इस वाक्य का अपनी भाषा में प्रयोग करना है। कोई सिलसिला उठाओ। तीन प्रसंग निम्न-लिखित रूप से उठाये जा सकते हैं:—

रामचन्द्र जी की सेनाने समुद्र पर पुल बांध लिया और कुछ ही दिनों में लंका के तट पर पहुंच गई। यह देखकर लंका दुर्ग से भी राक्षस सेना बाहर निकल आई। दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ। यह युद्ध बहुत दिनों तक चलता रहा। अन्त में श्री रामचन्द्र की विजय हुई।

एक दूसरा विद्यार्थी लिख सकता है:—

अकबर की विशाल सेना राजा मानसिंह के सेनापतित्व में हल्दी घाटी के मैदान में पहुंच गई। इधर से महाराणा प्रताप भी अपनी वीर राजपूत सेना लेकर वहां पहुंचे। दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ।

एक तीसरा विद्यार्थी लिख सकता है:—

रूपनगर के राजा ने मुगल दूत को कहा कि अपने बादशाह से कह दो कि इस पत्र का जवाब युद्ध में मिलेगा। युद्धभूमि में ही मैं उनके दर्शन करना चाहता हूं। दूत ने वापस जाकर मुगल सम्राट् को रूपनगर के राजा का यह संदेश सुनाया। यह सुन

कर उन्होंने अपने सेनापति को आज्ञा दी कि अभी एक लाख सेना लेकर रूपनगर पर चढ़ाई करो। १५—२० दिन में मुग़ल सेना रूपनगर के दुर्ग के बाहर पहुँच गई। वहां दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ।

इसी तरह सब विद्यार्थी विविध प्रसंग उठाकर कोई ऐतिहासिक घटना या कहानी लिखते हुए इस वाक्य का प्रयोग कर सकते हैं।

अभ्यास (३५)

नीचे कुछ वाक्य दिये गये हैं। कोई प्रसंग उठा कर इनका प्रयोग करो:—

१. गरमियों में धूप बहुत बुरी लगती है।

२. भारतवर्ष हमारी जन्मभूमि है।

३. सिपाही चोर के पीछे दौड़ा।

४. यह किसने बनाया होगा ?

५. वह आश्चर्यित हो गया ?

६. क्रोध के आवेश में वह बहुत कुछ कह गया।

७. दुनियां में ऐसा ही होता है।

८. मुझे तो यही पसन्द है।

९. मैं एकदम घर पहुँचा।

१०. आखिर यह काम हो ही गया।

(अध्यापक को चाहिये कि इसी तरह के बीसियों वाक्य पाठ्य पुस्तकों से चुन चुन कर विद्यार्थियों को दे और उन्हें प्रयुक्त करने के लिए कहे। इससे विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति का बहुत विकास होता है।)

मुहावरे

कुछ ऐसे वाक्य या वाक्य के अंश होते हैं, जिनका अर्थ उनमें आने वाले शब्दों के अर्थों से भिन्न होता है। घोड़े बेच कर सोने का अर्थ यह नहीं है कि सोने से पहले घोड़े बेचे। इसका अर्थ है—बेफिक्र गहरी नींद सोना। प्रयोग विशेष के कारण किसी वाक्य या वाक्यांश का अर्थ बदल जाता है। ऐसे वाक्यों या वाक्यांशों को मुहाविरा कहते हैं। इन्हें प्रयोग करने से भाषा सुन्दर लगने लगती है। कुछ प्रसिद्ध मुहावरे तथा उनके अर्थ नीचे दिये जाते हैं:—

अंगुली उठाना—आलोचना करना।

अंगूठा दिखाना—तिरस्कार करना, कोई चीज देने से इन्कार करना।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना—अपने साथियों से अलग रहना।

आपे से बाहर होना—क्रोध के कारण अपने वश में न रहना।

आंखों का तारा—बहुत प्रिय।

आंसू पोंछना—दिलासा देना।

आटे के साथ घुन पिसना—अपराधी के साथ निर्दोष को भी दण्ड मिलना।

उठ जाना—मर जाना

एक न चलना—कोई युक्ति सफल न होना

कमर कसना—तय्यार हो जाना

कमर टूटना—चारों ओर से निराश होना

कांटा दूर होना—रुकावट का दूर होना

कोरा रहना—कुछ न सीखना

खून खौलना—जोश में आना

गर्दन हिलाना—इन्कार करना

घड़ों पानी पड़ जाना—बहुत लज्जित होना

घाव हरा करना—दुखी को दुखाना

चार दिन की चांदनी—थोड़े समय का सुख

चुल्लू भर पानी में डूब मरना—लज्जा के मारे मुँह न दिखाना

छक्के छूटना—हार जाना

ज़बान में लगाम न होना—बिना सोचे समझे उचित अनुचित कहना

जान पर खेलना—अपने आप को संकट में डालना

जामे से बाहर होना—अत्यन्त क्रुद्ध होना

टका सा जबाब देना—साफ़ इन्कार कर देना

टांग अड़ाना—व्यर्थ में हस्ताक्षेप करना

डंके की चोट कहना—सब के सामने खुल्लमखुल्ला कहना

डेढ़ चावल की खिचड़ी—अपने साथियों से पृथक् होकर नया काम करना

ढेर करना—मारकर गिरा देना

तिल का ताड़ करना—छोटी बात को बहुत बढ़ा देना

दांत खट्टे करना—पराजित करना

दुम दबाकर भागना—भय के मारे भागना

दो दिन का महमान—जल्दी मरने वाला

नाक कटना—अनादर होना

पानी पानी होना—शर्मिन्दा होना

पीठ दिखाना—हार कर भागना

पेट में चूहे कूदना—बहुत भूख लगना

फूटी आंखों न भाना—बिलकुल पसन्द न होना

बात न पूछना—ध्यान न देना

मक्खी पर मक्खी मारना—ज्यों की त्यों नक़ल करना

बगुलाभगत होना—कपटी होना

बाग़ बाग़ होना—खुश होना

भाण्डा फूटना—भेद खुलना

मुँह पर हवाइयां उड़ना—भय से पीला पड़ना

महाभारत होना
लंकाकाण्ड होना } —खूब मारपीट या लड़ाई होना

लाल पीला होना—खूब गुस्सा होना

सिर आंखों पर लेना—किसी का आदर करना

हाथ को हाथ न सूझना—बहुत अंधेरा होना

हाथ तंग होना—पैसा कम होना

(इन मुहावरों के उदाहरण यहां नहीं दिये गये। अध्यापक को चाहिये कि वह जहां इन मुहावरों का प्रयोग विद्यार्थियों से कराये, वहां पाठ्यपुस्तकों में आने वाले मुहावरों का भी प्रयोग कराये।)

विविध अशुद्धियां

अभ्यास (३६)

निम्नलिखित वाक्यों की अशुद्धियां ठीक करो, लेकिन ऐसा करते हुए सभी प्रकार के लेखन, लिंग, वचन, शब्द क्रम, विशेषण संयुक्त वाक्य आदि नियमों का ध्यान रखो।

(१)

१. गूदा के बीच में अमरूद का छोटा छोटा बीज होता है। २. जो वस्तु हाथ से जाता रहे, उसका दुःख नहीं मानना। ३. पूज्यनीय मामाजी को पत्र लिखा। ४. कृशनचन्दजी कहां गये? ५. एडवर्ड अष्टम ने सिंघासन छोड़ दिया। ६. इस सूबा में आम बहुत होते हैं। ७. रामगोपाल जी के तीन बेटा थे।

(२)

१. वह कपड़ा सुन्दर लाया। २. पानी गरम आवाज़ बहुत करता है। ३. दूध वह पीता है। ४. पीता है वह पानी। ५. सुभाष लाता है चीज़ खाने की। ६. भारतवर्ष देश हमारा सबसे अच्छा है। ७. थूकना घर और गलीमें बुरा है। ८. यह क्या घड़ी तेरी है?

(३)

१. जो गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक हैं, स्वामी श्रद्धानन्द वीर नेता थे। २. ग्यारहवें नामकरण संस्कार दिन होता है। ३ तुम कब सो गया। ४. बालक के साथ हमारा लोगों का कोई झगड़ा नहीं है। ५. हम वहां गया था, तुमने मिलने नहीं आया। ६. माता जी कहतीं (कहती) हैं। ७. भगवती अच्छी * पढ़ती है ८. न ही राम आया और न ही कृष्ण आया। ९. कोई आदमी पर विश्वास मत करो। १०. तुम जानते हैं कि मेरी हालत क्या था ? ११. भगवन, हम सब तेरा पापी पुत्र हैं। १२ आकाश का बिजली सदा पापी पर नहीं गिरता।

(४)

१. खाण्ड की भारत में कई मिलें खुल गईं। २. लगभग सुभाषचन्द्र ने सब प्रश्नों के उत्तर दे दिये हैं। ३. कोई राम आवे या कृष्ण। ४. गाड़ी चूक जाओगे नहीं तो जल्दी करो। ५. या मालिक बनोगे गुलाम ? ६. शिवकुमार को मैंने उठा दिया, जिस की इच्छा न थी। ७. वह बुद्धिमान है, ईमानदार नहीं है। ८. उसने मेहनत की थी, क्योंकि वह पास हो गया।

(५)

(१) वह जागता है और सोता है। (२) सुशीला बहुत

---

*क्रिया विशेषण के लिंग में कर्ता के अनुसार लिंग परिवर्तन नहीं करना चाहिये। अशोक अच्छा पढ़ता है, पर भगवती भी अच्छा पढ़ती है।

अच्छी लड़की है, और उसकी बहन कठोरहृदय है। (३) मैंने उनकी बहुत ही खुशामद की; बल्कि वह मानने में नहीं आया। (४) क्या यह उसी शहर की घटना है, जिसमें तुम गया था? (५) मैं लड़ते हुए सदा तुमको देखता हूं। (६) वह थका हुआ था और भूखा था। (७) मेरी आय काफी है और मैं सुखी नहीं हूँ। (८ स्वामी श्रद्धानन्द ७२ साल के थे और खूब काम करते थे। (६) अहल्याबाई महिला थी, इसलिये बहुत शासनकुशल थी, राजनीतिज्ञ और थी।

(६)

दशरथ अयोध्या का राज करता था। इस राजे के चार बेटा थे। चार का नाम क्रमशः राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न था। राम सबका बड़ा था, परन्तु उसे राजगद्दी देने का निश्चय किया। राज्याभिषेक की तैयारी होने लगी। कैकेयी भरत की माता ने दशरथ से वर मांगा जिसको गद्दी देना चाहते हो, रामचन्द्र को जंगल भेजो और मेरा पुत्र को राजगद्दी मिले। रामचन्द्र आज्ञा-पालक था और उसने वह आज्ञा मान कर जंगल चला गया। राम का भाई लक्ष्मण और सीता भी उसके साथ जंगल को गये।

[७]

राम, लक्ष्मण और सीता जी जंगल में १४ साल तक वन-वास किया। जिनको उन्होंने मार दिया, ऐसे जंगल में उन्हें बहुत से राक्षस मिले। वे भरमण करते करते एक दिन पञ्चवटि पहुंचे वहां के प्राक्रितिक दृश्य देख देख कर खूब प्रसन्न व आश्चर्यित

हये. वे वहीं रहने का नोश्चय कर लिया। एक दिन दोनों भाई शीकार खेलने गये। रावण वहां पहुंचा और रावण सीता जी से भीख मांगा। जब सीता अपनी धोति में कुछ आटा लाई और रावण को देने लगी, तो दूश्ट रावण ने सीता जी को ही उठा लिया। रावण सीता जी को हवाई जहाज से अपनी राजधानि में ले गया। सीता हमेशा अपने पूज्यनीय पतीदेवका समरण करती और आंसु बहाती। राम को हनुमान के द्वारा मालूम हुआ कि सीता लंका में है, जो राजा सुगरीवका मंत्री था। सुगरीबकी सैना की सहायता से राम ने लका पर आक्रमन कर दिया। उधर से राकशसों की फौज भी पहुँच गया। खूब लड़ाई हुआ। रावण मारा गया, उसका पुत्र मारा गया, उसका भाई भी खतम हुआ। सारी सेना मारी गयी। राम विभीषण को गद्दी पर बिठाया और सीता को वापस लाया।

कहानी

प्रश्न और संकेत

(छोटे बड़े सभी बालक कहानियों में अधिक दिलचस्पी लेते हैं। निबंध या पत्र लिखाने से पहले यदि अध्यापक उन्हें कहानी लिखना सिखावें तो वे अधिक सरलता व उत्साह से कहानी लिखना सीख लेंगे। अध्यापक को चाहिये कि पहले विद्यार्थियों को एक कहानी सुना दे। फिर प्रश्नों द्वारा विद्यार्थियों से कहानी दुहरावे। विद्यार्थी पूर्ण वाक्यों में उत्तर देंगे।)

१ झूठा गडरिया

ऋषिकेश के पास एक पहाड़ी पर कोई गडरिया भेड़ बकरियां चराया करता था। एक दिन उसे दिल्लगी सूझी। वह ज़ोर ज़ोर से पुकारने लगा—"बाघ आया, बाघ आया, दौड़ियो।"

लोग खेतों में काम कर रहे थे। यह आवाज़ सुनकर उन्होंने सोचा कि सचमुच कोई बाघ आया है और गडरिये की भेड़ बकरियों को खा रहा है। बेचारे अपना काम छोड़कर हाथ में लट्ठ लिए हुए भागे भागे वहां पहुँचे। पर वहां बाघ वाघ कुछ नहीं था। गडरिये ने झूठ मूठ हल्ला किया था। उनको लट्ठ लिये आया देखकर गडरिया खिलखिला कर हँस पड़ा और बोला—मैंने तो यह सब दिल्लगी की थी। वे लोग नाराज़ होकर वापिस लौट गये।

एक दिन ऐसा हुआ कि सचमुच बाघ आ गया और भेड़ें व बकरियां खाने लगा। गडरिये ने ज़ोर ज़ोर से पुकारा—"बाघ

आया, बाघ आया, दौड़ियो।" पर अब उसकी सहायता को कौन आता? सबने यह सोचा कि वह शरारती गडरिया दिल्लगी कररहा है। फल यह हुआ कि गडरिये का बहुत नुकसान हुआ। बाघ कई बकरियां और भेड़ें खा गया और कई मार गया। कई उससे डर कर वहां से भाग गईं। सच है झूठ बोलने का फल बुरा होता है।

प्रश्न

१. ऋषिकेश की पहाड़ियों पर एक गडरिया क्या करता था?

२. एक दिन उसे क्या सूझा?

३. उसने क्या किया?

४. उसकी आवाज़ सुन कर लोगों ने क्या किया?

५. लोगों को आते देख कर गडरिये ने क्या कहा?

६, तब लोगों ने क्या किया?

७. एक दिन क्या हुआ? बाघ आकर क्या करने लगा?

८ गडरिये ने क्या किया?

९. लोग उसकी सहायता के लिए क्यों नहीं आये? उन्होंने क्या समझा?

१०. बाघ ने क्या किया?

११. झूठ बोलने का क्या फल होता है?

संकेत

इसी कहानी के निम्नलिखित संकेत देकर विद्यार्थियों से फिर कहानी दुहरायी जा सकती है।

१. ऋषिकेष की पहाडियों पर गडरिये का भेड़ बकरी चराना

२. दिल्लगी सूझना और "बाघ आया, बाघ आया, दौड़ियो" चिल्लाना ।

३. लोगों का अपना काम छोड़ कर लट्ठ हाथ में लेकर आना, लेकिन कुछ न देखना ।

४. गडरिये का हंसना और दिल्लगी की बात कहना ।

५. लोगों का नाराज़ होकर वापिस लौटना ।

६. एक दिन सचमुच बाघ का आना और भेड़ बकरी खाना ।

७. गड़रिये का चिल्लाना —लेकिन लोगों का दिल्लगी समझ कर न आना ।

८- बाघ का भेड़ बकरियां खाना, मारना

९. झूठ बोलने का बुरा फल मिलना ।

---

२ लोमड़ी और बकरा

एक लोमड़ी शिकार की खोज में दौड़ रही थी । दौड़ते दौड़ते वह एक कुएँ में जा गिरी । कुँआ बहुत गहरा तो न था, पर इतना गहरा ज़रूर था कि लोमड़ी अपने आप नहीं निकल सकती थी । लाचार होकर उसे वहीं रहना पड़ा । कुछ देर बाद एक बकरा उसी रास्ते से निकला । बकरे ने जो कूएँ में झांका तो लोमड़ी को पाया । अचरज में आकर पूछने लगा—बहिन, तुम यहां क्या कर रही हो ?

लोमड़ी ने उत्तर दिया—भाई साहब, आनन्द मना रही हूँ ।

देखो घास कैसी हरी २ और मजेदार है। यदि तुम भी आजाओ तो फिर कैसा आनन्द हो! बकरा मूर्ख था। लोमड़ी की बातों में आगया। बिना सोचे समझे नीचे कूएँ में कूद पड़ा।

बकरे का कूदना था कि लोमड़ी उछल कर उसकी पीठ पर पहुँची और दूसरी छलांग में कूएँ से बाहर हो गई। कूएँ से बाहर जाकर वह बकरे से बोली—भाई साहब, अब घास खाने में कमी न रखियेगा। मैं इसलिए चली आई हूँ कि सारी घास आपके हिस्से में आजाय। खूब पेट भरकर खाइये और अपनी बुद्धि को सराहिये।

बेचारा बकरा वहीं का वहीं रह गया औरअपनी मूर्खता पर पछताने लगा।

प्रश्न

१. लोमड़ी क्यों दौड़ रही थी ?
२. दौड़ते दौड़ते कहां जा पड़ी ?
३. कुआं कितना गहरा था ?
४. वह बाहर क्यों न निकल सकी ?
५. कुछ देर बाद उस रास्ते से कौन गुजरा ?
६. बकरे ने झांक कर क्या देखा और लोमड़ी से क्या कहा ?
७. लोमड़ी ने क्या जवाब दिया ?
८. बकरे ने सुनकर क्या कहा ?
९. लोमड़ी कुएँ से बाहर कैसे निकली ?

१०. बाहर निकल कर उसने क्या कहा ?

११. बकरा क्या करने लगा ?

संकेत

इस कहानी के संकेत निम्नलिखित हैं—

१. शिकार की खोज में एक लोमड़ी का दौड़ना।

२. दौड़ते दौड़ते कुएँ में गिर जाना।

३. कुएं का इतना गहरा होना कि लोमड़ी का स्वय न निकलना

४. कुछ देर बाद बकरे का उसी रास्तेसे गुजरना और लोमड़ी को देखना।

५. लोमड़ी से पूछना—यहां क्या कर रही हो ?

६. लोमड़ी का जवाब—आनन्द कर रही हूं, हरी हरी घास खा रही हूं। तुम भी आजाओ, कैसा आनन्द रहे।

७. बकरे का कुएँ में कूदना और लोमड़ी का उसकी पीठ पर चढ़ कर कुएं से बाहर निकलना।

८. लोमड़ी का कहना—भाई साहब, अब खूब घास खाइये मैं इस लिए चली आई हूं कि हरी घास आप खायें। खूब पेट भर कर खावें और अपनी बुद्धि सराहें।

९. बकरे का वहीं रह जाना और पछताना।

परिच्छेद

कहानी लिखते समय एक बात का ध्यान रखना चाहिये। सारी कहानी एक ही सिलसिले में न लिखनी चाहिए। जहां एक

बात खतम हो जाय, वहां परिच्छेद भी समाप्त कर देना चाहिए। नयी बात से नया सिलसिला जारी करना चाहिए। ऊपर की दो कहानियों को एक बार फिर गौर से पढ़ो। उसमें यह देखो कि किस तरह एक बात खतम होने पर परिच्छेद खतम किया गया है और किस तरह नयी बात के लिये नया परिच्छेद प्रारम्भ किया गया है।

---

३ एकता में ही बल है

एक आदमी के तीन पुत्र थे। तीनों आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे। उनका पिता इन बातों से बहुत तंग था और हर समय दुखी रहता। आखिर वह बीमार हो गया और दिन पर दिन उस की हालत खराब होती गई।

अब यह सोचकर कि मौत निकट ही आ रही है, उसने तीनों पुत्रों को बुलाया। जब वे आ गये तो लकड़ियों का एक गट्ठा मंगवाया और उनसे कहा कि बारी २ आकर इसे तोड़ो। हरएक ने एड़ी से चोटी तक ज़ोर लगाया पर गट्ठे की एक लकड़ी भी न टूटी। तब पिता ने कहा कि इस गट्ठे को खोल डालो और एक २ लकड़ी निकाल कर तोड़ो। यह तीनों ने सहज में ही कर डाला।

यह देख कर उस आदमी ने कहा—बेटो! मैं तो अब मौत के निकट हूँ। जल्दी ही अपनी आखें सदा के लिए बन्द कर दूंगा। परन्तु यह जरूर चाहता हूँ कि तुम हर समय सुखी रहो। अभी तुम ने देखा कि गट्ठे को बहुत जोर लगाने पर भी तुम नहीं तोड़ सके

पर उसी गट्ठे की लकड़ियां जब एक दूसरे से अलग हो गईं तो उन्हें तोड़ना सहज होगया। इसी तरह जब तक तुम मेल-मिलाप से रहोगे, संसार में तुम्हें कोई नुकसान नही पहुंचा सकता। पर अगर लड़ते झगड़ते रहे तो हर एक तुम्हें नुकसान पहुँचायगा।

यह सुनकर तीनों बेटों की आखें खुलीं और उन्होंने इस बात का वचन दिया कि अब वे आपस में लड़ाई झगड़ा नहीं किया करेंगे। ऐसे मिल कर रहेंगे, जैसे गट्ठे में लकड़ियां।

(अध्यापक को चाहिये कि ब्लैक बोर्ड पर प्रश्न और संकेत करते हुए परिच्छेदों का भी ख्याल रखे। नीचे एक दो उदाहरण दिये जाते हैं।)

प्रश्न

(१) एक आदमी के कितने पुत्र थे? (२) उनका आपस में क्या व्यवहार था? (३) उनके पिता पर इसका प्रभाव क्या पड़ा? (४) उसने क्या सोच कर पुत्रों को बुलाया? (५) उनके आने पर उसने बच्चों को क्या करने को कहा? (६) बालकों ने लकड़ियां कैसे तोड़ीं?

(७) यह देखकर उस आदमी ने बालकों को क्या शिक्षा दी?

(८) बालकों ने उससे क्या समझा और बाप को क्या वचन दिया।

संकेत

एक आदमी के तीन पुत्र होना—तीनों का आपसमें लड़ना झगड़ना—पिता का इससे तंग रहना—आखिर बीमार पड़ना—

मृत्यु को निकट आते सोचकर एक दिन सब बेटों को बुलाना—आने पर लकड़ियों का गट्ठा देकर लड़कों को तोड़ने के लिए कहना—लड़कों का तोड़ न सकना—तब बाप का एक एक लकड़ी अलग अलग कर तोड़ने के लिए कहना—बेटों का लकड़ियों को तोड़ डालना--

यह देखकर आदमी का शिक्षा देना कि मैं तो मरने वाला हूं, तुम गट्ठे की तरह इकट्ठे रहोगे, तुम्हें कोई नुकसान न पहुँच सकेगा, अलग अलग होने पर लकड़ियां जैसे तोड़ी गयी हैं, वैसे ही तुम्हें भी लोग नुकसान पहुँचा सकेंगे—

लड़कों को समझ आना और आपस में लड़ाई झगड़ा न करने और गट्ठे की तरह एक साथ मिलकर रहने का वचन देना।

(इन कहानियों के अलावा पाठ्य पुस्तकों में आने वाली कहानियों को भी इसी तरह प्रश्नों और संकेतों द्वारा दुहराया जाय तो विद्यार्थियों का अभ्यास खूब बढ़ सकता है। जब विद्यार्थी इस तरह कहानी लिखना सीख जाएं, तो अध्यापक को चाहिये कि प्रश्नों और संकेतों को कुछ अधिक संक्षिप्त करें। विद्यार्थी अपनी कल्पनाशक्ति व स्मरणशक्ति का अधिक उपयोग करने लगेंगे।)

५ पीतल और मिट्टी के बर्तन

एक बार यमुना नदी में बाढ़ आई। बाढ़ इतने जोर की थी कि कई गांव के गांव बह गये। लोगों का माल और पशुओं का बड़ा नुक़सान हुआ। एक मकान की जो दीवारें गिरीं, तो एक पीतल का और एक मिट्टी का बर्तन भी नदी में बह निकला।

पास पास होने से दोनों में बातें होने लगीं। पीतल के बर्तन ने कहा—मित्र, कैसे आनन्द की बात है कि हम एक दूसरे के पास पास हैं! कुछ और निकट आओ तो अच्छी तरह बातें करें। मिट्टी के बर्तन ने कहा—इस प्रेम के लिये आपका धन्यवाद करता हूं। पर आप इतनी कृपा करें कि मेरे निकट और न आवें। पीतल का बर्तन बोला—वह क्यों?

मिट्टी के बर्तन ने कहा—इसलिये कि अगर आप मेरे से टक्कर खाएंगे तो भी मैं टूट-फूट जाऊंगा और अगर मैं आप से टक्कर खाऊंगा तो भी मैं नहीं रह सकूंगा। इससे यही ठीक है कि हम एक दूसरे से दूर दूर ही रहें।

प्रश्न

१. जमुना नदी की बाढ़ से क्या हुआ?

२. पीतल और मिट्टी के घड़ों में क्या ? बातचीत हुई?

३. मिट्टी के बर्तन ने पीतल के घड़े के पास जाने से क्यों इन्कार किया?

संकेत

जमुना नदी में बाढ़ आने से गांवों का बहना—पीतल और मिट्टी के घड़ों का भी बहना।

पीतल के घड़े का मिट्टी के घड़े को साथ साथ चलने के लिए निमंत्रित करना।

मिट्टी के घड़े का इसलिए इन्कार करना कि उसके छूने से वह टूट जायगा।

६ यवक्रीत

मुनिपुत्र यवक्रीत विद्याध्ययन के लिये घर से निकला। उसने एक नदी के तटपर बैठ कर गायत्री मंत्र का जाप करना शुरू किया। दो चार दिन बाद राजा इन्द्र वहां से गुज़रे। उन्होंने यवक्रीत को जाप करते देखकर इसका कारण पूछा। यवक्रीत ने जवाब दिया कि मैं विद्याप्राप्ति के लिये जप कर रहा हूँ।

यह सुनकर इन्द्र मन ही मन हँसा और उसे शिक्षा देने के ख़याल से वह थोड़ी थोड़ी बालू नदी में डालने लगा। यवक्रीत ने यह देख कर पूछा कि आप क्या कर रहे हैं? इन्द्र ने जवाब दिया कि मैं नदी पर पुल बना रहा हूं। मुझे पार जाना है।

यवक्रीत भी यह सुनकर मन ही मन हंसा और कहने लगा कि भला बालू से भी कभी पुल बंध सकता है? लकड़ी, लोहा और पत्थर लाकर पुल बनाओ, अन्यथा नहीं बनेगा।

तब इन्द्र ने कहा कि जिस प्रकार नदी को पार करने के लिए बालू से पुल नहीं बंधता, उसी तरह सिर्फ गायत्री मंत्र के जाप से भी विद्या प्राप्त नहीं हो सकती।

यह सुनकर यवक्रीत की आंखें खुल गई और वह गुरु के पास पढ़ने लगा।

प्रश्न

राजा इन्द्र ने यवक्रीत को क्या करते देखा और उस पर क्या प्रभाव पड़ा?

इन्द्र ने यवक्रीत को शिक्षा देने के लिये क्या किया ?

यवक्रीत पर इसका क्या प्रभाव पड़ा ?

इन्द्र और यवक्रीत में परस्पर क्या बातचीत हुई ?

संकेत

यवक्रीत का विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री मंत्र का जाप करना। उसे शिक्षा देने के लिए इन्द्र का पुल के बहाने नदी में थोड़ा थोड़ा बालू फैंकना।

यवक्रीत का हंसना और इन्द्र का उसे शिक्षा देना कि बालू से जैसे पुल नहीं बन सकता, उसी तरह गायत्री मंत्र के जाप से भी विद्या प्राप्ति असंभव है।

---

७ गधा और उसकी छाया

किसी आदमी को एक बार किसी नगर में जाना था। उसके पास सामान बहुत था। उस गांव में न कोई तांगा था, न बैल गाड़ी। एक गधे को उसने किराये पर ले लिया। उस पर अपना सारा सामान लाद वह वहां से चल पड़ा। गधे वाला भी उसके संग संग चलने लगा।

चलते चलते दोपहर हो गई। गर्मी के दिन थे। बड़ी कड़ी धूप पड़ रही थी। ऐसा मालूम होता था कि जैसे आग बरस रही हो। रास्ते में रेत ही रेत थी। दूर २ तक कहीं कोई पेड़ तक दिखाई नहीं देता था जिसके नीचे बैठ कर घंटा आध घंटा सुस्ता लें।

दोनों यह चाहते थे कि गधे की छाया में रहें, क्योंकि ठंडी जगह होने से वहां कुछ आराम मालूम होता था। पर जगह थी केवल एक के लिये ही। बस दोनों में झगड़ा शुरू हो गया। एक कहता कि यह छाया मेरी है, क्योंकि मैं ने आज सारे दिन के लिये गधा किराये पर लिया है। दूसरा कहता—यह कैसे हो सकता है? तुम ने गधा किराये पर लिया है न कि उसकी छाया। इसलिये छाया मेरी है।

इस तरह होते २ झगड़ा बढ़ता गया। दोनों ने लाठियां पकड़ लीं। अब तो लगी लाठी-पर लाठी बजने। इस लड़ाई में एक की लाठी गधे पर भी जा लगी। इससे वह इतना डरा कि सारा लदा हुआ सामान वहीं फैंक कर भाग गया। फल यह हुआ कि उनके पास न गधा ही रहा, न छाया। वे दोनों पछताने लगे।

प्रश्न

(१) एक आदमी ने सामान लेजाने के लिए क्या किया?

(२) गधे वाले और उसमें किस बात पर झगड़ा हुआ?

(३) उसे निबटाने के लिये उन्होंने क्या किया और उसका फल क्या हुआ?

संकेत

(१) सामान ले जाने के लिए गधा किराया करना।

(२) रास्ते में गर्मी और धूप

(३) गधे वाले और उसका गधे की छाया में बैठने के लिए आग्रह। (४) छाया के छोटा होना के कारण दोनों का झगड़ा

और दलीलें। (५) लाठी से मारपीट होना और गधे पर एक लाठी पड़ना। (६) गधे का माल लेकर भाग जाना और दोनों का पछताना।

(यहां अध्यापकोंको चाहिये कि वे मिडिलकी ऊंची श्रेणीके विद्यार्थियोंको उन नियमों का अभ्यास भी कराते जावें, जो वे पहले भागों में पढ़ चुके हैं। वाक्योंकी रचना में उपर्युक्त नियमों का कैसे ध्यान रखा गया है—यह बताते हुए यह भी बताना चाहिये कि यदि उनमें से एक भी नियम का ध्यान न किया जाय, तो वाक्य कैसे अशुद्ध हो जाता है। शब्दों का वाक्यों में क्रम क्या है ? विशेषण और विशेष्य में क्या सम्बन्ध है ? कोई वाक्य प्रश्नात्मक या निषेधात्मक कैसे बनाया गया है ? दो या तीन वाक्य कैसे संयुक्त कर दिये गये हैं ? एक विधेय या उद्देश्य का विस्तार कैसे होता है ? आदि बातों का ज्ञान किसी किसी कहानी के साथ दुहरा दिया जाय, तो विद्यार्थी लिखते समय अपनी भाषा को और भी सुन्दर व परिष्कृत बना सकेंगे। वे लेखनशैली में इन नियमों का महत्त्व ही न समझेंगे, लेकिन इनका प्रयोग भी अच्छी तरह करने लगेंगे।)

कुछ और कहानियां

(नीचे कुछ कहानियां दी गई हैं। अध्यापक इनसे स्वयं प्रश्न और संकेत बनाकर कहानी लिखाने का अभ्यास करें और यह अभ्यास हो जाने पर उन्हें सिर्फ कहानी सुनाकर दुहराने का अभ्यास करावें।)

८ परमात्मा पर विश्वास

एक राजा के मंत्री का यह विश्वास था कि परमात्मा जो कुछ करता है, अच्छा करता है। एक दिन राजा शिकार खेलने जंगल में गया। शेर पर आक्रमण करते समय उसकी एक अंगुली कट गई। राजा ने मंत्री से कहा -"देखो, मेरी अंगुली तलवार से कट गई।" उसे आशा थी कि मंत्री उससे सहानुभूति प्रकट करेगा। लेकिन मंत्री बोला कि परमात्मा जो कुछ करता है, अच्छा करता है। मंत्री का यह उत्तर सुनकर राजा बहुत क्रुद्ध हुआ और उसे उसी समय राज्य से निकल जाने की आज्ञा दी। मंत्री यह आज्ञा सुनकर भी बोला कि परमात्मा जो कुछ करता है, अच्छा करता है।

दैवयोग से शिकार खेलते हुए राजा को बहुत देर हो गई। वह रास्ता भी भूल गया। बहुत रात होने पर वह एक दरख्त के ऊपर बैठ गया। अभी उसे बैठे हुए थोड़ा ही समय हुआ था कि चार सिपाहियों ने आकर उसे पकड़ लिया। सिपाहियों से उसने बहुत कुछ कहा सुना, अनुनय विनय की, लेकिन वे न माने। बात यह थी कि एक दूसरे राजा ने देवी के आगे किसी मनुष्य की बलि चढ़ानी थी। उसने सिपाहियों से एक आदमी को पकड़ लाने के लिए कहा। सिपाही ढूढते ढूढते यहां पहुँच गये, जहां राजा बैठा हुआ था। वे राजा को पकड़ कर ले गये।

देवी के मन्दिर में ले जाने से पहले उसे पण्डितों के सामने लाया गया। पण्डितों ने उसकी कटी हुई अंगुली देखकर कहा कि यह तो बलि चढ़ाने योग्य नहीं है। जिसका कोई अंग कटा हुआ

न हो, उसी की बलि देनी चाहिये। तब सिपाहियों ने उस राजा को छोड़ दिया।

अब राजा को अपने मंत्री की बात याद आई कि वह ठीक कहता था। यदि मेरी अँगुली न कटती तो मुझे आज मरना पड़ता। जब वह अपने राज्य में पहुंचा, तो उसने मंत्री को फिर बुलवा भेजा। मंत्री ने आकर कहा कि यदि आप मुझे न निकालते, तो मुझे मन्दिर में बलि होना पड़ता, क्योंकि मेरे सब अंग पूर्ण थे। इसलिए आप का मुझे निर्वासन की आज्ञा देना भी मेरे हित में अच्छा हुआ। तब से राजा भी परमात्मा की कृपा पर विश्वास करने लगा।

---

९ महात्मा बुद्ध और एक बुढ़िया

एक बालक बाग़ में खेल रहा था। दौड़ते दौड़ते उसका पांव एक काले सांप पर पड़ गया। इससे क्रुद्ध होकर उसने उसे काट खाया। बालक तत्क्षण मर गया। कुछ समय बाद उसकी माता वहां पहुँची और अपने बालक को मरा हुआ देख कर बहुत रोने लगी। वह उसे लेकर गांव के हर एक वैद्य के पास पहुँची कि उसे कोई फिर जीवनदान दे दे। लेकिन सबने इसमें अपनी असमर्थता प्रकट की। एक आदमी ने उसे बताया कि म० बुद्ध यहां आये हुए हैं। शायद वे इसे जीवनदान दे सकें।

वह बालक को लिए महात्मा बुद्ध के पास पहुँची और उनसे विनीत शब्दों में अपनी प्रार्थना की। म० बुद्ध ने उसे बहुत सम-

झाया कि एक बार मरा हुआ प्राणी फिर जीवित नहीं हो सकता। लेकिन वह न मानी और बार बार प्रार्थना करती रही। तब म० बुद्ध ने उसे कहा कि जाओ, इस कटोरे में किसी घर से चावल मांग लाओ। लेकिन याद रखना कि किसी ऐसे घर से चावल लाना, जिस में कोई मरा न हो।

वह बहुत आशा और उत्साह से कटोरा लेकर चावल मांगने गयी। वह एक घर में गयी और चावल मांगा। उस घर की मालकिन चावल देने लगी, लेकिन उस स्त्री ने पूछा कि तुम्हारे घर में कोई मरा तो नहीं है? घर की मालकिन के 'हां' करने पर वह दूसरे घर गयी। वहां भी उसे मालूम हुआ कि यहां कुछ समय पहले एक प्राणी का देहान्त हो चुका है। तीसरे, चौथे और पांचवें घर से भी उसे यही उत्तर मिला। मतलब यह कि उसे एक भी घर ऐसा नहीं मिला, जिसमें किसी प्राणी की मृत्यु न हुई हो। फलतः वह चावल न ला सकी। लेकिन इससे उसे यह ज्ञान भी हो गया कि संसार अनित्य है, उसमें कोई अमर नहीं है। इससे उसे पूर्ण शान्ति मिली।

१० बोपदेव

बोपदेव संस्कृत व्याकरण के एक भारी विद्वान हो गये हैं। जब वे पढ़ने के लिए पाठशाला में प्रविष्ट हुए, तब उनका

दिल पढ़ने में बिलकुल न लगता था। जब वे व्याकरण पढ़ने बैठते थे, तब उन्हें व्याकरण याद करने में बड़ी कठिनता होती थी। वे अपना पाठ बार बार याद करते थे, लेकिन उन्हें कुछ याद न होता था। वर्षों तक परिश्रम करनेपर भी बोपदेव को कुछ न आया। उनके साथी बहुत आगे बढ़ गये। उन्हें अपने से भी निराशा हो गई।

वे एक दिन निराश होकर घर से निकल गये और बहुत दिनों तक इधर उधर घूमते रहे। एक दिन वे एक तालाब के निकट पहुँचे। वहां पत्थर का एक घाट बना हुआ था। उस सरोवर में एक स्त्री स्नान कर रही थी और उसने अपना घड़ा पानी से भर कर घाट पर रखा हुआ था। स्नान के बाद जब वह घड़ा लेकर चली गई, तब बोपदेव ने देखा कि जहां घढ़ा रखा था, वहां गढ़ा पड़ गया है। बोपदेव ने सोचा कि जब पत्थर जैसी कड़ी चीज़ भी मिट्टी के घड़े की रगड़ से घिस जाती है,तब क्या मेरी मन्दबुद्धि निरन्तर परिश्रम करने से अच्छी नहीं हो सकती?

इस विचार ने उसके हृदय में नवीन आशा का संचार कर दिया और उसने फिर पढ़ने का निश्चय कर लिया। वह गुरुजी के पास पहुँचा और सारा वृत्तान्त सुनाकर विद्योपार्जन की इच्छा प्रकट की। गुरु ने अत्यन्त प्रसन्न होकर उसे पढ़ाना शुरु किया। अब तो बोपदेव ने पढ़ने में ऐसा दिल लगाया और ऐसा परिश्रम किया कि कुछ ही समय में वे व्याकरण के बड़े भारी पण्डित हो गये।

१२ भागम्मा और हैदर

दक्षिण भारत में मैसूर नाम की एक रियासत है। इसके एक गांव देवनाली में भागम्मा नाम की एक महिला रहती थी। उसके पास हैदर नाम का एक नौकर रहता था। वह उसके लड़कों को खिलाया करता था। उसका स्वभाव बहुत अच्छा था। भागम्मा भी उससे बहुत सन्तुष्ट रहती थी, उसे अपने पुत्र की भांति प्यार करती थी और उसके सुख दुख का बहुत ख्याल रखती थी।

बड़े होने पर हैदर सेना में प्रविष्ट हो गया। वह बहुत समझदार, मेहनती और बहादुर था। कुछ ही सालोंमें वह उन्नति करते करते सेनापति हो गया। सेनापत्ति होने पर उसका प्रभाव तथा शक्ति और भी बढ़ गयी अन्त में वह मैसूर का बादशाह बन गया।

बादशाह होनेपर भी वह भागम्मा को, जिसने उसे बालकपनमें पुत्र की भांति रखा था, नहीं भूला। एक दिन कई ऊँटों पर अशर्फियां, सूती और रेशमी कपड़े व गहने लदवाकर एक सजे हुए हाथी पर बैठकर वह देवनाली की ओर रवाना हुआ। उसके साथ बहुत से रईस और सेनापति भी थे, लेकिन किसी को पता न था कि बादशाह इस ठाठ बाठ से कहां जा रहा है?

धीरे धीरे हैदर की सवारी भागम्मा के दरवाज़े पर जा पहुँची। हैदर ने नीचे उतर कर द्वार खटखटाया। भागम्मा फ़ौरन बाहर निकल आई। परन्तु वह हैदर को पहचान न सकी। जब वह उसके पास था, तब तो छोटा सा ग़रीब बालक था और अब

वह बहादुराना शाही ठाठ में था। बिचारी भय से कांपने लगी। यह देखकर हैदर बोला—"मां, मैं तुम्हारा वही हैदर हूँ, जिसे तुमने उस समय पाला था, जब मुझे कोई पूछता न था। आप ही की कृपा से मैं यह दिन देख सका हूँ। आपका उपकार मैं कभी न भूलूँगा। थोड़ी बहुत सेवा की इच्छा थी, सो मेरी कमाई में से कुछ स्वीकार कीजिये।" यह कहकर हैदर ने सब धन और कपड़े गहने भागम्मा के सामने रख दिये।

भागम्मा ने भी उसे खूब आशीर्वाद दिया और कहा, "बेटा परमात्मा तुझे चिरायु करें।"

अभ्यास (३७)

नीचे कुछ संकेत दिये जाते हैं। इनके आधार पर कहानी लिखो:—

भामाशाह का देशप्रेम

१. महाराणा प्रतापसिंह और अकबर के युद्ध की चर्चा

२. महाराणा प्रताप की अपना देश मेवाड़ छोड़ने की तय्यारी

३. भामाशाह का प्रताप के पास आना

४. लाखों अशर्फियां प्रताप को सेना के लिए देना।

५. प्रताप का फिर अकबर से लड़ना

बन्दर और मगर

१. एक बन्दर और मगर में दोस्ती। बन्दर का उसे रोज़ मीठे फल देना।

२. मगरी का भी मीठे फल खाना और बन्दर का मीठा कलेजा खाने को इच्छा करना।

३. मगर का बन्दर को धोखे से लेजाना।

४. बन्दर को धोखे का मालूम होना और घर से कलेजा लाने का बहाना करके उसे घर वापस ले जाने के लिए कहना।

५. मगर का मान जाना और बन्दर का अपने घर पहुँचना।

६. मगर का पुनः चलने के लिए कहना और बन्दर का धिक्कारना।

श्रवण कुमार

१. श्रवण का अपने बूढ़े व अन्धे माता पिता की सेवा करना

२. एक दिन पानी लेने नदी पर जाना और घड़ा भरना.

३. पानी भरने की आवाज़ सुनकर शिकार खेलते हुए राजा दशरथ को पानी में पशु का भ्रम होना

४. दशरथ का तीर छोड़ना और श्रवण का घायल होना

५. दशरथ का वहां पहुँचना और श्रवण को देखना और उसे उसके माता पिता के पास लेजाना

६. माता पिता के सामने उसकी मृत्यु। माता पिता का भी वियोग में मरना और दशरथ को शाप देना कि तुम्हारी मृत्यु भी पुत्रवियोग से होगी।

संकेत बनाना

जिस तरह संकेतों की सहायता से कहानियां लिखी जाती हैं, उसी तरह कहानियों से संकेत भी लिखे जाते हैं।

अभ्यास (३८)

नीचे दो कहानियां दी जाती हैं। उन्हें पढ़कर उनके संकेत बनाओ :—

दो स्त्रियां और बच्चा

एकबार एक स्त्री ने अपनी पड़ोसिन के छोटे बच्चे को चुरा कर अपने घर में छिपा लिया। बच्चे की मां ने अपने लड़के को बहुत खोजा, पर वह कहीं न मिला। अचानक पड़ोसिन के घरमें उसका रोना सुनकर उसने जान लिया कि मेरे बच्चे को इसने छिपाया है। तब वह उसके घर गई और अपना बच्चा मांगा, लेकिन उसने यह कहकर बालक देने से इन्कार कर दिया कि वह बच्चा मेरा है, तुम्हारा नहीं।

इस पर उस स्त्री ने अदालत में जाकर फ़र्याद की। वहां से उस स्त्री को भी बुलाया गया। दोनों तरफ़ की बातें सुनकर भी मजिस्ट्रेट कोई निर्णय न कर सका। अन्त में उसने सत्य का पता लगाने के लिये कहा कि बच्चे के दो टुकड़े कर दिये जावें और एक एक दोनों स्त्रियों को दे दिया जाय। यह सुनकर चोर स्त्री तो

कुछ न बोली, लेकिन उसकी असली मां आंखों में आंसू भर कर बोली कि बच्चा मुझे न चाहिए। इसी के पास रहने दीजिये। मैं अपने बालक की मृत्यु नहीं देख सकती।

मजिस्ट्रेट को सत्य मालूम हो गया और उसने बच्चा उसे ही दे दिया।

ऋषि बाल्मीकि

च्यवन ऋषि के रत्नाकर नाम का एक पुत्र था। खेलने कूदने और लड़ने झगड़ने में उसका दिल खूब लगता था। वह कुसंगति में पड़कर डाके भी डालने लगा। कुछ ही दिनों में वह मशहूर डाकू बन गया। सब लोग उसके डरसे कांपने लगे। जहां रत्नाकर का डेरा था, उस रास्ते से सबका आना जाना भी बन्द हो गया।

एक दिन उस रास्ते से ब्रह्मा जी और नारद जी निकले। रत्नाकर उन्हें धमका कर बोला कि "तुम्हारे पास जो कुछ हो, मेरे सामने रखदो, अन्यथा मृत्यु का सामना करने के लिए तय्यार हो जाओ।"

ब्रह्मा और नारद बोले—भाई, हमतो संन्यासी हैं। हमारे पास क्या रखा है, पर यह तो बताओ तुम यह पाप क्यों करते हो?

रत्नाकर ने यह उत्तर दिया कि यदि यह काम न करूँ, तो घर के लोगों को क्या खिलाऊँ? ब्रह्मा ने कहा—वे लोग तुम्हारे इस पाप में भी सम्मिलित होंगे या नहीं?

रत्नाकर को कोई उत्तर न सूझा। वह उन्हें वहीं वृक्ष से बांध कर घर गया और अपनी पत्नी व बच्चों से पूछने लगा

कि तुम्हारे पीछे मैं डाके डालता हूँ, हत्या करता हूं। बोला, तुम मेरे इस पाप में शामिल भी होगे या नहीं ? उन्हों ने उत्तर दिया—हमें तुम्हारे पाप से क्या मतलब ? रत्नाकर की इससे आंखें खुल गईं।

वह एक दम दौड़ता दौड़ता ब्रह्मा और नारदजी के पास पहुँचा और उन्हें खोल कर उनके पैरों पर गिर पड़ा और बोला "महाराज, मैं बड़ा पापी हूं! अब कैसे इसका प्रायश्चित्त करूँ ?" ब्रह्मा बोले—"रत्नाकर, घबराओ नहीं। प्रभु का भजन करो।"

यह कर ब्रह्मा और नारद चले गये और रत्नाकर वहीं बैठ प्रभु का भजन करने लगा। परमात्मा के भजन से वह बिलकुल बदल गया। सब गन्दी आदतें दूर गईं। वह ऋषि बन गया और बाल्मीकि के नाम से प्रसिद्ध हुआ। रामायण नामक महा-काव्य लिख कर बाल्मीकि अमर हो गया है।

इन कथाओं के संकेत बताते हुए यह ख़्याल रखना चाहिये कि कोई महत्त्वपूर्ण घटना न छूटने पावे और न उस का क्रम ही टूट जाय।

(इसी तरह विद्यार्थियों को कहानी सुनाकर किसी विद्यार्थी से कहना चाहिये कि वह उसके आधार पर प्रश्न तैयार कर अन्य विद्यार्थियों से पूछे। इस के लिए अध्यापक को सिर्फ़ एक आध उदाहरण पर ही संतोष न कर लेना चाहिये। वस्तुतः अभ्यास से ही विद्यार्थी विषय को हृदयंगम करता है। पुस्तक में तो केवल कुछ उदाहरण अध्यापक को दिशा बताने के लिए ही दिये जाते हैं।)

संक्षिप्त लेखन

(संकेत और प्रश्न के अतिरिक्त विद्यार्थियों को एक और महत्वपूर्ण अभ्यास भी कराना चाहिये और वह है कहानी संक्षिप्त करने का)

कहानी संक्षिप्त करते हुए इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि कोई आवश्यक बात न छूटे और न कोई सिलसिला टूटने पावे। यहां पिछली दी हुई कहानियों में से दो एक कहानियों के संक्षेप दिये जाते हैं।

बोपदेव (पृ० ७३)

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान बोपदेव बचपन में कुछ न पढ़ सकते थे। वे कितनी भी मेहनत करते, उन्हें पाठ याद न होता था। एक दिन निराश होकर वे पढ़ना छोड़ कर घूमने चल दिये। घूमते घूमते वे एक तालाब पर पहुँचे। वहां उन्होंने एक पत्थर के घाट पर कई गड्ढे देखे, जो लगातार घड़े रखने से बन गये थे। यह देखकर उनके हृदय में ख़याल आया कि पत्थर पर मिट्टी का घड़ा बार बार रखा जाने से गड्ढा कर सकता है, तो क्या मैं इससे भी गया बीता हूँ? इसके बाद उन्होंने पढ़ने में खूब दिल लगाया और कुछ सालों में वे प्रकाण्ड विद्वान बन गये।

भागम्मा और हैदर (पृ० ७५)

मैसूर राज्य के अन्तर्गत देवनाली ग्राम में रहने वाली भागम्मा नामक महिला के एक नौकर का नाम हैदर था। वह

बहुत मेहनती और ईमानदार था। भागम्मा भी उसे खूब प्यार करती थी। बड़ा होकर हैदर फ़ौज में भरती हो गया। वहां भी अपनी बहादुरी, बुद्धिमत्ता और चतुरता से बढ़ते बढ़ते वह मैसूर का राजा हो गया। एक दिन वह बहुत सी अशर्फियां, कपड़े लत्ते और गहने लेकर भागम्मा के घर पहुँचा। वह अपने घर राजा और अमीर उमरावों को देख कर डर गया। लेकिन हैदर ने उसे अपना परिचय दिया कि मैं तुम्हारे पास नौकर था। तुम यह तुच्छ भेंट स्वीकार करो। भागम्मा हैदर की उदारहृदयता देख कर बहुत प्रसन्न हुई और उसे आशीर्वाद देने लगी।

अभ्यास (३६)

पीछे दी हुई निम्नलिखित कहानियों का संक्षेप करो:—

१. झूठा गडरिया (पृ० ५८)

२. परमात्मा पर विश्वास (पृ० ७१)

३. म० बुद्ध और एक बुढ़िया (पृ० ८२)

४. ऋषि बाल्मीकि (पृ० ७६)

निबंध-रचना

लिखने की तैयारी

(विद्यार्थियों को निबंधरचना का अभ्यास कराते हुए यदि निम्न लिखित क्रम का अनुसरण किया जाय, तो वे विषय को बहुत अच्छी तरह से समझ लेंगे और निबंध लिखना उनके लिए सरल हो जायगा।

१. विद्यार्थियों को एक चित्र दिखा कर उसके सम्बन्ध में प्रश्न पूछें। ऊंट का चित्र दिखाकर अध्यापक पूछ सकता है—ऊंट की गर्दन इतनी लम्बी क्यों होती है? उसके पैर ऐसे फैले हुए क्यों होते हैं? उसकी पीठ पर लोग कैसे बैठते हैं? ऊंट मनुष्य के किस काम आता है? रेगिस्तान में वह कैसे गुज़ारा करता है? वह कितनी दूर तक और कब तक चल सकता है? उसका रंग कैसा होता है? क्या चित्र से और भी कुछ प्रतीत होता है? क्या तुम ऊंट के विषय में और कुछ जानते हो? (अच्छा हो कि चित्र रंगीन लिया जाय) इन प्रश्नों का विद्यार्थी अलग अलग उत्तर देंगे। उन उत्तरों को श्यामपट्ट पर इस क्रम से लिखा जाय कि वह चित्र का संक्षिप्त वर्णन हो।

२. कक्षा में किसी परिचित विषय की चर्चा की जाय और उस पर विविध प्रश्न कर विद्यार्थियों से उनका उत्तर मांगा जाय। विद्यार्थियों को इस बात के लिए भी प्रेरित किया जाय कि वे स्वयं उस विषय पर प्रश्न उठावें और एक दूसरे से उनका उत्तर लें। इससे विद्यार्थियों की विचार और तर्कशक्ति का विकास होगा। इस चर्चा से बहुत सी

बातें विद्यार्थियों को मालूम हो जावेंगी। उन्हें विद्यार्थी अपनी कापी में नोट करलें और फिर उन्हें क्रम देकर उनको निबन्ध की शकल दें।

३. अध्यापक विद्यार्थियों को एक निबंध पढ़ कर सुनावें और उनसे संकेत बनाने के लिये कहें। कहानी के प्रकरण में विद्यार्थी संकेत बनाना सीख गये हैं। वे प्रश्न उठाकर संक्षिप्त उत्तरों के रूप में संकेत तैयार करें।

४. किसी निबंध के संकेत बनाकर उनपर अध्यापक विद्यार्थियों से खूब चर्चा करें और उनसे उसी चर्चा के आधार पर लेख लिखने के लिए कहें। क्रम का अवश्य खयाल रक्खा जाय।

५ इस पुस्तक में दिये हुए संकेतों पर से विद्यार्थी स्वयं निबंध लिखें। वे अपने हृदय में ही तर्क वितर्क करें। श्रेणी में चर्चा न हो।

६. कक्षा को निबंध का विषय बता दिया जाय। इस पर श्रेणी में दो दिन तक चर्चा होती रहे और तब विद्यार्थी उस विषय पर निबंध लिखें।

इस क्रम का अनुकरण करने पर विद्यार्थियों को निबंध लिखना न तो अरोचक जान पड़ेगा और न कठिन।)

कुछ निर्देश

प्यारे बालको,

निबंध लिखने से पूर्व यदि तुम नीचे दी गई बातों का ध्यान रखोगे, तो तुम्हें लिखने में कोई कठिनता न होगी।

लेख लिखने से पहलेः—

रचना का पहला नियम यह है कि क़लम उठाने से पूर्व दस पन्द्रह मिनट सोच लो कि क्या लिखना है और किस क्रम से लिखना है। तुम उस विषय पर जो कुछ भी जानते हो, उसे संकेतों के रूप में कापी पर नोट कर लो। संकेत या रूपरेखा तैयार हो जाने पर लिखना बहुत सहल हो जायगा।

लेख लिखते समयः—

लेख लिखते हुए अपनी भाषा का प्रयोग करो। कठिन शब्दों का प्रयोग मत करो। तुम्हारा लेख पढ़ने वाला यह समझे कि वह तुम्हारी बात सुन रहा है; पढ़ नहीं रहा। बोल चाल हमेशा सरल शब्दों में की जाती है। यह मत समझो कि बड़े बड़े और कठिन शब्दों में ही बल होता है। सीधे सादे, लेकिन उचित शब्द अधिक प्रभाव रखते हैं।

वाक्य भी छोटे छोटे हों। लम्बे लम्बे वाक्यों के अर्थ सुगमता से नहीं समझे जाते। विविध बातों को विविध परिच्छेदों में लिखो। एक ही परिच्छेद में समाप्त करना अनुचित है। क्रम का बहुत ध्यान रक्खो। संकेतों को क्रम देकर विस्तृत रूप दो। क्रम-रहित निबन्ध सुन्दर नहीं लगता।

लेख लिखने के बादः—

जब लेख समाप्त कर चुको, तो एक बार, दो बार लेख पढ़ जाओ। व्याकरण की कोई भूल रह गई है, तो उसे ठीक कर लो। परिच्छेद कहीं नहीं हुआ है या अशुद्ध हुआ है, विराम

कहीं नहीं लगा है या अशुद्ध लगा है, उसे ठीक कर लो। शब्दों के ठीक प्रयोग भी देख लो।

हाथी

एक श्रेणी में अध्यापक के कथनानुसार हाथी की चर्चा हुई। अनेक विद्यार्थियों ने हाथी के बारे में बहुत सी बातें कीं। वे सब बातें संक्षेप से निम्नलिखित हैं:—

१. सब पशुओं से बड़ा। २. शेर के शिकार में प्रयोग। ३. बदले की तबीयत—दर्जी और हाथी की कथा। ४. इसकी सूंड, दांत, बड़े बड़े कान, छोटी पूंछ और आंखें। ५. भारत और अफ्रीका में झुंडों में मिलता है। ६. बहुत ताक़तवर। ७. भारत में शाही जलूस निकालने के भी काम आता है। ८. कैसे पकड़ा और पाला जाता है। ९. हाथी दांत—कई काम। १०. हौदा और महावत। ११. हाथी और चार अंधों की कथा। १२. पहले समय में लड़ाई में प्रयुक्त होते थे। १३. इसकी बुद्धिमत्ता। १४. घास और पत्ते इसका भोजन। १५. भारी बोझ उठा सकता है। १६. नकली हाथी और खड्डे।

इस तरह हाथी के बारे में हमें बहुत कुछ ज्ञात हो गया। लेकिन यह सामग्री किसी निश्चित क्रम में नहीं है। जिस तरह बिखरी हुई ईंटों, चूने और लकड़ी को मकान नहीं कहते, मकान बनाने के लिए इन सब वस्तुओं को एक निश्चित क्रम में लाकर जोड़ना पड़ता है, इसी तरह इस सामग्री का भी क्रम निश्चित

करके निबंधरचना की जानी चाहिये। उपर्युक्त सामग्री की परीक्षा करने से हमें ज्ञात होगा कि इन सब बातों को हम इस तरह क्रम में रख सकते हैं।

नं० १, ४, ६ और १३ में हाथी सम्बन्धी विविध बातों का वर्णन है।

२, ७ (१० के साथ), ६, १२, और १५ में यह बताया गया है कि हाथी किस किस तरह काम आता है ?

८, ६ और १६ हाथी के शिकार के सम्बन्ध में हैं।

५ और १४ में हाथी के निवास और भोजन का जिक्र है।

हमने ३, और ११ के सिवा हर एक बात का वर्गीकरण कर दिया है। नं० ११ (हाथी और चार अंधे)× का हाथी से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है। यह कथा तो यह बताने के लिए है कि सत्य के अनेक पहलू होते हैं। नं० ३ हाथी के स्वभाव से सम्बन्ध तो रखती है, लेकिन इससे निबंध बहुत लम्बा हो जायगा। इस वर्गीकरण के बाद हम हाथी पर निबंध लिखने से पहले सब बातों का वर्गीकरण करते हुए निम्नलिखित रूपरेखा तैयार कर सकते हैं:—

× चार अंधे थे। एक ने हाथी की टांग पकड़ी और कहा हाथी की शक्ल वृक्ष के तने की है। एक ने कान पकड़ कर कहा कि हाथी सूप की तरह होता है। तीसरे ने पूंछ को हाथ लगाकर कहा कि हाथी झाड़ू की तरह होता है और चौथे ने पीठ का स्पर्श कर तख्ते की उपमा दी।

रूपरेखा या संकेत

१. वर्णन (नं० १,४,६) बहुत बड़ा और शक्तिशाली *सूंड (व इसके प्रयोग), बड़े बड़े कान,* छोटी आंखें, छोटी पूंछ और दांत।

२. निवास और भोजन (नं० ५ और १४)। अफ्रीका और भारत में मिलता है, झुंडों में रहता है, जंगली वृक्षों के पत्तों व घास पर गुज़ारा।

३. मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी (शक्ति और बुद्धिमत्ता के कारण—नं० ६ और १३)

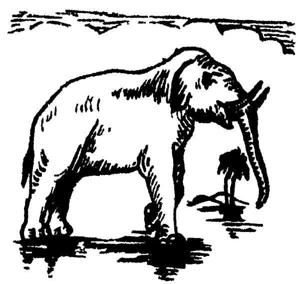
४. विविध उपयोग:—

क—बहुत भार खींचता है (१५) ख—शेर के शिकार में उपयोग (२) हौदा और महावत (१०) ग—प्राचीन काल में युद्धों में उपयोग (१२) घ—शाही जलूसों में प्रयोग (७)

५. हाथी का शिकार—क्यों और कैसे ? क—हाथी दांत के लिए (६) पालने के लिए जीता ही पकड़ा जाता है। ख—नकली हाथी खड्डों में (१६)

निबन्ध

भूमि पर मिलने वाले प्राणियों में हाथी सब से बड़ा पशु है। यह अपनी ताक़त और बुद्धिमत्ता के लिये प्रसिद्ध है। इसका सिर बहुत बड़ा होता है, लेकिन इसकी आंखें बहुत छोटी होती हैं। लम्बे लम्बे सूप जैसे फैले हुए कान, बहुत बड़ा शरीर, वृक्ष के तने सी मोटी टांगे,



निकले हुए लम्बे लम्बे दो दांत; लेकिन इनके मुकाबले में छोटी सी पूंछ, यह इसकी आकृति की विशेषताएँ हैं। परन्तु इसकी सबसे बड़ी विशेषता है इसकी भूमि तक लटकने वाली सूंड। यह सूंड नाक और हाथ दोनों का काम देती है। इस सूंड से जहां वह भारी से भारी चीज़ उठा सकता है, वहां वह सुई जैसी सूक्ष्म वस्तु को भी पकड़ सकता है। वृक्षों से पत्ते भी वह सूंड से तोड़ता है। पानी भी वह इसी में भर कर मुंह में डालता है। वह सूंड से अपने सारे शरीर पर पानी उडेल कर नहा भी लेता है।

हाथी भारत, बर्मा और अफ्रीका में पाये जाते हैं। हाथी झुंड बांध कर रहते हैं। वे जंगलों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं। कभी एक जगह टिक कर नहीं रहते। घास, पत्ते, और फल आदि उनका भोजन है। गन्ने को बड़े

चाव से खाते हैं। सब्जी, रोटी आदि भी मिलने पर खा लेते हैं।

हाथी बहुत बुद्धिमान प्राणी है। बुद्धि और ताक़त दोनों का सम्मिश्रण हाथी में होने से पाले जाने पर यह मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। हाथी बहुत भारी भारी बोझा उठा या खींच सकते हैं। रणक्षेत्र में जिन तोपों को ले जाने के लिए बीसियों घोड़ों की आवश्यकता होती है, उन्हें यह अकेला ही खींच सकता है।

शेर के शिकार के लिए भी इसका प्रयोग होता है। शिकारी हाथी की पीठ पर हौदे में बेखटके सारे जंगल में घूमता है और जहां शेर मिले, उसे गोली से मार देता है। इतने ऊँचे होने पर उसे स्वयं शेर से आक्रमण का भय बहुत कम रहता है।

प्राचीन काल में भारत में हाथी युद्ध में भी बहुत काम आता था। हाथियों की एक संगठित सेना प्रत्येक राजा के पास होती थी। आज कल भी हाथी पर बैठ कर शाही जलूस निकाले जाते हैं। इससे शाही जलूस की शान बढ जाती है।

हाथीदांत और हड्डी के लिए भी हाथी का शिकार होता है। चाकू के दस्ते, कंघी, बटन, छल्ले, चूड़ियां तथा अन्य उपयोगी वस्तुएँ दांत या हड्डी से बनाई जाती है।

हाथी को जीवित पकड़ना बहुत कठिन है। क्रुद्ध हाथी बहुत भयंकर और ख़तरनाक होता है। इसलिए हाथी को पकड़नेके लिये जंगलों में बड़े बड़े गढ़े खोदे जाते हैं और उन्हें घास से ढक दिया

जाता है। कुछ आदमी उसे खदेड़कर उस गढ़े में ले आने का प्रयत्न करते हैं। पालतू हथिनियों से भी यह काम लिया जाता है। पालतू हथिनी को देखकर हाथी उस के पीछे भागता है और हथिनी जानबूझ कर गढ़े के पास गुज़रती है। हाथी उसमें गिर पड़ता है। वहां उसे कई दिन तक भोजन नहीं मिलता। तब उसे आदमी के वश में होने में देर नहीं लगती।

आवश्यक निर्देश

साधारणतः किसी पशु या पक्षी पर निबंध लिखना हो, तो निम्नलिखित बातों का अवश्य विचार करना चाहिये:—

१. शरीर और उसकी रचना। शरीर के विभिन्न अंगों का वर्णन।

२. कहां पाया जाता है? कहां रहता है?

३. क्या खाता पीता है?

४. स्वभाव, गुण, विचित्रता।

५. उससे मनुष्य को क्या लाभ होते हैं और क्या हानियां होती हैं?

घोड़ा

१. आकृति और शरीर रचना—चौपाया, सुन्दर गठीला शरीर—छोटे छोटे चमकीले बाल—कान और आंखें तेज़—

सूंघने की शक्ति भी प्रबल—टांगें बलिष्ठ और ख़ूब तेज़ दौड़ सकने वालीं—खुर न फटे हुए।

२. संसार के सब भागों में। अरब का घोड़ा उत्तम माना जाता है—घास, अनाज भूसा आदि भोजन

३ स्वभाव मिलनसार—स्मरणशक्ति बहुत प्रबल—स्वामी-भक्ति और बुद्धिमत्ता की अनेक कहानियां।

४. जीवित घोड़ा सवारी के लिए—कहीं कहीं हल भी। युद्ध में सहायता—सरकस—घुड़दौड़—मरने के बाद भी प्रत्येक भाग काम में आता है—आजकल मोटरें घोड़ोंका स्थान लेरही हैं।

घोड़ा मनुष्य के लिए अत्यन्त उपयोगी प्राणी है। यह देखने में बड़ा सुन्दर होता है। इसका शरीर दृढ़ और गठीला होता है। शरीर पर छोटे छोटे चमकीले बाल होते हैं। इसकी गरदन कुछ गोलाई लिये हुए बड़ी सुन्दर होती है। घोड़े के कान तेज़ और आंखें बड़ी तथा दृष्टि प्रबल होती है। सूंघने की शक्ति भी तेज़ होती है। इसकी टांगें दृढ़ और बलिष्ट होती हैं। इनसे वह मीलों ख़ूब तेज़ी के साथ भाग सकता है। इसके पैर गौ, बकरी की तरह फटे हुए नहीं होते। इसके पैर ख़ूब सख़्त होते हैं, परन्तु इसे बहुत चलना पड़ता है, इसलिए पैरों के नीचे नाल लगाते हैं,

घोड़ा संसार के प्रायः सब भागों में पाया जाता है। अरब के घोड़े अपने सौन्दर्य व शरीर के लिए प्रसिद्ध है।

यह केवल घास, ज़ौ, चने आदि का भूसा तथा चना, जौ और मोठ आदि का दाना खाता है।

घोड़ा बहुत मिलनसार होता है। जंगल के घोड़े गोल बांध कर रहते हैं। जंगली घोड़ा बहुत भयंकर तथा हिंस्र पशु होता है, लेकिन पालतू घोड़ा बहुत सीधा और स्नेहशील होता है। इसकी स्मरणशक्ति बहुत अच्छी होती है। यह अपने मालिक व अपनी रहने की जगह को कभी नहीं भूलता। इसकी स्वामि-भक्ति मशहूर है। अपने स्वामी को बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डालने की कथाएं बहुत प्रसिद्ध हैं। महाराणा प्रताप के चेतक घोड़े ने अपने स्वामी को बचाने के लिए अपने प्राण तक दे दिये थे।

घोड़ा वस्तुतः मनुष्य का बहुत बड़ा सहायक होता है। यह सवारी के काम में आता है, गाड़ी और इक्के में जोता जाता है। कहीं कहीं घोड़ों से हल भी चलाये जाते हैं। युद्ध में सैनिकों के लिए यह बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

सरकस वाले इसे बहुत सी खेलें सिखाकर खेल कराते हैं। घुड़दौड़ बहुत मशहूर खेल है और प्रायः प्रत्येक देश में खेला जाता है। घुड़दौड़ में जीतने वालों को भारी भारी इनाम दिये जाते हैं।

मृत्यु के पश्चात भी इसका प्रत्येक भाग काम में आता है। बालों को गद्दी तकियों में भरते हैं। बालों से ब्रुश भी बनाये जाते हैं। खाल से जूतों के तले और घोड़ों का सामान बनता है। रगों और पट्ठों से सरेश तथा खुरों से बटन आदि बनाये जाते हैं।

यह दुःख की बात है कि आजकल मोटर गाड़ियां घोड़ों का स्थान ले रही हैं और लोग अच्छा घोड़ा पालने से उदासीन हो रहे हैं।

गाय

(१) घरेलू चौपाया जानवर—हिन्दू इसे मां के रूप में देखते हैं।

(२) शरीर रचना—दो मुड़े हुए सींग, दो कान, लम्बी पूंछ ऊपरी जबड़े में दांत नहीं—थन—विविध रंग

(३) प्रायः प्रत्येक देश में।

(४) घास, भूसा, फल, अनाज भोजन।

(५) खाने का तरीक़ा जुगाली

(६) बहुत सीधी सादी

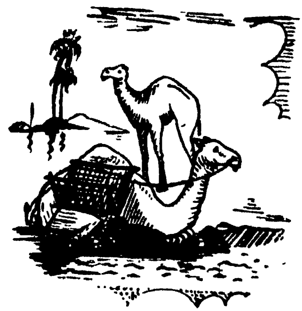
(७) अत्यन्त उपयोगी पशु—

दूध देती है, जिसे पिया जाता है और जिससे खाद्य वस्तुएँ तैयार की जाती हैं; बैल हल, छकड़े और कुएँ चलाता; उपले खाद व ईंधन का काम देते हैं।

सींग हड्डी चरबी और चमड़े की भी कई चीज़ें।

ऊंट

(१) ऊंचा बेडौल, बड़े बड़े दांत, लम्बी गरदन, कोहान, लम्बी लम्बी टांगें, गद्दीदार पैर रेत में चल सकने के लिए, गरदन में पानी का स्थान।



(२) एशिया और अफ्रीका के रेगिस्तानों में पाया जाता है।

(३) घास, पत्ते, झाड़ी झंखाड़ सब खाता है।

(४) इसका स्वभाव—बदला लेने की प्रवृत्ति—क्रोध, तेज़ चाल।

(५) बहुत उपयोगी—भार उठाना—ठेले व चक्की चलाना, रेगिस्तान में चलने वाला—मरुस्थल का जहाज़—पहले समय व्यापार का मुख्य साधन—अरब देश में ऊंट का महत्त्व—दूध पीते है। चमड़े के तम्बू तथा अन्य वस्तुएँ—बालों से ब्रुश।

बकरी

(१) आकार—भेड़ से कुछ बड़ी, टांगें मज़बूत, खुर फटा, दो छोटे छोटे घूमे हुए सींग, दाढ़ी, छोटी पूंछ, देह पर बाल। रंग काला, कोई २ सफ़ेद और लाल भी।

(२) निवास स्थान प्राय: सब जगह—घास वाली पहाड़ियों पर अधिक।

(३) भोजन—घास, भूसा, दाना, पत्ते, कांटेदार झाड़ियां भी

(४) स्वभाव और गुण—सीधा, डरपोक, इकट्ठे झुंड में रहना।

(५) लाभ—दूध देती है—खाल की मशक—मेंगनी उत्तम खाद—बहुत से लोग मांस खाते हैं।

बन्दर

बन्दर की आकृति मनुष्य के समान—गोल सिर—चार टांगें उन्हीं में हाथ—अंगुलियां और नाखून मनुष्य की भांति—शरीर पर बड़े बड़े बाल—लम्बी पूंछ।

२. एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अफ्रीका में पाया जाता है—जंगलों में वृक्षों की शाखाओं पर निवास।

३. फल, बेर, चने-अनाज आदि भोजन।

४. अत्यन्त चंचल -कूदने में चतुर—नक़ल करने में प्रवीण

५. इसलिए बहुत कुछ सीख लेता है—मदारी खेलों के लिए पालते हैं।

तोता

१. तोता प्रत्येक देश में—ज्यादातर फलवाले गर्म प्रदेशों में

२. सुन्दर पक्षी, हरा रंग—परों में कुछ पीलापन—नर

तोते के गले में कण्ठी—लाल चोंच, बहुत कड़ी—प्रत्येक फल को कुतरना—लम्बी पूंछ—

३. शाकाहारी—खेती व बाग़ को नुकसान—

४. तोते की बोली कर्ण कटु—मनुष्य वाणी में बोलना—खेल—झुण्ड बनाकर रहना—स्वतन्त्रताप्रिय। चोरसे रक्षा।

तोता उन पक्षियों में है, जो प्रायः प्रत्येक देश में पाये जाते हैं। फिर भी गरम देश में जहां फल अधिकता से हो, ज्यादा पाया जाता है। साधारण तोता बहुत ही सुन्दर पक्षी होता है। इसके शरीर का रंग हरा होता है, लेकिन दुम के परों में कुछ पीलापन भी होता है। नर तोते



के गले में एक कण्ठी भी होती है। इसकी लाल चोंच बहुत कड़ी और कुछ मुड़ी हुई होती है। यह प्रत्येक फल में बड़ी आसानी से घुस जाती है। पूंछ लम्बी होती है। साधारणतः तोता १६ इंच लम्बा होता है, जिसमें १० इञ्च की तो केवल पूँछ ही होती है।

तोता शाकाहारी है, अनाज और फल खाकर ही गुज़ारा करता है। यह अनाज की बाल को ही तोड़ लेता है या कच्चे पक्के फल बागों से तोड़ लेता है। इस लिए किसान और बाग़ के माली इससे बहुत तंग रहते हैं।

साधारणतः तोते की बोली कर्णकटु होती है, लेकिन यह आदमियों की बोली की नकल अच्छी कर सकता है। इस लिए

बहुत से लोग इसे पालते हैं और 'राम राम' 'गंगाराम' आदि पढ़ाते हैं। मनुष्यों की बोली के अलावा यह तरह तरह के खेल भी सीख लेता है। तोते कसरत करते हैं, फौजी क़वायद करते हैं और छोटी मोटी तोपें दाग़ते हैं।

तोते का स्वभाव झुण्ड बनाकर रहने का है। एक गांव के तोते प्रायः एक दो वृक्षों पर ही रहते हैं। तोता अपने रहने के लिए कोई घोंसला नहीं बनाता, परन्तु वृक्ष में अपनी कड़ी चोंच से कोई सूराख़ कर लेता है और उसी सूराख़ में वह रहने लगता है। इसी लिए लोग इसे लकड़ी के पिंजरे में नहीं रखते। यह लकड़ी को काट कर बाहर भाग सकता है।

यह बहुत स्वतन्त्रताप्रिय प्राणी है। कितने ही साल इसे पालो, मौक़ा मिलने पर यह अवश्य उड़न्छू हो जायगा और फिर वापस न आयगा। इसीलिए एक दम नजर बदलने वाले बेमुरव्वती आदमी को 'तोताचश्म' कहते है।

यह कभी कभी चोर को आते देखकर बोलने लगता है और अपने मालिक की नींद खोलकर चोर से रक्षा करता है 'राम राम' या अन्य कोई सुन्दर पद गा गा कर यह घर में भगवद्भक्ति का वातावरण भी बनाये रहता है।

मोर

बहुत ही सुन्दर पक्षी—लम्बी ग्रीवा—सिर पर कलगी—सुन्दर सुन्दर रंग बिरंगी पंख—गहरा नीला, हरा और सुनहरा

रंग—मादा मोरनी सुन्दर नहीं होती।

भारत में बहुत पाया जाता है—तिब्बत, लंका, चीन, जापान तथा यूरोप के कुछ भागों में भी पाया जाता—दरख़्तों पर जंगलों में—फल, नाज, बीज, और छोटे छोटे कीड़े।

तेज दौड़ता है—थोड़ा बहुत उड़ता भी है—मोर का नाच अच्छा—फैली हुई पूंछ बहुत सुन्दर लगती है। आवाज़ कर्कश।

पङ्खों को लोग घरों में रखते हैं, चँवर बनाते हैं—मोर सांपों को बहुत मारता है—

——

मछली

संकेत

१. मछली जलचर प्राणी—अनेक प्रकार की मछलियां—देह पर सफ़ेद रङ्ग के गोल चमकदार छिलके—सिर त्रिभुज के समान—आंखें गोल और बड़ी, बिना पलक के—मुँह चौड़ा और छोटे पैने दांत—धड़ और सिर के मिलाप की जगह सांस लेने वाले गलफड़े—मछली के बहुत से पङ्ख—फेफड़ों के पास, पेट के नीचे, पीठ की धार पर और पूँछ के पास—इन सब से तैरती है।

२. पानी के छोटे छोटे कीड़े और अनाज मछली का भोजन—बड़ी मछली छोटी मछली का शिकार करती है।

बहुत से लोग मछली खाते हैं—मछली का शिकार बहुत—हुक में लगे कीड़े खाने आना और फस जाना—समुद्री किनारे मछलियों का व्यापार—तेल दवाई के काम भी।

अभ्यास (४०)

नीचे लिखे विषयों पर निबन्ध लिखो:—

कुत्ता, गधा, रीछ, शेर, मुर्गा, हरिण, चिड़िया, उल्लू, बुलबुल, कबूतर।

इस पर निबन्ध लिखते हुए पक्षियों की आकृति, शरीररचना, निवासस्थान, भोजन, स्वभाव और मनुष्य का उपयोग इन सब बातों पर प्रकाश डालो।

निबंधसंबंधी प्रश्न

जिस तरह कहानियों के लिखने के लिए संकेत और प्रश्न दोनों सहायक सिद्ध होते हैं, उसी तरह निबंधरचना में संकेतों के अलावा प्रश्नों से भी सहायता ली जा सकती है।

(अध्यापक को चाहिये कि किसी विषय की चर्चा श्रेणी में करके या विद्यार्थियों को कोई निबंध पुस्तक में पढ़वा कर उस पर प्रश्न करे। विद्यार्थी पूरे वाक्यों में उत्तर देंगे।)

यहां एक उदाहरण दिया जाता है।

घोड़ा

१. घोड़े की आकृति कैसी होती है? उसके शरीर के विभिन्न अवयवों की रचना कैसी होतीं? उन अंगोंकी विशेषता भी बताओ।

२. घोड़ा कहां कहां पाया जाता है ?

३. घोड़ा क्या क्या खाया करता है ?

४. घोड़े का स्वभाव कैसा होता है ?

५. जीवित घोड़ा मनुष्य के किस किस काम आता है ? मरने के बाद भी क्या उसका शरीर किसी काम आता है ?

६. घोड़े का महत्त्व क्या अब भी वैसा ही है, जैसा प्राचीन समय में था ?

वनस्पति—

फूलों, फलों और वृक्षों पर निबंध लिखते हुए भी उपयुक्त बातों का विचार चाहिये अर्थात आकृति, उसके भेद, प्राप्तिस्थान, गुण, रंग और स्वाद या गंध, बोने, फूलने, फलने और पकने का समय तथा उसके उपयोग। इन सब बातोंपर प्रकाश डालना चाहिये।

इसमें कुछ संदेह नहीं कि जौ, बाजरा, चना, चावल आदि अनेक अनाज हैं, जिन पर मनुष्य निर्वाह कर सकता है। लेकिन इन सबसे बढ़िया और उपयोगी गेहूं है। गेहूँ संसार के प्राय: सभी देशों में पाया जाता है।

गेहूँ का पौधा घास की जात का है। इसकी ऊँचाई तीन से पांच फीट तक होती है। कच्चे पौधे का रंग हरा होता है लेकिन पक्के पौधे का रंग पीला होता है। पौधे के तीन भाग होते हैं,

पहला भाग जड़, दूसरा भाग नली, जो गांठदार होती है और जिन पर लम्बे व नोकदार पत्ते होते हैं। तीसरा भाग बाली है, जिसमें दाने होते हैं। दानों के ऊपर छिलका होता है। दाने चिरे हुए और कड़े होते हैं।

गेहूँ की फसल कार्तिक में बोते हैं। बोने से पहले पांच सात बार धरती में हल चला लेते हैं। गेहूं धरती पर बिखेर कर ऊपर से सुहागा फेर कर उन्हें मिट्टी से दबा देते हैं।

एक सप्ताह तक दाने फूट जाते हैं। लगभग छः महीने में फसल पक कर तैयार हो जाती है। पकने पर सारा पौधा ही काट लिया जाता है। बैलों से रुँदवा कर दाने अलग किये जाते हैं। नली का भूसा बनता है। भूसा गौ बैल भैंस आदि के खाने के काम में आता है और दाना मनुष्य के। गेहूं से आटा, मैदा और सूजी तैयार होती है। मैदा और सूजी से तरह तरह के मिष्टान्न व डबल रोटी, बिस्कुट आदि बनाये जाते हैं। उबाल कर घुनघुनियां, भूनकर सत्तू, व मल्लण्डे; दलकर दलिया बनाया जाता है।

गुलाब का फूल

(१) फूलों का राजा—सौंदर्य और सुगंध दोनों।

(२) सभी देशों में मिलता है।

(३) अनेक भेद—लाल पीला, सफेद।

(४) कांटेदार झाड़ी—अलग अलग मौसमों में अलग अलग भेद फूलते हैं।

(५) हर एक बाग़ में गुलाब भी अवश्य

(६) गुलाब का इतर बनाने की विधि (७) गुलाब जल में वैद्य बहुत सी दवाइयां देते हैं । गुलक़न्द भी बनाया जाता है ।

आम

१. बहुत स्वादु फल । २. अनेक भेद–बम्बय्या, लंगड़ा,मालदा, सरौली, कलमी । ३. भारत में बहुत होता है । ४. आम का वृक्ष ३०, ४० फीट । ५. वसन्त में बौर और गर्मियों में आप पकता है । ६. कच्चा फल चटनी अचार मुरब्बे के काम भी आता है । ७. पक्का फल बहुत गुणकारी–रक्तवृद्धि । ८. आमों का भारी व्यापार—विदेशों को ।

कपास

१. कपास का पौधा बहुत उपयोगी । भारतमें बहुत खेती । २. बोने के चार मास बाद डोडे लगते है । ३. बिनौले अलग करने पड़ते हैं जिनिंग फ़ैक्टरी या बेलने में ४. फिर पिंजारा धुनता है और तब चरखा-खड्डी या मिल द्वारा सूत काता और बुना जाता है । ५. कपास के अनेक भेद–देशी अमेरिकन-अमरावती आदि—६. उपयोग बिनौलों से तेल—तेल से अनेक दवाइयां—खली पशुओं के लिए—तरह तरह के कपड़े, धागे और रस्सियां— काग़ज भी बनता है ।

नीम का वृक्ष

१. नीमका वृक्ष लगभग चालीस फ़ीट—पत्तियां घनी—छाया शीतल।

२. तना—शाखायें और पत्ते

३. छोटे छोटे सफेद सुगंधित फूल और खिन्नी के से फल

४. आरोग्यवर्धक छाया—नीम का अर्क बहुत दवाइयों के काम आता है। नीम की छाल और पत्ते विष को दूर करते हैं, फोड़े फुँसियों पर लगाते हैं, रुधिर विकार को दूर करते हैं, दातन करते हैं, नीम के तेल व साबुन भी बनते हैं।

अभ्यास (४१)

निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखो—

चावल, केला, बादाम, बांस, खजूर, तुलसी, पीपल, पपीता, संगतरा, गन्ना।

अच्छा हो कि इन विषयों पर लिखने से पूर्व विद्यार्थी परस्पर चर्चा करलें।

धातुएँ—

चांदी

(१) चमकीली धातु (२) खानों से निकलती है—शुद्ध की जाती है (३) भारत, दक्षिणी अमेरिका, रूस में (४) गुण—खिंचने वाली, कुटने वाली, नरम, गलने वाली, (५) उपयोग—सिक्के—बर्तन—भस्म—वर्क—दवाइयां—कपड़े पर गोटा किनारी—गहने।

चांदी एक चमकीली धातु है। इसका रंग सफ़ेद होता है। खान से निकलते समय इसका रङ्ग मटमैला रहता है। आग में गलाकर शुद्ध करने के बाद इसका रङ्ग बहुत स्वच्छ, सफ़ेद और चमकीला निकल आता है।

चांदी की खानें भारत, दक्षिणी अमेरिका और रूस में बहुत हैं। प्रायः सारे संसार को इन्हीं देशों से चांदी प्राप्त होती है।

पहले कारीगर शुद्ध चांदी की सलाई बना लेते हैं, फिर मज़बूत धातु के छेदों में डालकर उसका तार खींचते है। पहले बड़े छिद्र में, फिर छोटे छिद्र में, फिर उससे भी छोटे छिद्र में डालकर खींचने से बहुत ही पतला तार बन जाता है। कूटने से चांदी टूटती नहीं, वरन् फैलती जाती है। यहां तक कि कूटते कूटते बहुत ही हल्के वर्क बन जाते हैं। इसकी बहुत मोटी सलाई भी हाथ से नवाई जा सकती है।

चांदी बहुत उपयोगी धातु है। इसके सिक्के बनाये जाते हैं, लेकिन सिक्का बनाने से पूर्व इसमें तांबा भी मिला लेते हैं, क्योंकि

सिर्फ़ चाँदी का सिक्का नरम होने के कारण मुड़ सकता है। भारत में रुपया, अठन्नी चांदी के बनते हैं। पहले दुअन्नी और चवन्नी भी बनते थे। बड़े बड़े अमीर चांदी के बर्तन आदि भी बनवाते हैं चांदी अनेक प्रकार की औषधियों में भी काम आती है। चांदी की भस्म का वैद्य भी बहुत उपयोग करते हैं। चांदी के वर्क़ दवाइयों में डाले जाते हैं। बहुत से शौकीन लोग चांदी के वर्क़ पानों में या मिठाइयों के साथ भी खाते हैं। चांदी के गहने भी बहुत बनाये जाते हैं। कपड़े पर चांदी की गोटा किनारी भी लगाई जाती है।

लोहा

१. सबसे उपयोगी खनिज धातु (यदि लोहा न हो, तो हमारी क्या हालत हो जायगी, इसकी कल्पना करिये)

२. प्रायः सभी देशों में मिलता है।

३. खान से कच्चा लोहा—और फ़ौलाद बनाने की विधि।

४. काला रंग-कठोर-टूटने वाला-कठिनता से फैलने, गलने वाला।

५. सब से सस्ता पर सबसे उपयोगी—छोटे बड़े हर एक के काम की—कुल्हाड़ी, हल, कही, खुरपी, कील, पेंच, सुई से शहतीर और बड़े बड़े कारखानों तक सभी इसी से बनते हैं। इसके बिना न हमारा घर, रेलगाड़ी, जहाज़ कुछ भी नहीं बन सकता—वस्तुतः आज का युग लोहयुग है।

अभ्यास (४२)

निम्न खनिज द्रव्यों पर निबन्ध लिखो—

सोना, तांबा, पारा, कोयला, टीन, पीतल।

प्रकृति—

पानी

(१) अत्यन्त अनिवार्य वस्तु (२) दो गसों—उद्रजन और ओषजन से बनता है। (३) साफ़ करने के लिए भपका (४) विशुद्ध पानी पारदर्शी—रंग और स्वादरहित। (५) तीनों अवस्थाओं में—कुएँ, नदी, तालाब और वर्षा। (६) उपयोग—प्राणी इसमें रहते हैं, प्यास बुझती है, भोजन, स्नान, कपड़े धोना, खेती, भाफ के उपयोग—सभी काम। (७) अशुद्ध पानी बीमारियों को फैलाता है।

प्राणियों के जीवन के लिए जिन वस्तुओं की अनिवार्य आवश्यकता होती है, उनमें से पानी भी एक है। हवा के बाद यही सब से अधिक सुलभ और सबसे आवश्यक है।

पानी वस्तुतः दो गैसों—ओषजन और उद्रजन के मेल से बना है। जलमें दो तिहाई उद्रजन होता है और एक तिहाई ओषजन। पानी में अन्य भी अनेक प्रकार के गैसें तथा पदार्थ बहुत आसानी से घुल जाते हैं, इसलिए विशुद्ध जलका मिलना मुश्किल हो जाता है। जलको विशुद्ध करने के लिए इसे भपका दिया

जाता है। विशुद्ध पानी पारदर्शी होता है, इसका रंग और स्वाद कोई नहीं होता।

पानी तीन अवस्थाओं—ठोस बर्फ़, तरल साधारण जल और गैस भाफ़ में प्राप्त होता है। संसार का तीन चौथाई भाग पानी से पूर्ण है। कभी कभी बादलों के रूप में आकाश को भी पानी ढक लेता है। पानी कुओं, नदी, तालाब और समुद्रों में प्राप्त होता है। वर्षा से भी बहुत पानी मिलता है।

पानी बहुत उपयोगी पदार्थ है। स्थल पर जितने प्राणी रहते हैं, उससे कई गुना प्राणी नदियों और समुद्रों में रहते हैं। मनुष्यों तथा अन्य स्थलचर प्राणियों की प्यास पानी से बुझती है। पानी से हम भोजन बनाते हैं, नहाते हैं, कपड़े धोते हैं। पेड़ पौधों के लिए भी पानी अत्यन्त अनिवार्य है। इसके बिना खेती नहीं हो सकती। मकान तक बनाने के लिए पानी बहुत ज़रूरी है। मनुष्य का कोई काम ऐसा नहीं, जो पानी के बिना हो सके। पानी की भाफ़ भी कम उपयोगी नहीं। इंजिनों और मशीनों को यही भाफ़ चलाती है।

लेकिन अशुद्ध पानी बीमारियों को भी फैलाता है। इसके अन्दर बहुत से पदार्थ और कृमि मिल जाते हैं। इसलिये इसे उबालकर पीना चाहिए। जिस तालाब का पानी पीने के काम में आता हो, उसमें कपड़े धोना, नहाना आदि अनुचित है। पानी हमेशा ढक कर रखना चाहिये, नहीं तो दूषित होने का डर रहता है।

पर्वत

१. पर्वत भूमि से बहुत उठा हुआ भाग ।

२. पर्वत बनने के कारण भूकम्प आदि ।

३. पहाड़ी बहुत मिहनती—शिकार तथा भेड़ बकरी का पालन । शेर, चीते, सांप, हरिण आदि की बहुतायत ।

४. उपयोग—(क) बहुत से खनिज द्रव्य । (ख) मौनसून को रोक कर वर्षा कराते हैं । (ग) इमारती लकड़ी के बड़े बड़े वृक्ष ।(घ) जड़ी बूटियां, चाय आदि । (ङ) तराइयों पर फलों के वृक्ष । (च) गरमियों में अमीर लोग यात्रा । (छ) नदियें पहाड़ों से निकलती हैं ।

(नीचे कुछ विषयों की संक्षिप्त रूपरेखायें दी जाती हैं । अध्यापक को चाहिये कि उनकी व्याख्या विद्यार्थियों को बतादे ।)

समुद्र

भूमि का तीन चौथाई भाग समुद्र से आवृत—नदियों का पानी आता रहता है ।

उपयोग—वर्षा कराता है—सर्दियों में भूमि को गरम और गरमियों में ठण्डा करता है (कैसे ?)—यातायात व्यापार का साधन—नमक, मोती तथा अन्य रत्नों की प्राप्ति—मछलियों का शिकार ।

चांद

वर्णन—प्रकाश से रहित एक मृत लोक—सूर्य से प्रकाश-भूमि के ५० वें हिस्से के बराबर-भूमि के चारों ओर चक्कर-कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष।

उपयोग- समुद्र में ज्वार भाटे का कारण—चांदनी सुन्दर और शीतल—कई जड़ी बूटियों के लिए आवश्यक।

ज्वालामुखी

ज्वाला निकालने वाला पहाड़—ज्वाला या भाफ के बादल—पृथ्वी के पेट में गरमी—कड़ी चट्टान भी द्रव होकर बाहर निकलती है-यह सर्वस्व नष्टकर काली चट्टान या पहाड़-कभी कभी समुद्री पानी भूमि में प्रवेश करता है और गरमी से भाफ बनकर ऊपर निकलता।

कभी कभी बहुत समय शान्त रहने के बाद ज्वालामुखी का फटना—कांगड़े का ज्वालामुखी।

सूर्यग्रहण

(१) कारण (२) सूर्य ग्रहण के समय क्या होता है ? हवा भारी—पशुपक्षी अपने घोंसलों में (३) कुछ वहम-राहु केतु

अभ्यास (४३)

नीचे लिखे विषयों पर निबन्ध लिखो:—

वायु, नदी, आंधी, भूकम्प, भाफ, वर्षा, बादल, सूर्य।

ऋतुएँ—

गरमी

एक वर्ष में ६ ऋतुएं आती हैं । ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और वसन्त। वसन्त ऋतु में सरदी कम होने लगती है और वैशाख का मास प्रारम्भ होते ही ग्रीष्म भी प्रारंभ हो जाती है। ज्येष्ठ और आषाढ़ महीनों में गरमी पूरी तेज़ी पर होती है। ग्रीष्मऋतुमें धूप अत्यन्त प्रचण्ड होजाती है। सब वस्तुएँ भी बहुत तप जाती हैं। लू जोरों से चलने लगती है। बाहर निकलना कठिन हो जाता है। ऐसा मालूम होता है कि भूमि भी आग उगल रही है। बहुत से लोग लू लगने से बीमार हो जाते हैं और सैकड़ों मर भी जाते हैं। गरमी में प्यास भी बहुत लगती है। इच्छा होती है कि पानी में बैठे रहें और पानी पीते रहें। बहुत से लोग पानीको ठण्डा करने के लिए बरफ़ मिलाते हैं, लेकिन इससे प्यास और भी बढ़ती जाती है। भोजन अधिक नहीं खाया जाता। पेट पानीसे ही भरा रहता है। पसीना खूब आता है।

बहुत से अमीर गरमी से बचने के लिए इस मौसम में पहाड़ों पर चले जाते हैं। शिमला, कोहमरी, डलहौजी, मंसूरी, नैनीताल, दारजिलिंग आदि पहाड़ियों पर गरमी में खूब रौनक रहती है।

ग्रीष्म ऋतु में रातें छोटी होती हैं और दिन बड़े। रात को मच्छर सताते हैं। दिन में भी काम करने को जी नहीं करता। सारे शरीर में सुस्ती भरी रहती है।

गरमी से हानियां ही नहीं, अनेक लाभ भी हैं। गरमी से बहुत से फल पक जाते हैं। खरबूजा, तरबूज़, खीरे, लुकाट, आम, जामुन, अंगूर और नाशपाती इस मौसम के फल हैं। सरदियों में जो बर्फ पहाड़ों पर पड़ती है; वह गरम धूप पाकर पिघल जाती है और नदियां पानी से भर जाती हैं।

परमात्मा की माया है कि तपे हुए जगत् को शान्त करने के लिये एक दम गर्मी के बाद वर्षा भी आ जाती है।

अभ्यास (४४)

निम्न लिखित विषयों पर निबंध लिखो:—

सर्दी, वर्षा, बसन्त और प्रातःकाल।

आविष्कार—

हवाई जहाज़

हवाई जहाज़ विज्ञान के आविष्कारों में सब से अधिक आश्चर्यकारक आविष्कार है। सब सवारियों से—रेल गाड़ी और मोटर से यह तेज़ सवारी है। इस की शक्ल एक चील सी होती है। इसके नीचे तीन पहिये होते हैं, जो पांव का काम देते हैं। इसके सामने एक चक्कर सा होता है, जिसके घूमनेसे वायु उत्पन्न

होती है। ऊपर बड़े बड़े पंख बने होते हैं, जो इसे उड़ने में सहायता देते हैं। बीच में यात्रियों के बैठने के लिए कम या बहुत जगह होती है। ड्राइवर आगे बैठ कर इंजिन चलाता है। हवाई जहाज़ भी मोटर की भांति पैट्रोल से चलता है।

जब चक्कर घूमता है, तो पंखों में हवा भर जाती है। पहले हवाई जहाज़ पृथ्वी पर दौड़ता है, फिर धीरे धीरे ऊपर चढ़ता जाता है। हवाई जहाज एक घण्टे में सौ मील से अधिक जाता है।

पिछले १५-२० बरसों से हवाई जहाज़ों का प्रचार बहुत बढ़ गया है। पहले तो कहीं कहीं कोई हवाई जहाज़ दीखने में आता था, लेकिन अब तो प्रायः सारे संसारमें हवाई जहाज़ सवारियों को ले जाने का काम करने लगे हैं। डाक भी हवाई जहाज़ो से जाने लगी है। इनका सबसे बड़ा लाभ यह है कि दूर से दूर भी बहुत थोड़े समय में जाया जा सकता है। इंग्लैण्ड से भारत आने में सिर्फ चार दिन लगते हैं, जब कि तेज़ से तेज़ समुद्री जहाज़ भी तीन हफ्ते से पहले नहीं पहुँचता। हवाई जहाज़ों का प्रचार जिस तेज़ी से बढ़ रहा है, उसे देखते हुए यह कल्पना की जा सकती है कि जिस तरह आज हमारे जीवन में रेलगाड़ी ने महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है, उसी तरह से कुछ सालों बाद हवाई जहाज भी आम जनता के व्यवहार में आने लगेंगे।

लेकिन इनकी उन्नति के साथ साथ मनुष्य ने इनका दुरुपयोग करना भी शुरु कर दिया है। शत्रु से युद्ध करते हुए हवाई

जहाजों से बम बरसाये जाने लगे हैं। अब किले की दृढ़ दीवारें शत्रु से रक्षा नहीं कर सकतीं। हवाई जहाज ऊपर से बम बरसा कर बड़े बड़े शहरों को कुछ मिनटों में तहस नहस कर सकते हैं। अब जो लड़ाई होगी, वह मुख्यतः आकाश में लड़ी जायगी।

बैलगाड़ी

आज कल रेलगाड़ी, मोटर, हवाई जहाज आदि बहुत से नये नये सवारी के साधनों का प्रचार बढ़ गया है। लेकिन कुछ समय पहले तक सारे भारत में व अन्य अनेक देशों में बैलगाड़ी का ही प्रचार था। भारतवर्ष के गांवों में तो अब भी बैलगाड़ी या ऊँट-गाड़ी का प्रचार है। इसके लकड़ी के दो पहिये होते हैं, जो आपस में लोहे के धुरे से जुड़े हुए होते हैं। इस पर बड़ा तख्ता होता है, जिस पर लोग बैठते हैं या सामान लादा जाता है। आगे बम में एक या दो बैल जुड़ते हैं। भैंसों को भी कहीं कहीं जोता जाता है।

इन बैलगाड़ियों या ठेलों का हमारे लिए आज भी काफ़ी महत्व है। गांवों से अनाज, भूसा, रुई आदि स्टेशनों तक इन्हीं के द्वारा आता है। स्टेशन से शहर तक भी इन्हीं ठेलों में माल ढोया जाता है। दुकानदार भी प्रायः इन्हीं पर अपना माल लाते हैं। दूर का व्यापार इनके हाथ में नहीं रहा, लेकिन पास पास का व्यापार तो आज भी इन्हीं के हाथ में है।

ठेले की एक और बड़ी विशेषता है। जहां दूसरी सवारियां कच्चा और ऊबड़ खाबड़ सड़क पर आसानी से नहीं चल सकतीं, वहां यह आसानी से चल सकता है।

——

टेलिफ़ोन

(१) बहुत महत्त्वपूर्ण आविष्कार

(२) इसकी रचना

(३) इसके उपयोग—घर बैठे बैठे अपने शहर व अन्य शहरों और देशों के मित्रों, व्यापारियों आदि से बातचीत आदि। तार में अस्पष्टता—टेलिफ़ोन में भ्रम नहीं।

——

घड़ी

(१) घड़ी बहुत काम की चीज़

(२) इसकी रचना—दो सुइयां

(३) इसके भेद—जेब घड़ी, हाथ घड़ी, टाइमपीस और क्लाक।

(४) इनका उपयोग—यह न हो तो कितनी हानि—कोई काम ठीक समय पर न हो—रेलगाड़ियों का काम तो असम्भव हो जाय।

——

छाता

(१) रचना—फ़ौलाद की कमानियां—कपड़ा—दस्ता।

(२) गर्मी और वर्षा से बचाता है।

लालटेन

(१) प्राय: प्रत्येक घर में

(२) रचना—चिमनी—हवा के लिये छेद—पकड़ने के लिए—मिट्टी का तेल डालने के लिए डब्बा।

(३) लालटेन से पहले दिया या मशालों का इस्तेमाल था—लेकिन बाहर हवा आंधी में बुझने या आग लगने का डर—अब कम खर्च में सब आराम।

तेल

(१) तेल स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी चीज़

(२) तेल की रचना—बीजों से कोल्हू में—अलसी, सरसों, धनियां आदि

(३) तेल के कुंओं से मिट्टी का तेल

(४) हर एक तेल के अपने अपने गुण—मालिश से बहुत लाभ— दर्द को भगाता है। बादाम रोगन, कैस्टरायल आदि तो बहुत ही लाभकर।

मिट्टी का तेल रोशनी, पेट्रोल मोटरों और हवाई जहाजों को चलाता है—छोटे छोटे कारखाने तेल से चलते है।

अभ्यास (४५)

नीचे लिखे विषयों पर निबन्ध लिखो:—

रेलगाड़ी, बाइसिकल, ग्रामोफ़ोन, खिलौने, साबुन, जूता, सुई, कागज़।

त्योहार—

किसी त्योहार पर निबंध लिखने के लिए नीचे लिखी बातोंका विचार करना चाहियेः—

(१) क्या है ? (२) किसका त्यौहार है ? (३) कब मनाया जाता है ? (४) किस लिए मनाया जाता है ? (५) क्या क्या किया जाता है ?

दीवाली

दीवाली हिन्दुओं का बहुत बड़ा त्यौहार है। समस्त भारत के हिन्दू इसे बहुत समारोह से मनाते हैं।

राजा रामचन्द्र १४ साल के वनवास के बाद अयोध्या में कार्तिक की अमावस्या के दिन लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्या की प्रजा ने बहुत खुशियां मनाई थीं। घर सजाये गये और रात को प्रत्येक घर पर दीये जलाये गये थे। तब से हर साल हिन्दू इस दिन दीवाली का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाते आ रहे हैं। दीवाली का अर्थ ही है दीवों की पंक्ति।

दीवाली के दिन तक प्रायः सब हिन्दू अपने मन्दिरों, घरों और दुकानों की सफ़ेदी करा लेते हैं। उस दिन घर खूब सजाये जाते हैं। जो ग़रीब से ग़रीब हिन्दू होगा, वह भी इस दिन साफ़ कपड़े पहनेगा, कुछ न कुछ मिठाई खायेगा। बच्चे इस दिन खूब खुश होते हैं। रात को घरों पर दीवे, मोमबत्तियां जलाई जाती हैं। बाज़ारों में रंगबिरंगी रोशनियां की जाती हैं। झाड़ फानूस

जलाये जाते हैं। आतिशबाजियां छोड़ी जाती हैं। बच्चे खिलौने लेकर खुश होते हैं।

बहुत से हिन्दू इस दिन लक्ष्मीपूजा करते हैं। हिन्दू दुकानदार इस दिन से नया साल गिनते हैं और अपने बहीखाते बदल कर उनकी पूजा करते हैं। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द का देहान्त भी इसी दिन हुआ था। इसलिए आर्यसमाजी इस दिन ऋष्युत्सव भी मनाते हैं।

नगर—

किसी नगर अथवा गांव पर लेख लिखते समय निम्नलिखित बातें लिखनी चाहियें:—

(१) कहां बसा है ? क्या कोई नदी या पहाड़ उसके पास है ? उसका यह नाम किस लिए पड़ा ? (२) उसकी प्रसिद्ध बातें–देखने योग्य स्थान—भवन, बाग़, स्कूल, कारखाने आदि (३) उसका व्यापार उद्योग धन्धा (४) उसकी अन्य विशेषताएँ।

दिल्ली

दिल्ली भारतवर्ष की राजधानी है। आज ही नहीं, बहुत पहले भी—पाण्डवों के समय भी यह भारत की राजधानी थी। मुग़ल बादशाहों की भी दिल्ली राजधानी थी।

दिल्ली जमना नदी के किनारे बसा हुआ बहुत बड़ा नगर है। इसके अत्यन्त प्राचीन व ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के

कारण इसमें दर्शनीय स्थान भी बहुत से हैं। शाहजहां का बनवाया हुआ लाल किला बहुत ही सुन्दर है। संगमरमर के बने हुए दीवाने आम और दीवाने खास बहुत ही शानदार है। इस किले में और भी बहुत से दर्शनीय मकाम हैं। जामामस्जिद भी संसार की बड़ी बड़ी मस्जिदों में एक है। अशोक की लाट, और कुतुबमीनार के अलावा भी बीसियों ऐतिहासिक इमारतें दर्शनीय हैं। नई दिल्ली की चौड़ी चौड़ी कोलतारवाली सड़कें, असेम्बली भवन, वायसराय की कोठी तथा बीसियों और अच्छी अच्छी इमारतें देखकर आदमी हैरान हो जाता है।

दिल्ली में दो तीन कपड़े बुनने के कारखाने हैं। सिलमा, गोटा किनारी का व्यापार भी यहां खूब होता है। जेवरों और जवाहिरात के लिए भी यह शहर मशहूर है। चांदनी चौक इस शहर का सबसे बड़ा बाजार है। यह बहुत ही चौड़ा और लम्बा है।

दिल्ली में कई रेलवे लाइनें आकर मिलती हैं। पंजाब, युक्तप्रान्त, राजपूताना की ओर से आने या जाने वाली रेलों से दिल्ली सारे देश से जुड़ा हुआ है। इसलिए इसका व्यापार भी खूब चमका हुआ है।

इसमें बहुत से स्कूल, कई कालेज और एक यूनिवर्सिटी है। पढ़ने लिखने के लिए अच्छा प्रबन्ध है। यहां की आबादी करीब ४३ लाख है। अभी इस शहर की आबादी बहुत तेज़ी से बढ़ रही

है और जल्दी ही ५-६ लाख तक आबादी हो जाने की आशा है ।

मेरा स्कूल

(१) कहां बसा है ?

(२) स्कूल भवन का परिचय ।

(३) कितनी श्रेणियां कितने अध्यापक और विद्यार्थी ?

(४) खुलने और बन्द होने का समय ।

(५) बाग़ या खेल का मैदान ।

(६) स्कूल की कोई ख़ास विशेषता ।

रोग—

प्लेग

प्लेग एक बहुत भयंकर महामारी है । जब यह किसी शहर में फूट पड़ती है, तब उस शहर में सैंकड़ों व्यक्ति मर जाते हैं । सारे शहर में त्राहि त्राहि मच जाती है । सब लोग घर छोड़ कर भाग ज.ते हैं । सारा शहर वीरान हो जाता है ।

प्लेग के कीटाणुओं से यह महामारी फैलती है । इन कीटाणु ओं वाले कृमि पहले चूहों के बालों में रहकर उनका रक्त पी पीकर पनपते हैं । ऐसे चूहे प्लेग से मर जाते हैं । तब वे लहू के लालची कृमि मृत चूहों को छोड़ कर मनुष्यों के शरीरों को काटते हैं । इससे उनके शरीर में भी प्लेग के कीटाणु फैल जाते हैं और वह बीमार हो जाता है ।

प्लेग छूत की बीमारी है। जहां एक आदमी को यह बीमारी हुई, वहां थोड़ी सी भी असावधानी रखने पर यह बीमारी आस पास के लोगों को अवश्य हो जाती है और फिर मुहल्ले में फैल जाती है। एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले में, दूसरे से तीसरे में इस तरह सारे शहर में यह महामारी फैल कर नर-संहार प्रारम्भ कर देती है। इसीलिए प्लेग के रोगियों के लिए शहर से दूर मकान बनाये जाते हैं। प्लेग अधिकांशतः कमर और टांगों के जोड़ में अथवा अन्य किसी जोड़ पर गिल्टी हो जाती है। इसे फोड़ने के लिए गीली मिट्टी का प्लास्टर बार बार रखना चाहिए।

लेकिन इलाज की बनिस्बत पहले दूर रहना अधिक अच्छा है। महामारी फैलने के प्रधान कारण चूहों को नष्ट कर देना चाहिये। प्लेग के फैलने पर सारे घरको खूब साफ़ कर देना चाहिये। प्लेग का टीका लगवा लेना चाहिये और आवश्यकता हो तो ४-५ महीने के लिए घर छोड़कर कहीं बाहर चले जाना चाहिये।

घटनाएँ—

एक डाका

पिछली रात मुजफ्फ़रगढ़ जिले के झुग्गीवाला ग्राम में एक बड़ा जबरदस्त डाका पड़ा। ईसा एक मशहूर डाकू है। उसके साथ १५-२० और भी डाकू हैं, जिन का वह सरदार है। ईसा से आस

पास के गांवों वाले हमेशा डरते रहते हैं। उन्हें सदा यह चिन्ता रहती है कि न जाने वह किस दिन हमारे घर पर ही डाका डालने आजावे।

वह उस दिन अपने हथियार बन्द मुस्टण्डे १५ डाकुओं को लेकर गांव में रात को पहुंचा। गांव वालों को भी यह खबर किसी तरह लग गई। उन्हों ने आकर अपने दरवाज़े खिड़की बन्द कर लिये। लेकिन डाकू इनकी कब परवाह करते हैं? वे बाहर से एक सीढ़ी रख कर एक साहूकार के मकान में घुस गये। उन्हों ने साहूदार को पकड़ कर उससे चाबियां देने के लिए कहा। उसने चाबियां देने से इन्कार किया। वे उसे मारने पीटने लगे, लेकिन वह अन्त तक कहता रहा कि मैं चाबी नहीं दूंगा। तब उन्हों ने उसे वहीं कतल कर दिया और पेटी तोड़ कर सब रुपया और गहने निकाल लिये। क़रीब दस हज़ार रुपये का माल था। सब गांव वाले जानते थे कि डाकू उस घर में हैं, लेकिन किसी को वहां जाने का साहस न होता था। सभी को प्राणों का भय था। एक व्यक्ति थाने में सूचना देने गया। पुलिस भी पहुँची, लेकिन तब तक डाकू सब माल लेकर चम्पत होगये थे!

गोमती की बाढ़

१९३९ ई० में युक्तप्रान्त की अनेक नदियों में भीषण बाढ़ आई। लखनऊ और दूसरे स्थानों में गोमती नदी की बाढ़ तो

बहुत भीषण थी। शहर के अनेक भागों में जल भर गया था। सैंकड़ों घर गिर गये थे। बीसियों गांव तो बिलकुल बह गये थे, शहर की सड़कों तक पर इतना पानी आगया था कि वहां भी नावें चलानी पड़ी। बल्लियां, छप्पर, बांस, किवाड़ इत्यादि बहते हुए दिखाई देते थे। गोदामों में भी रखे हुए अनाज आदि के हज़ारों बोरे पानी में डूब गये। हज़ारों किसान बिना घर बार के हो गये। लोगों ने पहाड़ियों, टीलों और पेड़ों पर चढ़ कर अपनी रक्षा की थी। सैंकड़ों पशु, बीसयों मनुष्य डूबकर मर गये। खेतों के खेत खतम होगये।

इस समय सरकार ने तथा अन्य अनेक सार्वजनिक संस्थाओं ने बाढ़-पीड़ित मनुष्यों की सहायता की। लोगों के रहने के लिए सैंकड़ों छोलदारियां लगाई गईं। बड़े बड़े मकान जो ऊंची जगह पर थे, ख़ाली कर दिये गये। डाक्टर लोग इन के स्थान स्थान पर जाकर दवाई देते थे। ग़रीब किसानों व अन्य लोगों को अनाज भी मुफ्त बांटा गया। हज़ारों रुपये के कपड़े भी बांटे गये। बाढ़ के बाद फिर मकान बनाने, और अपना कारोबार फिर जारी करने के लिए आर्थिक सहायता भी दी गई।

बाढ़ के बाद बहुत दूर तक मकानों के खण्डहर दिखाई देते थे। सड़े हुए अनाज और मरे हुए पशुओं की दुर्गन्ध चारों ओर फैली हुई थी। मरे हुए मनुष्यों के लिए उन के नातेदार बहुत समय तक रोते रहे।

लेकिन बाढ़ से एक लाभ भी हुआ। भूमि अधिक उपजाऊ होगई और दूसरी फसल खूब अच्छी हुई।

क्वेटा का भूकम्प

१. एक अत्यन्त भीषण दुर्घटना।

२. रात को सब गहरी नींद सोये थे कि भारी गड़गड़ाहट के साथ सब मकानों का गिरना।

३. प्रायः सब आदमियों का दब जाना—हजारों क.—बाल-बच्चों, स्त्रियों और बुड्ढों की मृत्यु।

४. हजारों परिवारों में एक भी प्राणी न रहा—सारे देश में और खास कर पंजाब में दुख की लहर छा जाना।

५. सरकारी सेना का पहुँचना—खोद खोदकर निकालना—घायलों की शुश्रूषा—रेलगाड़ियों से बाहर भेजना।

६, सारे शहरमें करोड़ों रुपयेकी इमारतों और कारबारोंकी क्षति

७. भूकम्प के कारण।

एक मोटरदुर्घटना

१. मोटर दुर्घटना से हर साल सैकड़ों आदमियों की मृत्यु।

२. ड्राइवर शराब के नशे में बहुत तेज चला रहा था।

३. उधर से बैलगाड़ी।

४. ड्राइवर लारी को मोड़ नहीं सका और बैलगाड़ी से टक्कर।

५. एक बैल मर गया—बैलगाड़ी टूट गई—मोटर का इंजन तथा पहिया टूटा—ड्राइवर दूर जाकर गिरा, बैलगाड़ीवाला सख्त-घायल—सवारियों को भी थोड़ी बहुत चोट।

——

पेशे—

किसान

संसार में जितने पेशे हैं, उनमें किसान का पेशा सबसे कठिन, लेकिन सबसे जरूरी है। किसान हमारे लिए अनाज दाल, सब्जी, आदि पैदा करता है, जिसे विविध रूपों में खाकर हम अपनी भूख दूर करते हैं। किसान रुई पैदा करता है, जिसके कपड़े बनाकर हम अपना शरीर ढकते हैं।

किसान और भी बहुत सी आवश्यक वस्तुएं उत्पन्न करता है। नील से नीला रंग, अलसी आदि से विविध तेल, गन्ने से गुड़ और खांड तैयार होते हैं। चाय और तमाखू आदि की भी वह खेती करता है। सच तो यह है कि यदि किसान न हो, तो मनुष्य का जीवन असंभव हो जाय।

उसका जीवन बहुत सादा, लेकिन बहुत कठोर होता है। वह बहुत सवेरे उठता है, हल जोत कर खेतों में जाता है और कई घण्टे तक हल चलाता रहता है। कड़कती धूप, प्रचण्ड सरदी और भीषण वर्षा की वह चिन्ता नहीं करता। वह कड़ी भूमि पर कड़ी मेहनत करता है। भूमि तैयार हो जाने के बाद वह बीज बोता

है और फिर समय समय पर पानी देता है। पशुओं से, पक्षियों से वह उसकी हिफ़ाजत करता है और कई महीनों बाद फसल के पकने पर काटता है।

किसान जितनी सख्त मेहनत करता है, उसकी तुलना में उसे आमदनी बहुत कम होती है। वह सारे संसार को भोजन देता है, लेकिन स्वयं पेट भर खाना नसीब नहीं होता। वह सारे संसार को कपड़ा देता है, लेकिन अपने आप आधा नंगा रहता है। सचमुच किसान से महत्वपूर्ण और कोई व्यक्ति नहीं है।

पोस्टमैन



पोस्टमैन या डाकिया हमारा बहुत काम करता है। उसका काम चिट्ठियां, पार्सल और मनीआर्डर आदि बांटना होता है। वह खाकी पोशाक पहनता है। चमड़े का बैग उसके कंधे में लटका रहता है, जिसमें वह पत्र तथा रुपये रखता है।

वह नियत समय पर प्रत्येक लैटरबक्स के पास जाता है और उसे खोलकर उसमें पड़ी हुई सब चिट्ठियां उठा कर पोस्टआफिस ले जाता है। वहां उन सब पर मोहर लगाई जाती है और थैलों में भर कर वे रेलवे स्टेशन पर भेज दी जाती हैं।

इसी तरह से जब रेलगाड़ी से चिट्ठियां आती हैं, तब पोस्ट-आफ़िस में उन पर फिर मुहर लगाई जाती है और उन्हें मुहल्ले-वार बांटकर डाकियों को दे दिया जाता है। डाकिया फिर एक एक घर जाकर उन्हें बांटता है।

पोस्टमैन का काम बहुत सख़्त है। उसे रोज़ कई मील चलना पड़ता है। कड़कती धूप, ठिठराती हुई सर्दी और तेज़ बरसात की वह परवाह नहीं करता। उसे तो रोज़ ठीक समयपर चलना ही पड़ता है। वह आलस्य नहीं कर सकता।

वस्तुत: डाकिया हमारे बहुत काम का है।

जीवन-चरित्र—

प्रत्येक जीवन-चरित्र की रूप रेखा एक सी नहीं बन सकती है। प्रत्येक व्यक्ति की विशेषताओं के अनुसार रूपरेखा भी विविध होगी। यदि किसी राजा का वर्णन करना है, तो उसकी राज्यप्राप्ति, राज्य विस्तार, युद्ध, प्रजाहितादि के कार्यों पर लिखना पड़ेगा। सार्व-जनिक नेता या धर्म प्रचारक के वर्णन में जन्म, शिक्षा के बाद कार्यक्षेत्र में प्रवेश, सार्वजनिक कार्य आदि का परिचय देना पड़ेगा। विविध व्यक्तियों की विशेष प्रसिद्ध घटनाओं पर अधिक प्रकाश डालना चाहिए। फिर भी निम्नलिखित सामान्य रूप-रेखा थोड़ी बहुत सहायता दे देगी—।

१. कौन था—उसके वंश का संक्षिप्त परिचय।

२. जन्म—कब और कहां हुआ ? विद्याध्ययन ।

३. उसके जीवन की विशेष घटनाएं ।

४. मृत्यु—कब, कहां और कैसे (यदि किसी विशेष घटना से हुई हो) ?

५. जीवन से शिक्षा

राजा हरिश्चन्द्र

महाराजा हरिश्चन्द्र सत्यवादी हरिश्चन्द्र के नामसे प्रसिद्ध हैं। हरिश्चन्द्र सत्ययुग में सूर्यवंशी राजकुल में उत्पन्न हुए थे। वे वीर, साहसी, उदार और धर्मात्मा थे। उनके द्वार पर जो भिक्षुक आता था, वह निराश वापिस नहीं जाता था। वे उसे अवश्य दान देते थे। एक बार वचन देकर उसे वे टालना न जानते थे।

एक बार राजा ने स्वप्न देखा कि एक ब्राह्मण मुझसे समस्त राज्य की भीख मांग रहा है। उन्होंने स्वप्न में ही उसे समस्त राज्य दान कर दिया। दूसरे दिन दरबार में वे इसी स्वप्न का विचार कर रहे थे कि विश्वामित्र उसी ब्राह्मण के रूप में आ गये। राजा ने उन्हें देख कर कहा—"मैंने आपको राज्य देने का वचन दिया था, सो स्वीकार कीजिए।" विश्वामित्र भी उनके सत्य की परीक्षा लेने के लिए बोले—"समस्त राज्य तो मैंने दान में लिया, पर दान के साथ दक्षिणा भी तो चाहिये"।

राजा हरिश्चन्द्र के पास दक्षिणा के लिए कुछ न था। वे सारा राज्य, धन धान्य, महलादि सब कुछ दे चुके थे। लेकिन दक्षिणा

देना तो आवश्यक था। इस लिए सत्यप्रतिज्ञ राजा अपनी रानी और अपने छोटे पुत्र रोहिताश्व को लेकर काशी पहुँचे। वहां रानी और पुत्र को एक ब्राह्मण के हाथ बेचकर स्वयं भी एक चाण्डाल के हाथ बिक गए। इस तरह जो कुछ मिला, उससे उन्होंने दक्षिणा चुकाई।

एक दिन रोहिताश्व की सांप के डसने से मृत्यु हो गई। रानी उसे लेकर श्मशान पहुँची। साड़ी का कुछ हिस्सा फाड़कर उसने बालक पर कफ़न डाल दिया था। लेकिन श्मशान में जलाने से पहले चाण्डालको भी कपड़ा देना चाहिये था। हरिश्चन्द्र ने कहा–लाओ, कपड़ा लाओ' पीछे इसे जलाना। वह यह जानता था कि रोहिताश्व उसी का बालक है और वह स्त्री उसी की पत्नी है। लेकिन अब तो वह चाण्डाल का नौकर था, उसी का आज्ञापालन करना था। उसने कपड़ा लेने को आग्रह किया। राणी भी विवश होकर फटी हुई साड़ी को और फाड़ने लगी। इतने में परीक्षा लेने वाले विश्वामित्र आ गए और 'धन्य धन्य' कहकर राजा का हाथ पकड़ लिया। रोहिताश्व अभी मरा नहीं था। किसी अच्छे वैद्य ने उसकी चिकित्सा की। वह अच्छा हो गया। विश्वामित्र ने उसे सारा राज्य वापिस कर दिया।

बहुत सालों तक राज्य करने के बाद वे मर गए, लेकिन उनकी कथा अमर हो गई है। सत्यवादी राजा के नाम से उनकी कथा हर एक हिन्दू घर में होती है।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का नाम हर एक शिक्षित भारतीय जानता होगा। वे बड़े परोपकारी, दयालु, सुधारक और विद्वान् थे। उनका जन्म १८२० ई० मेदिनीपुर ज़िले के वीरसिंह ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री ठाकुरदत्तजी था। वे बहुत दरिद्र थे।

पांच वर्ष की अवस्था में ईश्वरचन्द्र ग्राम की पाठशाला में प्रविष्ट हुए। तीन चार साल बाद कलकत्ते गये और १२ सालतक वहां पढ़ते रहे। कालेज की परीक्षा पास कर 'विद्यासागर' की उपाधि प्राप्त की।

कालेज छोड़ने के बाद वे फोर्ट विलियम कालेज में ५०) रु० पर प्रधान पण्डित नियुक्त होगये। वहां उन्होंने अपनी योग्यता और विद्वत्ता से सब अधिकारियों को प्रभावित कर लिया। इसलिए वे उन्नति भी करते गए। वे उसी कालेज के प्रिंसिपल हो गए। कुछ साल बाद वे ५००) रु० पर असिस्टैंट इंसपैक्टर नियत कर दिये गए। इस पद पर तीन साल रहकर उन्हों ने नौकरी छोड़ दी।

नौकरी छोड़ने के बाद आपने सारा जीवन देश की सेवा तथा सामाजिक कुरीतियों के निवारण में लगाया। अशिक्षा, बालविवाह तथा अन्य अनेक अनुचित और हानिकारक कुरीतियों के विरुद्ध उन्होंने जनता में खूब प्रचार किया। लेकिन सबसे महान् कार्य

जो उन्होंने किया, वह था विधवाविवाह सम्बन्धी कानून बनवाना। इससे पहले विधवा का विवाह ग़ैरक़ानूनी था, लेकिन आपने निरंतर प्रयत्न करके १८५६ ई० में विधवा विवाह को क़ानूनी तौर पर स्वीकृत करने का नियम पास करा लिया।

बंगाली साहित्य में आपने बहुत से अमूल्य ग्रंथ लिखे हैं। आपने कई स्थानों पर विद्यालय, औषधालय खुलवाये और कलकत्ते में एक कालेज की स्थापना भी कराई।

१८६१ ई० में यह महान् आत्मा इस संसार से उठ गया।

अभ्यास (४६)

निम्नलिखित महापुरुषों पर निबन्ध लिखो:—

राजा रामचन्द्र, सीता, अर्जुन, म० बुद्ध, अशोक, अकबर, गुरुनानक, ऋषि दयानन्द।

(अध्यापक को चाहिये कि इन महापुरुषों की जीवनकथा और उनकी विशेषताएं विद्यार्थियों को बता कर उनकी रूप रेखा ब्लैकबोर्ड पर लिख दें।)

आत्म कथाएँ—

पोस्टकार्ड की आत्मकथा

पाठकवृन्द, मेरा शरीर यद्यपि छोटा सा है, तथापि मेरा जीवन बहुत घटनापूर्ण है और मैं लोगों की बहुत सेवा किया करता

हूं। मैंने अपने जीवन में बहुत कष्ट सहे हैं। पहिले मैं घास के रूप में था। लोगों ने मेरा गुण पहचाना और वहां से ला कर मुझे खूब कूटा पीटा। अनेक कष्ट सहने के बाद मेरा शरीर सुन्दर सफ़ेद और चिकना हो गया। अब लोग मुझे काग़ज कहने लगे। मुझे फिर एक प्रैस में ले जाया गया, वहां मुझे काट कूट कर तथा मुझे छापे की मशीन में डाल कर मेरा नया रूप बनाया गया, और मैं 'पोस्टकार्ड' कहाने लगा।

छापे खाने से निकल कर मैं पोस्टआफ़िस में पहुंचा। वहां पर मैं एक सुन्दर और मजबूत सन्दूक में बहुत से साथियों के साथ रहने लगा। रोज मेरे साथी संदूक से निकाले जाते थे। एक दिन मेरी वारी आ गई और बन्द सन्दूक से निकल कर मैं खुली हवा में आया। पोस्टमास्टर ने बाबू से तीन पैसे ले कर मुझे उसके हाथ में दे दिया। कोई समय था कि मेरे पुराणे साथी एक एक और दो दो पैसे के बदले दिये जाते थे, लेकिन सब चीजें महँगी हो गई हैं, मुझे भी अपनी कीमत बढ़ानी पड़ी।

अभी तक मैं खुश था। लेकिन मेरे नये मालिक ने नुकीली कलम से मुझे सारा पोत दिया। कोई पतला काग़ज होता, तो शायद फट भी जाता, लेकिन मैं तो पुष्ट हूँ। मैं सब अत्याचार सह गया। फिर वे मुझे नौकर के हाथ में सौंप कर बोले—जाओ, इसे लेटर बक्स में डाल आओ। खैर, मैं फिर लाल कोठरी में बन्द कर दिया गया। लेकिन परमात्मा भला करे कि एक पोस्टमैन ने आ कर मेरा उस बन्द कोठरी से छुटकारा कराया।

मैं फिर पहुंचा पोस्टआफ़िस, और वहां पर फिर मुझे लोहे की मोहर से ठोका गया। अब मेरे आनन्द का समय आया। मैं बहुत से साथियों के साथ रेलगाड़ी पर भेजा गया। रेलगाड़ी भी माल या पैसैंजर नहीं—डाक गाड़ी, जो सब से तेज चलती है। कई दिन तक गाड़ी की यात्रा करता रहा। एक दिन मुझे उतार लिया गया और एक दूसरे शहर के पोस्टआफ़िस में ले गये। वहां फिर मुहर लगाई गई। इसके बाद वहां का एक पोस्टमैन मुझे अपने भेजने वाले के मित्र के पास लेगया। उसने मेरा बड़ा स्वागत किया। मुझे बार बार पढ़ने लगा और फिर घर में जा कर कहने लगा कि मेरा मित्र परीक्षा में पास हो गया है। लेकिन मेरे सभी साथी खुशखबरी ही नहीं लाते, कभी कभी पोस्टकार्ड पढ़ कर लोग रोते भी हैं। किसी में व्यापार को घाटे की बात लिखी होती है, किसी में मौत की। पर बहुत से मेरे साथी ऐसे भी होते हैं कि जन्म, व्यापारिक लाभ, विवाह आदि के शुभ समाचार देते हैं। दर असल हम तो सुख दुख दोनों के साथी हैं।

रुपये की आत्मकथा

१. खान से निकाल कर मेरी शुद्धि

२. फिर टकसाल में कई सांचों में से निकलने के बाद रुपये की शकल और फिर खजाने में

३. एक आदमी के हाथ में—चमक को देख कर उसकी प्रसन्नता और अपने सन्दूक में संभाल रखना

४. लेकिन एक दिन कपड़ों के बदले बजाज को दे दिया

५. बजाज ने एक विद्यार्थी को दस रुपयेका नोट भुनाते समय दे दिया—विद्यार्थी के बटुए में दो दिन

६. उसने शारदामन्दिर में किताब ले कर दे दिया-फिर वहां से कभी किसी के हाथ में-कभी किसी के हाथ में,

७. एक अमीर के पास अलमारीमें—एक दिन चोर अलमारी तोड़ कर मुझे ले गया-लेकिन उसने भी मुझे एक दुकानदार को दे दिया।

८. फिर कभी किसी का काम करता, कभी किसी के काम आता। अब मैं मैला हो गया हूं-घिस गया हूँ-कोई लेना नहीं चाहता-शायद फिर खजाने जाऊं और गला दिया जाऊं।

खेल—

फुटबाल

आज कल जो खेल खेले जाते हैं, उनमें फुटबाल बहुत मशहूर खेल है। यह पैरों से खेला जाता है।

फुटबाल खेलने के लिए दो पार्टियों का होना जरूरी है। हर एक पार्टी में ११—११ खिलाड़ी होते हैं। फुटबाल खेलने का मैदान १२० गज लम्बा और ८० गज चौड़ा होता है। हरएक पार्टी

में एक गोलकीपर होता है, जो गोल होनेसे बचाता है। बाकी दस में से पांच पहली लाइन में, तीन बीच की और दो अन्तिम पंक्ति में खड़े होते हैं। दूसरी और तीसरी पंक्ति वाले फुटबाल को पीछे नहीं आने देते और पहली पंक्ति वाले उसे विरोधी पार्टी में ले जाने और गोल के खम्भों में से गुजारने का प्रयत्न करते हैं। यदि वे सफल हो गए, तो दूसरी पार्टी पर गोल हो जाता है।

मैदान के ठीक बीच में फुटबाल रखी जाती है। एक व्यक्ति उसे पैरों से मारता है और खेल शुरु हो जाता है। अब हर एक खिलाड़ी उसे दूसरे दल की ओर लेजाने, अपने दल से निकालने का प्रयत्न करता है। गोलकीपर को हाथ में लेकर हाथ से मारने का भी अधिकार होता है।

एक व्यक्ति को 'रैफरी' या निरीक्षक नियुक्त किया जाता है। वह देखता रहता है कि कोई खिलाड़ी अनियम तो नहीं कर रहा, दोनों पार्टियों में कोई झगड़ा हो जाय, तो उसका निपटारा भी वही करता है। एक घण्टे तक यह खेल खेला जाता है। जो दल दूसरे पर ज्यादा गोल करे, वह जीत जाता है।

इस खेल से व्यायाम खूब होता है। खेलने वाले ही नहीं देखने वाले भी इसमें खब दिलचस्पी लेते हैं। कभी कभी सैकड़ों हज़ारों दर्शक इसे देखने के लिए आते हैं।

विचारात्मक निबन्ध

निबन्ध कई प्रकार के होते हैं। किसी पशु पक्षी नगर तथा अन्य वस्तुओं का वर्णन जिन निबन्धों में किया जाय, उन्हें वर्णनात्मक निबन्ध कहा जाता है। जिन निबन्धों में किसी महा पुरुष की जीवन कथा का वर्णन कियाजाय, उन्हें कथात्मक निबन्ध कहते हैं। दोनों प्रकार के निबन्ध तुम ऊपर पढ़ चुके हो। लेकिन एक और प्रकार के भी निबन्ध होते हैं। वे बिचारात्मक कहाते हैं। इन में विभिन्न विषयों पर विस्तार से बिचार किया जाता है। सत्य, दया, मित्रता, सत्संग, उद्योग, देशप्रेम, ईमानदारी, दया, क्रोध, स्वाध्याय आदि सैकड़ों बिषयों पर विचारात्मफ निबंध लिखे जा सकते हैं।

इस प्रकार के निबन्ध लिखने के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहियें।

१—शिक्षाप्रद कहानियों को याद करना चाहिये। प्राय: सारी कथाओं से कोई न कोई शिक्षा अवश्य मिलती है। किस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है, यह मालूम करना चाहिये। जिस विषय पर निबन्ध लिखना हो, यदि उसी से सम्बन्ध रखने वाली कोई छोटी सी कहानी दे दी जाय तो निबन्ध रोचक और सुन्दर हो जाताहै।

२—जिस विषय पर निबंध लिखना हो, उसकी चर्चा श्रेणी में होनी चाहिये और प्रत्येक विद्यार्थी जो जो नयो बात बताये, उसे

नोट कर लेना चाहिये। वर्णनात्मक निबन्धों की तरह विचारात्मक निबन्धों की भी प्रश्नावली और रूपरेखा बनाई जानी चाहिये।

३—मुहावरों और कहावतों का प्रयोग भी यदि किया जाय, तो भाषा बहुत सुन्दर होजाती है। लेख की भाषा कठिन न हो। वाक्य भी बहुत बड़े न हों।

४—साधारणतः विचारात्मक विषयों पर निबन्ध लिखते हुए निम्नलिखित क्रम रखना चाहिये—

१. लक्षण।

२. उसकी विशेषताओं की व्याख्या (उदाहरण भी हो)

३. उसके लाभ या हानि।

(अध्यापक को भी विद्यार्थियों के निबन्धों का संशोधन करते हुए एक बात ख्याल में रखनी चाहिये कि संशोधन बहुत अधिक नहीं करना चाहिये। अधिक संशोधन से लड़कों का उत्साह घट जाता है। यदि विद्यार्थी ने कुछ बेसिरपैर की बातें भी लिखी हों, तो भी अध्यापक को बहुत समझदारी से एकाध स्थान में ऐसा संशोधन कर देना चाहिये, जिससे उसमें सार्थकता आजाय।)

आलस्य

किसी काम को ठीक समय पर करने से कतराना और मेहनत से बचना आलस्य होता है। आलस्य बहुत बड़ी बुराई है। आलसी मनुष्य कोई काम नहीं कर सकते। उनके मुख पर हमेशा उदासी छायी रहती है, वे कभी खुश नहीं दिखाई देते। जो

आदमी आलसी होते हैं, वे कभी किसी काम में तरक्की नहीं कर सकते। उनका कोई इरादा पूरा नहीं होता। वे हमेशा दूसरों की दया पर जीते हैं।

आलस्य से और भी बहुत नुक्सान होते हैं। शरीर कमज़ोर हो जाता है और कई प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं। अनेक दुर्गुण भी घर कर लेते हैं। एक कहावत है कि "शैतान बेकार पर सवार होता है।" आदमी का दिल हमेशा कुछ न कुछ सोचता रहता है। यदि वह किसी अच्छे काम में न लगे, तो बुरे विचार उसके दिल में आते हैं। उसका दिल पाप की ओर भागता है। अपने कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये, अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिये और प्रसन्न रहने के लिये जरूरी है कि आलस्य छोड़ दिया जाय। अगर सूरज या चन्द्र एक दिन के लिए भी अपना काम छोड़ कर आलस्य करें तो प्रलय का दृश्य उपस्थित हो जाय, लेकिन वे ऐसा नहीं करते। हमें भी उनसे शिक्षा लेनी चाहिये कि हम भी कभी आलस्य न करें। आलस्य मनुष्य मात्र का बैरी है। कहा भी है—

आलस बैरी बसत तन सब सुख को हरि लेत।
त्योंही उद्यम बन्धु सो, किये सकल सुख देत॥

सत्य

जो बात जैसी देखी, सुनी हो या जैसी मन में हो, उसे ज्यों का त्यों कह देना सत्य है।

सत्य बोलने से संसार के सारे काम होते हैं। यदि सभी दुनिया झूठ बोलने लग जाय, तो कोई किसी पर विश्वास न करे। इस तरह से सब काम बन्द हो जाय। एक दूकानदार यदि हमेशा झूठ बोला करे और लोगोंको यह मालूम होजाय कि यह झूठा दूकानदार है, तो ग्राहक उसके पास आना बन्द कर देंगे। झूठ बोलने से न विद्यार्थी अध्यापक पर विश्वास करे और न अध्यापक विद्यार्थी पर। झूठ बोलने से आदमी किस तरह विश्वास खो बैठता है, यह इस कथा से प्रकट होगा।

एक गडरिये ने एक दिन गांव के लोगों से मजाक करने के लिये शोर मचाना शुरू किया—"बाघ आया, बाघ आया, दौड़ियो"। लोग उसकी आवाज सुन कर आगये। वहां जाकर देखा कि गडरिया हंस रहा है और कह रहा है कि 'खूब छकाया।' एक और दिन भी उसने ऐसे ही झूठ बोल कर लोगों को बुला लिया। आदमी आये और चले गये। लेकिन एक दिन सचमुच बाघ आगया और वह चिल्लाया। गांव के लोगों ने समझा कि अब भी वह झूठ बोल रहा है। कोई भी उसको सहायता को न पहुंचा। बाघ ने उसे मार दिया। यदि वह झूठ बोल कर लोगों का विश्वास न खो चुका होता, तो उसकी जान जरूर बच जाती।

सच्चे आदमी की सब क़दर करते हैं। उसकी बात पर सब विश्वास करते हैं। वह जो कहे सब मान लेते हैं। और उसके काम में कोई दिक्कत नहीं पड़ती। सच बोलने के कारण भी

कोई दुःख भी आ जावे, तो उसे बरदाश्त कर लेना चाहिये। सत्यवादी हरिश्चन्द्र का नाम आज़ तक इसी लिए आदर के साथ लिया जाता है कि उन्होंने सत्य की खातिर राज छोड़ दिया, घर-बार छोड़ दिया और सब तकलीफें सहीं। उनके बारे में आज तक मशहूर है—

चन्द्र टरै सूरज टरै टरै जगत् व्यवहार।
पै दृढ़ श्री हरिश्चन्द्र का टरै न सत्य विचार॥

यदि कोई आदमी सत्य बोलने का व्रत ले ले, तो वह बहुत सी बुराइयों से बच जाता है। उसे यह हमेशा डर रहेगा कि मेरा पाप छिप न सकेगा, क्योंकि मैंने तो सत्य बोलना है। इसलिये वह पाप ही न करेगा। सच से बढ़ कर और कोई धर्म नहीं।

सांच बरोबर तप नहीं झूठ बरोबर पाप।
जाके हिरदय सांच है ताके हिरदय आप॥

कुछ निबन्धों के संकेत—

आज्ञापालन

१. आज्ञापालन के सिवा कोई काम नहीं चल सकता (एक ऐसे स्कूल का चित्र खींचो, जहां आज्ञापालन न होता हो)।

२. बड़े आदमी हमेशा फायदे की आज्ञा देते हैं—कुछ उदाहरण।

३. माता पिता और अध्यापकों की आज्ञा मानने से लाभ—सरकारी क़ानूनों को मानने की जरूरत।

परोपकार

१. परोपकार का लक्षण। २. प्रकृति की शिक्षा—सूरज, वर्षा, पृथ्वी सभी उपकार करते हैं। ३. भूखे को भोजन, प्यासेको पानी, नंगेको कपड़ा, अशिक्षित को पढ़ाना। ४ कहानियां—दधीचि या कोई और। ५. लाभ—उपकृत पुरुष का लाभ, आत्म-संतोष, दिल में खुशी। ६. परोपकार बहुत बड़ा धर्म है (पर हित सरिस धर्म नहिं भाई)।

मित-व्यय

१. मितव्यय क्या है ? २. मितव्यय के लाभ। ३. मितव्यय कंजूसी को नहीं कहते। ४. फ़जूल खर्ची से कुबेर का ख़जाना भी खतम हो जाता है—एक आध कहानी। ५. मितव्यय के उपाय—अच्छी तरह जरूरत हो, तो ख़र्च करो। सेविंग्स बैंक आदि में जमा करो।

स्त्रीशिक्षा

१. स्त्रीशिक्षा का अभाव। २. गृहस्थरूपी गाड़ी के दोनों पहिये एक से हों—ऊंचे नीचे न हों। ३. स्त्री शिक्षा का महत्व—माता के अशिक्षित होने से बच्चों पर बुरा प्रभाव। ४. स्त्रीशिक्षा के अभाव से और हानियां। ५. स्त्री शिक्षा किस प्रकार की होनी चाहिये ?

अभ्यास (४७)

नीचे लिखे विषयों पर निबन्ध लिखो:—

दया, कायरता, धैर्य, मित्रता, सत्संगति, कृतज्ञता, समय का उपयोग, स्वावलम्बन।

निबन्धों का संक्षेप

जिस तरह कहानियों का संक्षेप किया जाता है, उसी तरह निबन्धों और घटनाओं आदि का भी संक्षेप किया जा सकता है। किसी निबन्ध को संक्षिप्त करने में यह ध्यान रखना चाहिये कि उसकी मुख्य बात छूटने न पावे, लेकिन कोई अनावश्यक और कम महत्त्वपूर्ण बात रहने भी न पावे। ऐसा करने के लिए सबसे अधिक आवश्यक यह है कि उस निबन्ध को बहुत अधिक ध्यान से पढ़ा जाय। साधारणतः विद्यार्थी किताब के बीसियों पृष्ठ पढ़ जाते हैं, लेकिन एक मिनट बाद उनसे यह पूछा जाय कि क्या पढ़ा? तो वे बता नहीं सकते। इस का कारण यह है कि वे ध्यान से नहीं पढ़ते। संक्षेप करने से पहले निबन्ध को एक बार, दो बार तीन चार बार पढ़ो और यह देखो कि कौन से वाक्य अधिक आवश्यक हैं और कौन से कम आवश्यक।

संक्षेप करते समय मूल निबन्ध के वाक्यों और भाषा को प्रयुक्त करने का प्रलोभन नहीं करना चाहिये। ऐसा करने से न तो संक्षेप ही होता है और भाषा ही अच्छी लिखी जाती है।

अपने शब्दों और वाक्यों में संक्षेप करना चाहिये। कुछ उदाहरण लीजिये—

१. युद्धक्षेत्र में उसका साहस निस्सन्देह महाबली भीमकी तरह प्रकट होता था

१. वह बहादुर योद्धा था।

२. आज कल जो 'अर्जुन' के सम्पादक हैं।

२. 'अर्जुन' के वर्त्तमान सम्पादक

३. उन्होंने ऐसा काम किया, जिससे उनपर मुकदमा चलाया जा सकता था।

३. उन्होंने गैरक़ानूनी काम किया।

दीवाली

दीवाली पर एक निबन्ध ११७ पृष्ठ में दिया गया है। इस का संक्षेप इस तरह होगा—

सारे भारत के हिन्दू इस त्योहार को बहुत समारोह से मनाते हैं। कहते हैं, इसी दिन राजा रामचन्द्र १४ साल के वनवास से अयोध्या लौटे थे। अयोध्या की प्रजा ने दीवाली करके इन का स्वागत किया था। हिन्दू इस दिन मकानों, दुकानों आदि की सफ़ाई करते हैं, नये कपड़े पहनते हैं, मिठाइयां खाते हैं और रात को सैकड़ों दीवे जलाते हैं। और भी अनेक प्रकार से खुशियां मनाते हैं।

बहुत से हिन्दू लक्ष्मीपूजा करते हैं और हिसाब किताब नये

मिरे से शुरू करते हैं। आर्यसमाजी भी इस दिन को मनाते हैं, क्योंकि ऋषि दयानन्द का देहान्त भी इसी दिन हुआ था।

राजा हरिश्चन्द्र

हरिश्चन्द्र पर लिखे पृ० १२८ निबन्ध का संक्षेप इस तरह होगा–

सत्यवादी महाराजा हरिश्चन्द्र दान देते कभी संकोच न करते थे। एक दिन उन्होंने स्वप्न में भीख मांगते हुए एक ब्राह्मण को सारा राज्य दे दिया। दूमरे दिन उसी रूप में विश्वामित्र दरबार में पहुँचे। राजा ने स्वप्न की प्रतिज्ञा याद कर उन्हें सारा राज्य दे दिया। विश्वामित्र ने उनकी परीक्षा लेने के लिए राज्य के दान के साथ दक्षिणा भी मांगी। हरिश्चन्द्र तो सब कुछ दे चुके थे, इसलिए उन्होंने बनारस जाकर अपनी स्त्री व बच्चे को एक ब्राह्मण और अपने को चांडाल के हाथ बेच दिया और जो कुछ मूल्य मिला, वह दक्षिणा के रूप में विश्वामित्र को दिया।

कुछ समय बाद उनका पुत्र सांप के काटने से मर गया। उस की मां, जो हरिश्चन्द्र की स्त्री ही थी, उसकी लाश लिए मरघट में पहुँची। वहां चांडाल को देने के लिए उसके पास कोई कपड़ा न था। इधर स्वामिभक्त हरिश्चन्द्र के कपड़े के लिये बहुत आग्रह करने पर जब वह अपनी फटी हुई साड़ी फाड़ने लगी, तभी विश्वामित्र पहुँच गये। उन्होंने उसे सारा राज्य वापिम दे दिया और एक अच्छे वैद्य ने पुत्र को भी, जो वस्तुतः मरा न था, बेहोश ही हुआ था, ठीक कर दिया।

अभ्यास (४८)

निम्नलिखित निबंधों को संक्षिप्त करो :—

प्लेग (पृष्ठ १२०), एक डाका (पृष्ठ १२१), और किसान (पृष्ठ १२५) सत्य (पृष्ठ १३८)।

(इनके अतिरिक्त अध्यापक को चाहिये कि रीडर से अनेक पाठ संक्षेप करने के लिये विद्यार्थियों को देवे। इससे उनका अभ्यास बढ़ेगा।)

शीर्षक देना

कहानी या निबंध का संक्षेप करने के लिये उसे बार बार ध्यान से पढ़ना चाहिये, क्योंकि उसका सार देना होता है। किसी परिच्छेद, कहानी या निबंध का शीर्षक देने के लिए तो और भी अधिक ध्यान से पढ़ने की आवश्यकता है, क्योंकि इस में तो एक आध शब्द में ही सार देना पड़ता है। उस कहानी या निबंध का पूरा निचोड़ दो एक शब्दों में देना असम्भव है, जब तक हम ध्यान से न पढ़ें। हरिश्चन्द्र की कथा में यदि शीर्षक न दिया हो, तो इसका शीर्षक 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' रखा जा सकता है। इस सम्पूर्ण कथा में यही बात तो थी कि हरिश्चन्द्र ने अपना बचन पालन करने के लिए कितनी अधिक तकलीफें झेलीं।

(अध्यापक विभिन्न पुस्तकों से कोई कहानी या निबंध सुनाकर या लिखा कर विद्यार्थियों से शीर्षक लिखने के लिये कहें)।

पत्र लेखन

—:—

पत्र के छः भाग

(क) बिड़ला हाई स्कूल
दिल्ली
२० । ३ । ३७

(ख) पूज्यपाद पिताजी,

(ग) सादर प्रणाम

(घ—मुख्य विषय)

आपकी दया से मैं राजी खुशी हूं। आप भी सकुशल होंगे। मेरी परीक्षा का परिणाम निकल आया है। मैं पास हो गया हूँ। अब मैं छठी श्रेणी में जाऊंगा। नई पुस्तकें खरीदने के लिए पांच रुपये शीघ्र भेज दीजिए। मेरा छोटा भाई रामकृष्ण भी पांचवीं में पास हो गया है। उसे मैं अपनी पुस्तकें दे दूँगा।

(ङ) आपका विनीत पुत्र
भारतभूषण

(च)

POST CARD

श्रीयुत श्यामसुन्दर जी
स्टेशनमास्टर
गाजियाबाद

यह एक पत्र है। यदि इसे ध्यान से पढ़ोगे, तो मालूम होगा कि इस पत्र के छः हिस्से हैं। ये हिस्से निम्नलिखित हैं:—

क—अपना पता और तारीख

ख—सम्बोधन

ग—अभिवादन

घ—पत्र का मुख्य विषय

ङ—लेखक का नाम

च—लिफ़ाफे या कार्ड पर पता

अपना पता और तारीख

पत्र की दाहिनी ओर सबसे ऊपर अपना पता लिखना चाहिये। इससे पत्र पाने वाले को उत्तर देने में बहुत सुभीता रहता है। पता बहुत बेढँगा नहीं लिखना चाहिये। सब से पहले अपना मुहल्ला, बाजार या दफ्तर, कारखाने का नाम लिखो। उसके नीचे डाकखाने वाले शहर का नाम। यदि डाकखाना बहुत छोटे गांव में है, तो जिले का नाम भी कोष्ठक में लिख दो। इसके नीचे तारीख भी लिख देनी चाहिये। तारीख लिखने का कायदा यह है। तारीख महीना और संवत्। १३ मार्च १९३७। महीने का नाम न लिख कर महीने का क्रमिक नम्बर भी लिख सकते हैं। १३ मार्च १९३७ को १३-३-३७ भी लिखा जा सकता है। संवत् पूरा न लिख कर पिछले दो अंक भी काफी समझे जाते हैं। नीचे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं:—

(१) शोरा कोठी, दिल्ली १८ । २ । ३७	(२) ३० ग्वाल मण्डी, लाहौर १० । ४ । ३६
(३) डा० खा० बसीरा (मुज़फ्फर गढ़) १५ । ३ । ३७	(४) बिड़ला हाई स्कूल सब्जीमण्डी, दिल्ली, ८ । ६ । ३६
(५) दफ़्तर इन्कमटैक्स लुधियाना १२ । ११ । ३३	(६) चरखे वालां दिल्ली, ८ । ५ । ३५

हिन्दी सौर तिथि भी उपर्युक्त विधिसे लिखी जाती है, लेकिन चान्द्र तिथि के लिखने का तरीका यह है:—

चैत्र $\frac{\text{शुक्ला}}{\text{सुदी}}$ ५, १९८८। माघ $\frac{\text{कृष्णा}}{\text{बदी}}$ ८, १९९२।

सम्बोधन

पत्र की बायीं ओर तारीख के नीचे सम्बोधन लिखा जाता है। जिसे पत्र लिखना है, उसकी स्थिति के अनुसार सम्बोधन भी अलग अलग होते हैं। प्रत्येक सम्बोधन में शिष्टाचार का ध्यान रखा जाना चाहिये।

अपने से बड़ों को:—

पूज्य पिताजी, माननीय चाचाजी, आदरणीया माताजी, मान्यवर गुरुजी, श्रद्धेय महात्माजी। जिसे पत्र लिखना है, उसका असली नाम नहीं लिखना चाहिए।

अपने बराबर वालों को:—

प्रिय भाई, प्यारे मित्र, स्नेही बन्धु, प्यारी सहेली, प्रियवर धर्मदेव, प्रिय बहिन।

अपने से छोटों को:—

प्रिय पुत्र, प्यारे भाई, प्यारी बहिन, प्यारे रमेश आदि।

अभिवादन

अभिवादन पत्र के दायीं ओर लिखना चाहिये।

अपने से बड़ों को:—

सादर प्रणाम, प्रणाम, नमस्ते

अपने बराबर वालों को:—

नमस्ते, प्रणाम, वन्दे।

अपने से छोटों को:—

नमस्ते, आशीर्वाद, चिरंजीव रहो।

पत्र का मुख्य विषय

सम्बोधन और अभिवादन के बाद कुछ स्थान छोड़ कर मुख्य विषय शुरु करना चाहिये। विषय को लिखने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिये:—

(१) प्रारम्भ करने के कुछ उदाहरण ये हैं:—(१) कृपा

पत्र मिला। (२) आपका कुशल समाचार मिले बहुत दिन होगये। (३) मैं पिछले दिनों इतना कार्यव्यस्त रहा (या बीमार रहा) कि आपके पत्र का उत्तर न दे सका। (४) मैं सकुशल हूं, आशा है कि आप भी (यदि परिवार से कुछ परिचय हो, तो सपरिवार) सानन्द और स्वस्थ होंगे। आदि

(२)इसके बाद बग़ैर लम्बी भूमिका बांधे काम की बात लिखनी चाहिये। पत्र में लम्बे लम्बे वाक्य न हों। भाषा सरल हो। पत्र इस तरह लिखो, जैसे तुम बातें कर रहे हो, पर पत्र बहुत बड़ा मत करो। सँक्षेप से अपनी आवश्यक बातें लिख दो।

(३) यदि पत्र अपने से बड़े को लिख रहे हो, तो यह ध्यान रखो कि पत्र के प्रत्येक वाक्य से विनम्रता टपके। बराबर वालों और अपने से छोटों को भी पत्र लिखते हुए मित्रभाव और स्नेह-भाव का ध्यान रखो। अपमानकी ध्वनि उसमें से न निकलती हो।

(४) अन्त में बड़ों से, मेरे योग्य कोई सेवा, आदि नम्र शब्दों में पूछ लेना चाहिये। वहां के बच्चों के बारे में भी एक आध शब्द लिखना अच्छा रहता है।

लेखक का नाम

पत्र की समाप्ति के बाद दायीं ओर अपना नाम लिखना चाहिये, लेकिन उससे पहले जिसे पत्र लिख रहे हो, उसके प्रति शिष्टाचारपूर्ण शब्द लिखने चाहिये। जैसे:—

अपने से बड़ों को:—

(१) आपका विनीत पुत्र, रामकृष्ण। (२) आपकी आज्ञा कारिणी पुत्री, सावित्री। (३) आपकी स्नेहमयी पुत्री, गार्गी। (४) आपका कृपाकांक्षी, देवकीनन्दन। (५) आपका चरण सेवक, नन्दकिशोर। (६) आपका प्रेमपात्र, सत्यदेव।

अपने बराबर वालों को:—

(१) आपका प्रिय मित्र, रामदेव। (२) तुम्हारा स्नेही, चन्द्र-भानु। (३) तुम्हारी बहन, दुर्गा।

अपने से छोटों को:—

(१) तुम्हारा शुभाकांक्षी, पूर्णचन्द्र। (२) तुम्हारा हितैषी, रामनिवास।

पता

पत्र का अन्तिम अङ्ग पता है। लिफ़ाफ़ा हो या कार्ड, दोनों में मोहर वाली ओर पता लिखना चाहिये। सबसे पहले उसका नाम, जिसे पत्र भेजा है, लिखना चाहिये। नाम के साथ भी श्रीयुत, लाला, पण्डित, आदि लिखने चाहिये। नाम के पीछे कोई पदवी या खिताब वग़ैरह हो, तो वह भी लिखना चाहिये। नाम के नीचे गली मुहल्ला, स्कूल, दफ़्तर, कारखाना या घर या दुकान बाजार का नम्बर भी लिखना चाहिये। उसके नीचे डाक-खाने का नाम। डाकखाने के नीचे यदि रेखा खींच दो तो डाक-खाने की सुविधा बहुत बढ़ जाती है।

POST CARD

प्रो० देवराज जी सेठी
२. कोर्ट स्ट्रीट
लाहौर

श्री घनश्यामदास
रामगञ्ज
कोटा

ला० नारायण दास जी
५. हरिसन रोड
कलकत्ता

पता लिखने के विषय में कुछ और भी बात जान लेनी चाहिये।

१—यदि हम किसी दूसरे प्रान्त में पत्र भेज रहे हों, तो शहर के नाम के साथ ( ) में उस प्रान्त का नाम भी लिख देना चाहिये। इसी तरह यदि हम किसी छोटे मोटे गांव में चिट्ठी भेज रहे हों तो उसके जिले का नाम भी लिखना चाहिये। दोनों साथ साथ भी लिखे जाते हैं।

२—छोटे छोटे गांवों में गली या मुहल्ला लिखने की जरूरत नहीं होती। वहां डाकिया सबको पहचानता है।

(३) कभी कभी किसी की मार्फ़त चिट्ठी भेजनी पड़ती है। पिता जी कहीं सैर पर गये हों और मित्र के घर ठहरे हों, तो मित्र के मार्फ़त चिट्ठी लिखी जाती है।

(४) जिस के पास पत्र भेजना हो, उसका नाम, जाति, पदवी आदि भी लिखना चाहिये, जिससे डाकिया एक ही नाम के दो आदमियों में अन्तर कर सके। कुछ पते नीचे दिये जाते हैं।

(१) चौ० रामदास जी नागपाल

डा. खा. बारां (कोटा)

(२) चौ० रामचन्द्र बजाज

डा. खा. गुजरात

जिला मुजफ्फरगढ़. (.पंजाब.)

(३) श्रीमती सीतादेवी जी
मार्फत पं. वासुदेव जी विद्यालंकार
डा. खा. गुरुकुल कांगड़ी
ज़िला सहारनपुर (यू. पी.)

(४) मास्टर हरिश्चन्द्र जी एम. ए. बी. टी.
डी. ए. वी. हाई स्कूल
नई दिल्ली

पता लिखते समय इस बात का ध्यान बहुत ज़रूरी है कि पता बिलकुल स्पष्ट और शुद्ध लिखा जाय। ऐसा न हो कि डाकखाने के कर्मचारी को पढ़ने में कठिनता हो या भ्रम हो। बहुत से शहरों के नामों में अन्तर बहुत कम होता है, इसलिए थोड़ी सी भूल से बड़ा अनर्थ हो सकता है।

कुछ पत्र

ऊपर लिखी सब बातों पर यदि ध्यान रखा जाय, ता अच्छे, पत्र लिखने में कोई कठिनता न होगी। कुछ पत्र नीचे दिये जाते हैं। इनमें पते यहां नहीं लिखे गये।

(१) भाई की बीमारी का समाचारः—

कैसरगंज, अजमेर
८ मई १९३६

पूज्य पिता जी,

सादर नमस्ते।

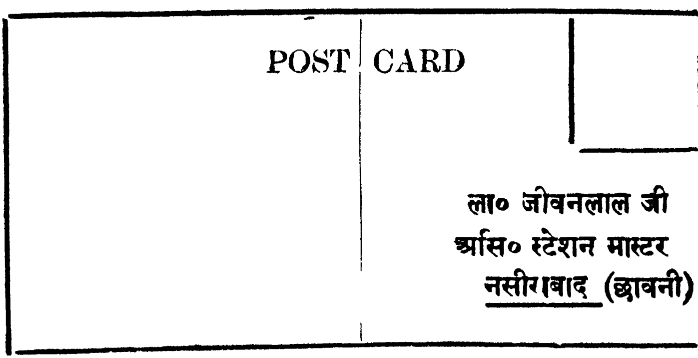
आपका कृपापत्र मिला था, छोटे भाई की बीमारी में लगा

रहने के कारण उत्तर न दे सका। आशा है क्षमा करेंगे।

यहां गरमी एकदम बहुत बढ़ गई है। इसी से भाई बेचैन भी बहुत रहा। आपको याद करता रहा। लेकिन अब स्वस्थ है। आप चिन्ता न करें।

माता जी को चरणवन्दना कहें। बहन शान्ता को प्यार। मेरे योग्य सेवा ?

आपका आज्ञाकारी पुत्र
रामलाल



(२) माता से कुशल समाचारः—

म्यूनिसिपल मिडिल स्कूल
बाजार सीताराम, दिल्ली
२५ अगस्त १६३५

माननीय माता जी,

सविनय प्रणाम।

बहुत दिनों से आपका कृपा पत्र प्राप्त नहीं हुआ। क्या आप

अप्रसन्न हैं ? आप अपनी कुशलता का समाचार शीघ्र लिखें । मैं दसहरे की छुट्टियों में आपके पास आ सकूंगा, इससे पहले तो छुट्टी मिलनी कठिन है ।

यहां आजकल कई दिनों से वर्षा हो रही है । वहां क्या हाल है ? छोटा भैया तो खूब खेलता होगा । उसे देखने को दिल बहुत चाहता है । उसे मेरी ओर से प्यार ।

अपनी कुशल का समाचार अवश्य लिखें ।

आपका विनीत पुत्र
देवकीनन्दन

---

(३) माता का उत्तरः—

गुड़गांवा
२७ अगस्त १६३५

प्रिय पुत्र देवकीनन्दन,

चिरंजीव रहो

तुम्हारा पत्र मिला । कुछ दिन पहले मुझे यहां से अकस्मात् ही रोहतक चले जाना पड़ा । वहां तुम्हारे चाचा जी के घर छोटे बच्चे का नामकरण था । तुम्हें बुलाते, तो तुम्हारी पढ़ाई में विघ्न पड़ता । नामकरण संस्कार बहुत अच्छी तरह हो गया । छोटे बच्चे का नाम रखा है 'रमेश' । मैं २४ अगस्त को ही यहां लौटी हूँ । मैं सकुशल हूँ । तुम्हारा छोटा भाई शिवनन्दन दिन भर

खेलता रहता है। तुम दसहरे की छुट्टियों में आओगे, मैं दिन गिन रही हूं।

तुम्हारी मां
लक्ष्मीबाई

---

(४) छोटे भाई की मृत्यु पर सांत्वना:—

१५. शोरा कोठी (के ब्लाक)
दिल्ली
३०–११–३७

प्रिय मित्र रामशरण,

नमस्ते

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे छोटे भाई की अकाल मृत्यु का शोकसमाचार पढ़ कर अत्यन्त दु:ख हुआ। मुझे तो यह विश्वास ही नहीं होता कि वह यह संसार छोड़ गया है। उस का हँसता हुआ चेहरा मुझे रह रह कर याद आता है। मैं सोचता हूं कि इस दुर्घटना से तुम्हारी प्रेममयी मां का क्या होगा? उनकी विपत्ति की कल्पना भी करना असंभव है।

मुझे खुद नहीं सूझता कि मैं किन शब्दों में तुम्हें तसल्ली दूं? लेकिन भाई, उस परमात्मा के आगे किसी की नहीं चलती। जो चला गया, वह लौट कर नहीं आयगा। यह संसार तो अनित्य है, हर एक ने जरूर जाना है। तुम समझदार हो, अपने आप को ही नहीं, मां को भी तसल्ली देना। और वह प्यारी छोटी

बहिन, जो उसके कंधों पर चढ़ती थी, कैसे इस कष्ट को सहन करती होगी ?

मुझे दफ़्तर से छुट्टी नहीं मिली। इसलिए आगामी रविवार को मैं आऊँगा।

तुम्हारा शोकातुर भाई

विश्वम्भरनाथ

---

(५) पुत्र पैदा होने पर बधाई:—

अम्बाला रेलवे स्टेशन

१७ जून, १६३६

माननीय चाचा जी,

नमस्ते।

पूज्य पिता जी के पत्र से ज्ञात हुआ कि आप के घर मेरा (चचेरा) भाई पैदा हुआ है। यह पढ़कर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। परमात्मा बालक को बल, बुद्धि विद्या और आयु प्रदान करें।

आपका विनीत

गौरीशङ्कर

(६) रज़ाई मंगाने के लिए पत्रः—

आर्य कन्या पाठशाला,
लुधियाना
६ दिसम्बर १६३६

पूज्य माता जी,

सादर प्रणाम।

मैं जब यहां आयी, तो रजाई लाना भूल गई। एक कम्बल और शाल मिलाकर अब तक तो गुज़ारा करती रही, लेकिन अब सरदी बहुत बढ़ गई। अगले सप्ताह चाचा जी यहां आवेंगे। उनके हाथ रजाई जरूर भिजवा दें। भूल न जाइये। ठण्ड बहुत पड़ रही है।

घर पर हिन्दीव्याकरण की पुस्तक भी छोड़ आई हूं। यह भी साथ भिजवा दें। उसके बिना काम में हर्ज होता है। आशा है, आप सब सकुशल होंगे। भाई जी और भाभी जी को नमस्ते। मैं अच्छी तरह से हूँ आप चिन्ता न करें।

आपकी आज्ञाकारिणी
सीता

अभ्यास (४६)

१. पिता जी को एक पत्र लिखो, जिसमें अपने स्कूल की पढ़ाई और खर्च का हाल लिखो।

२. पत्र द्वारा अपने मित्र को गरमी की छुट्टियों में अपने पास आने के लिये लिखो।

३. दादाजी को पत्र लिखो और उनसे उनके स्वास्थ्य का समाचार पूछो।

४. अपने मामा को पत्र लिखो कि वे आकर तुम्हारी माताजी को ले जावें।

५. एक मित्र के पिता का देहान्त हो गया है। तुम पत्र लिखकर उससे सहानुभूति प्रकट करो।

६. मेरे विवाह पर तुम नहीं आये, मित्र के इस उलहने का उत्तर दो।

७. बड़े भाई को अपने मासिक व्यय के विषय में पत्र लिखो।

८. तुम्हें छोटे भाई की बीमारी की सूचना मिली है। बोर्डिङ्ग हाउस से बड़े भाई को पत्र लिखकर उसका हाल पूछो।

९. तुम गरमियों की छुट्टियों में पिता जी के साथ दूसरे स्थान गये हो, उस स्थान का हाल लिखो।

प्रार्थनापत्र

प्रार्थनापत्र या अर्जी लिखते हुए भी उन सब नियमों का ध्यान रखना चाहिए, जिनका निजू पत्रों में। लेकिन निजू पत्रों से इनमें कुछ अन्तर भी होता है। वे अन्तर ये हैं:—

१. लेखक का पता और तारीख़ ऊपर देने की बजाय पत्र की समाप्ति पर बांयी ओर लिखना चाहिये।

२. पत्र में सब से ऊपर 'सेवा में' लिखकर जिसे प्रार्थना-पत्र लिखना हो, उसकी पदवी और पता आदि लिखना चाहिये।

३. सम्बोधन में आदर आदि तो हो, लेकिन लम्बा न हो।

४. अभिवादन की आवश्यकता नहीं है।

५. मुख्य विषय अत्यन्त संक्षेप से, परन्तु स्पष्ट शब्दों में लिखना चाहिये। कुशल प्रश्न आदि नहीं करने चाहिये।

६. नीचे बांयी ओर तारीख़ और अपना पता तथा दायीं ओर अपना नाम लिखना चाहिये। नाम लिखते हुए 'आपका विनीत', 'आपका आज्ञाकारी', 'आपका विनम्र सेवक' आदि शिष्टाचारपूर्ण शब्द अवश्य लिखने चाहियें।

कुछ आवेदन पत्र

(१) हैडमास्टर के लिए:—

सवा में—

श्रीमान् हैडमास्टर साहिब

जैन विद्यालय

दिल्ली।

मान्यवर,

निवेदन है कि मेरे भाई का विवाह १२ जुलाई १६३६ को होना निश्चित हुआ है। बारात ११ जुलाई को जायगी।

प्रार्थना है कि ता० ६ जुलाई से १४ जुलाई तक की मुझे छुट्टी प्रदान करने की कृपा करें ।

ता० ८ जुलाई } १९३९	आपका आज्ञाकारी पुरुषोत्तम

---

(२) छात्रवृत्ति के लिये प्रार्थना:—

सेवा में

श्रीयुत व्यवस्थापक कन्या विद्यालय, तेलीवाड़ा

दिल्ली ।

श्रीयुत महोदय,

सेवा में निवेदन है कि जब मैं पांचवीं श्रेणी में थी, तब मुझे ३ रु० प्रति मास वज़ीफ़ा मिलता था । अब मुझे मालूम हुआ है कि ४ रु० मासिक की छात्रवृत्ति खाली हुई है । मैं अपनी श्रेणी में प्रथम रही हूं । इसलिए वह छात्रवृत्ति मुझे दिलवाकर कृतार्थ करें ।

१३ अप्रैल } १९३९	आपकी आज्ञाकारिणी सुशीला ६ष्ठ श्रेणी

---

(३) जुर्माना माफ़ कराने के लिए:—

सेवा में—

श्रीमान हैडमास्टर साहब

बिड़ला हाईस्कूल, दिल्ली ।

मान्यवर,

पूज्य पिता जी के अचानक तार आजाने पर मुझे यहां

से उसी रात को चले जाना पड़ा। वहां बीमार होजाने के कारण मैं छुट्टी के लिये प्रार्थनापत्र न भेज सका। इसलिए आपने मुझ पर जो जुर्माना किया है, उसे माफ़ करने की कृपा करें। मैं अनुगृहीत हूँगा।

१२ मई
१९३९ ई०

आपका विनम्र
धर्मवीर

---

(४) काम सीखने की प्रार्थना:—

सेवा में—

सैक्रेटरी दिल्ली क्लाथ मिल्स,
दिल्ली।

श्रीयुत महोदय,

मुझे मिल के एक कार्यकर्ता से मालूम हुआ है कि आप वार्पिङ्ग डिपार्टमैण्ट में कुछ नये सीखने वाले भरती कर रहे हैं। मैं भी इस कार्य को सीखना चाहता हूं। मुझे विश्वास है कि यदि आप मुझे अवसर देंगे तो मैं बहुत जल्दी इस काम को सीखकर आपको सन्तुष्ट कर सकूंगा। मैं मिडिल पास हूं। पिता जी की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण मैं आगे पढ़ नहीं सकता।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मुझे अनुमति देकर कृतार्थ करेंगे।

१९। १०।३२

आपका विनीत
लाल बहादुर

(५) नौकरी के लिए प्रार्थना:—

सेवा में—

श्रीमान् चैयरमैन साहब शिक्षाविभाग

दिल्ली।

मान्यवर,

सेवा में निवेदन है कि सेवक ने इसी साल सन् १६३५ में हिन्दी मिडिल प्रथम डिविजन में पास किया है। अब पूज्य पिता जी के आकस्मिक देहावसान से और आगे पढ़ना असम्भव है। अतः सेवक को किसी स्कूल में अध्यापक के पद पर नियुक्त करने की आज्ञा देकर अनुगृहीत करें।

४ अप्रैल ३६
४ रामस्वरूप बिल्डिंग
सब्जीमण्डी, दिल्ली

प्रार्थी
हरिशङ्कर

(६) समाचार छापने की प्रार्थना:—

सेवा में—

श्रीयुत सम्पादक 'अर्जुन'

दिल्ली।

श्रीयुत महोदय,

मैं अपने स्कूल के वार्षिकोत्सव का समाचार भेज रहा हूँ। अपने सम्मानित पत्र में प्रकाशित करने की कृपा करें।

४ अक्टूबर १६३५ — भवदीय

हाईस्कूल गाज़ियाबाद — शिवनारायण

निमन्त्रण व चैलेंज

प्रिय बहिन,

नमस्ते ।

आगामी वसंत पंचमी के शुभ दिवस पर प्रात: ६ बजे चि सुभाष का मुण्डन संस्कार होगा । आप से प्रार्थना है कि इस अवसर पर पधार कर उत्सव की शोभा को बढ़ावें ।

आपकी:—

३८ चिरजीलाल बिल्डिंग
रोशनारा रोड, दिल्ली

ईश्वर देवी
१० । २ । ३६

———

(८) फुटबाल का चैलेंज:—

सेवा में—

श्रीमान् गेम सैक्रेटरी, स्कूल नरेला,

प्रियवर,

निवेदन है कि हम लोग आपकी टीम से ता० ८ अक्टूबर १९३५ को ४ बजे सायंकाल फुटबाल मैच खेलना चाहते हैं आशा है कि आप इसे अवश्य स्वीकृत करेंगे । खेल आपके मैदान में ही होगा । आप शीघ्र ही उत्तर से सूचित कीजिये ।

आपका

२ अक्तूबर १९३५

रामलाल (कैप्टेन)
यूनियन टीम
सनातनधर्म हाईस्कूल दिल्ली

शिकायती पत्र

सेवा में—

हैल्थ आफ़िसर

म्यूनिसिपैलिटी, दिल्ली

महोदय,

जब से बरसात शुरू हुई है, सब्जीमण्डी की दाहिनी सड़क बहुत ही खराब रहने लगी है। सब पानी बहकर नीचे आ जाता है और नाली से पानी का निकास नहीं होता। सब्जीमण्डी के पास की टट्टी से भी मैला नाली में गिरता रहता है। भंगी ठीक तरह साफ़ नहीं करते। इससे बदबू और भी बढ़ जाती है। वहां से गुजरना भी कठिन हो जाता है। वहां से मक्खियां उड़ उड़ कर सब्ज़ी पर बैठती हैं और इस तरह सारे शहर में बीमारी फैलने का कारण बनती हैं।

आशा है आप इसकी उचित व्यवस्था करेंगे।

आपका:—

प्रकाशानन्द वैद्य

१०-५-३६ सब्जीमण्डी

---

(१०) दारोगा को गुण्डों की शिकायतः—

सेवा में—

दारोगा साहब,

थानामण्डी, दिल्ली।

महोदय,

सेवा में निवेदन है कि शोरा कोठी के मुहल्ले में दो चार

गुंडों ने सब रहने वालों को परेशान कर रखा है। वे गली में ऐसी फ़ोश गालियां बकते हुए निकलते हैं, कि किसी भले घर की स्त्री का गुज़रना कठिन हो जाता है। पिछले पांच छः दिनों में दो तीन छोटी मोटी चोरियों की घटनायें भी हो चुकी हैं। हमें इन पर सन्देह है, यद्यपि कोई पुष्ट प्रमाण हमारे पास नहीं है। ये समय समय पर मारपीट करने से, गाली गुफ़्तार करने से भी कभी नहीं झिझकते, इसलिए इनसे कभी कोई झगड़ा मोल नहीं लेना चाहता।

आप से प्रार्थना है कि इस बारे में शीघ्र ही कोई क़दम उठावें, ताकि हम लोगों की दिक़्क़तें दूर होवें।

इस की एक कापी कैप्टिन पुलिस, दिल्ली को भी भेज रहे हैं।

आपके:—

१. रामचरण

२. शिवदयाल

१७-९-३० ३. लाल बहादुर

४. शिव नन्दन

५. प्रभातकुमार (आदि)

अभ्यास (५०)

(१) इंकमटैक्स के दफ़्तर में एक जगह खाली हुई है, उसके लिए एक प्रार्थना पत्र लिखो।

(२) एक निर्धन विद्यार्थी के पिता की ओर से हैडमास्टर साहब को छात्रवृत्ति के लिए प्रार्थनापत्र लिखो।

(३) एक शहर की जनता की ओर से एक प्रार्थनापत्र ट्रैफ़िक सुपरिण्टैण्डैण्ट, जी. आई. पी. रेलवे को लिखो कि मेल ट्रेन उस शहर के स्टेशन पर भी रोकी जाया करे।

(४) तुम्हारे चाचा के घर में चोरी होगई है, वह घर पर नहीं हैं। पुलिस दारोगा से पत्र द्वारा खोज करने की प्रार्थना करो।

(६) नगर में हैजा फैल रहा है और तुम्हारे मुहल्ले में सफ़ाई नहीं रहती, इस लिए दारोग़ा सफ़ाई या हैल्थ आफिसर का ध्यान इधर खींचो।

(६) तुम्हारे पिताजी का देहान्त हो गया है और तुम्हारी माता फ़ीस नहीं चुका सकती, इसलिए हैडमास्टर से प्रार्थना करो कि फ़ीस माफ़ होजाय।

(७) तुम किसी आकस्मिक कारण से स्कूल नहीं जा सके, इस लिए हैडमास्टर से जुरमाना माफ़ करने की प्रार्थना करो।

(८) एक कन्या पाठशाला में अध्यापिका की जगह रिक्त हुई है, उसके लिए प्रार्थनापत्र लिखो।

(९) तुम्हारे पिताजी की बदली दूसरे शहर में हो गई है; तुम्हें भी उनके साथ जाना होगा, सर्टिफ़िकेट के लिए हैडमास्टर साहब को प्रार्थनापत्र लिखो।

(१०) तुम क्रिकेट टीम के कप्तान हो, दूसरे स्कूल की टीम के कप्तान ने तुम्हें मैच खेलने के लिए लिखा है। उसे

क—स्वीकृतिसूचक उत्तर दो।

ख—अस्वीकृतिसूचक उत्तर दो।

(११) एक पत्र के सम्पादक को अपने स्कूल में हुई मैच का हाल लिखो। (दोनों पार्टियों का परिचय—खेल का परिणाम और कोई विशेष बात लिखनी चाहिए)

(१२) एक पत्रसम्पादक को लिखो कि म्यूनिसिपल कमेटी तुम्हारे मुहल्ले में रोशनी का कोई प्रबन्ध नहीं करती।

कामकाजी पत्र

कामकाजो पत्रों में भी निजू पत्रों से थोड़ा बहुत अन्तर होता है। काम काजी पत्र में—

१—अपने पते और तारीख़ के नीचे पत्र पानेवाले का पता भी बाईं ओर लिखना चाहिये।

२—सम्बोधन में आदरसूचक शब्दकी ज़रूरत नहीं है। माननीय आदरणीय आदि किसी को नहीं लिखना चाहिए।

३—कुशलता—समाचारों की आवश्यकता नहीं होती।

४—पत्र बहुत संक्षेप से लिखना चाहिये।

कुछ काम काजी पत्र यहां दिये जाते हैं:—

(१) पुस्तकें मंगाना:—

डी. ए. वी. हाईस्कूल,

अजमेर

मैनेजर ११।४।३७

शारदामन्दिर, नई सड़क, दिल्ली।

प्रिय महोदय,

निम्न पुस्तकें वी० पी० से जल्दी भेजने की कृपा करें—

१—हिन्दी व्याकरण	५ प्रति
२—सरल रचना विधि (२ भाग)	१५ प्रति
३—सरल रचना विधि (१ भाग)	३० प्रति
४—हिन्दी शिक्षा (प्राईमर)	५५ प्रति

भवदीय

राजेन्द्र प्रसाद

हैडमास्टर

---

(२) पुस्तकें भेजने की सूचना:—

शारदा मन्दिर

दिल्ली

१६ अप्रैल १९३७

श्रीयुत हैडमास्टर डी. ए. वी. हाईस्कूल

अजमेर

प्रिय महोदय,

आपकी आज्ञानुसार सब पुस्तकें आपकी सेवामें भेज रहे हैं। आशा है, वी० पी० छुड़ाने में देर न करेंगे।

हमारे योग्य और कोई सेवा ?

भवदीय

ह०

मैनेजर

(३) १०००) रु० कर्ज़ मांगनाः—

रामनिवास,

अलीपुर रोड, दिल्ली

१० । ३ । ३५

प्रिय महाशय,

कुछ दिन पहले मैंने आपसे निवेदन किया था कि यदि आप मुझे १०००) रु० एक वर्ष के लिए कर्ज देंगे, तो मुझपर बहुत कृपा होगी। इस समय मुझे रुपये की अत्यन्त आवश्यकता है, क्योंकि दुकान के लिए नया माल मंगाना है।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि नियत अवधि से पहले ही आपकी सब रकम मय सूद चुकाने का प्रयत्न करूंगा। आप जिस दिन के लिए कहें, मैं वहां आकर तमस्सुक लिख दूंगा। इस कष्ट के लिए क्षमा करेंगे

आपके उत्तर की प्रतीक्षा में

आपका

रामलाल

(४) लेनदार का तकाज़ाः—

८५, चान्दनी चौक, दिल्ली ।

८ । ६ । ३६

प्रिय महोदय,

आपने डेढ़ वर्ष पहले १०००) रु० कर्ज़ लिया था। उस समय आपने यह विश्वास दिलाया था कि आप एक साल के भीतर ही सब रक़म चुका देंगे। लेकिन अब डेढ़ साल होगया है। आप कई बार तकाजा करने पर भी नहीं दे रहे। १०००) रु० मूल धन और ६०) रु० व्याज ।।) सैंकड़ा की दर से कुल १०६०) रु० एक सप्ताह तक भिजवा दें। यदि एक सप्ताह तक वह रकम मुझे नहीं मिली, तो मुझे लाचार होकर कोई और कदम उठाना पड़ेगा। अदालती कार्रवाई के सब ख़र्चों के ज़िम्मेवार आप होंगे।

आपका

सुमेर सिंह।

---

(५) रेलवे टिकट वापस करनाः—

गुजरांवाला

२ नवम्बर १६३४

सेवा में—

दी चीफ़ कमर्शल मैनेजर

नार्थवैस्टर्न रेलवे, लाहौर

प्रिय महोदय,

मैं आपके पास दशहरे का रियायती टिकट नं० १४०००६

(लाहौर से गुजरांवाला) भेज रहा हूं। इसका इस्तेमाल मैंने नहीं किया। कृपा कर इसका मूल्य वापस भिजवा दीजिये।

आठ दिन पहले बाज़ार जाते हुए एक मोटर से मैं टकरा गया था। तब से मुझे चारपाई पर ही रहने के लिए विवश होना पड़ा। अब इस टिकट के प्रयोग की मियाद खतम हो गई है। मुझे आशा है कि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे।

आपका—

पूर्णचन्द्र

---

(६) मकान मुरम्मत करने का नोटिसः—

रामलाल बिल्डिग,

सब्जीमण्डी,

दिल्ली

१५–६–३२

प्रिय महाशय,

आप जानते हैं कि मैं चार वर्ष से आप के मकान में रहता हूं। हर महीने ठीक समय पर आपको किराया भी मिल जाता है। तो भी आप इस मकान की जरूरी मरम्मत नहीं कराते। आंगन की नाली फूट गई है। इसके सिवा बरसात में मकान इतना टपकता है कि कहीं सामान रखने को जगह नहीं मिलती। आप से कई बार शिकायत की गई, लेकिन खेद है कि आप मेरी कठिनाई का कुछ भी विचार नहीं करते। अब मैं अन्तिम बार आप को सूचना देता हूँ कि यदि चार दिन तक आपने मुरम्मत न कराई, तो मैं

स्वयं मुरम्मत करा लूँगा और सब व्यय किराये से काट लूँगा।

आशा है, इस विवशता के लिए क्षमा करेंगे।

आपका:—

दत्तात्रेय

रसीद

रसीद का मतलब साफ़ साफ़ लिखना चाहिये। नीचे बायें किनारे पर कम से कम दो गवाहों के हस्ताक्षर होने चाहियें। यदि हस्ताक्षर करने वाला लिखना न जानता हो, तो अंगूठे का (स्त्री का दाहिना और पुरुष का बायां) निशान होना चाहिये। दूसरी ओर रसीद देने वाले के हस्ताक्षर हों। यदि २०) रु० से अधिक का लेन देन हो, तो एक आने का टिकट लगाना चाहिये। रुपयों की संख्या में हेरफेर न हो सके, इस लिए उसकी आधी संख्या भी लिखनी चाहिये। पशुओं की रसीद में पशु की आयु, रँग, कद सींग, पूँछ आदि का भी संक्षिप्त परिचय होना चाहिये।

(१)

रसीद चार सौ अस्सी रुपये, जिसके आधे दो सौ चालीस होते हैं, ला० रामधन वल्द ला० रामदयाल बसीरा (ज़िला मुज़फ़्फ़रगढ़) निवासी से बही के लेखे के अनुसार वसूल कर के यह रसीद लिख दी है, जिससे समय पर काम आवे। अब

रामधन से मुझे कुछ नही लेना। सब हिसाब साफ हो गया है।

१—गवाह ता २२ अक्तूबर सन १९३५

(ह०) नानकचन्द पुत्र सीताराम

(२) —गवाह (ह०) हरिश्चन्द्र स्टाम्प

(ह०) नारायणसिंह पुत्र कृपाराम

---

(२)

साढ़े बावन रुपये, जिनके आधे छब्बीस रुपये चार आने होते हैं, बाबत लगान फसल रबी सम्वत १९९० वि. रामलुभाया पुत्र विलायतीराम जाट रोहतक निवासी से वसूल पाकर यह रसीद लिख देता हूं, ताकि समय पर काम आवे।

ह करमदीन (नम्बरदार)

ता० २० चैत १९९०वि. लिखी ध्यानसिंह पटवारी रोहतक

---

(३)

सत्तर रुपये, जिनके आधे पैंतीस रुपये होते है, बाबत मूल्य एक बैल, लाल रंग, आयु तीन बरस, सींग बड़े और नोकीला, पीठ पर सफेद हिस्सा; एक गौ रंग सफेद आयु चार बरस, सींग मुड़े हुए और दो बछड़े रंग सफेद उम्र क्रमशः छः मास और डेढ़ साल इलाही वल्द फरीद जाति पठान नवांकोट (मुलतान) निवासी से वसूल पाकर यह रसीद लिख देता हूं जिससे समय पर काम आवे।

गवाह (१) ह० .. ... ह० स्टाम्प

गवाह (२) ह०. . . ..

मनीआर्डर

यदि कभी किसी सम्बंधी, मित्र या दुकानदार को एक शहर से दूसरे शहर रुपये भेजने हों, तो डाकखाने द्वारा ऐसा कर सकते हैं। यह फ़ार्म अंग्रेज़ी, दिया हुआ है। उर्दू और हिन्दी आदि में पोस्ट आफ़िस से मुफ़्त मिलता है। इसका कुछ भाग तो डाकखाने वाले भरते हैं और कुछ भाग रुपया भेजने वाले को भरना पड़ता है। यह फ़ार्म भर कर डाकखाने के बाबू को देना चाहिये। रक़म और फ़ीस या कमीशन भी पोस्टमास्टर को दे देने चाहियें।

जब दूसरे शहर के पोस्ट आफिस में मनीआर्डर फ़ार्म जाता है, तो चिट्ठीरसां पाने वाले के पास मनीआर्डर और रकम ले जाता है। दो जगह अपने हस्ताक्षर करके रुपया ले लेता है। पोस्ट आफ़िस हस्ताक्षर वाला एक भाग भेजने वाले को वापिस भेज देता है। यही उसके हाथ में रसीद आ जाती है।

(अध्यापकों को चाहिये मनीआर्डर फ़ार्म पोस्ट आफ़िस से मगा कर प्रत्येक विद्यार्थी से अलग अलग भरावें।)

मनीआर्डर फ़ीस

१०) रु० तक ≈), १०) से २५) रु० तक ।), २५) रु० से अधिक प्रति १०) रु० पर ≈) फ़ीस लगती है। एक मनीआर्डर द्वारा ६००) रु० से अधिक नहीं भेज सकते। अति शीघ्र रुपया भेजना हो तो तार द्वारा रुपया भेजना चाहिये। इसके लिए भी फ़ीस वही लगती है,

जो मनीआर्डर की लगती है। लेकिन तारव्यय तथा दो आना प्रति मनीआर्डर और देना होता है।

अभ्यास (५१)

(१) कन्यापाठशाला के लिए कुछ पुस्तकें शारदा मन्दिर नई सड़क, दिल्ली से मँगाओ।

(२) एक दुकान को लिखो कि उसने मंगाये गये माल से भिन्न माल भेजा है, इस लिए वापिस कर ले।

(३) एक ग्राहक को पत्र लिखो कि उसने दो महीने से खरीदी चीजों का मूल्य नहीं चुकाया, जल्दी चुकावे।

(४) एक दुकानदार को पत्र लिखो कि उसके बीजक में अमुक अमुक वस्तु का दाम अधिक लिखा गया है।

(५) ४२५ ।।।) रु० की रसीद ग्राहक को लिख दो।

(६) एक कर्ज़दार ने कर्ज़ में दो घोड़ियां और एक बैल दिया है, जिनका मूल्य २५१) होता है, उसे रसीद लिख कर दो।

(७) पुत्र को १२) रु० का मनीआर्डर भेजो।

(८) अपने मित्र को ५०) रु० का मनीआर्डर भेजो।

बात चीत

—:o:—

(दुकानदार और ग्राहक में)

ग्राहक—भाई साहब, नमस्ते।

दुका०—नमस्ते, आज्ञा कीजिए।

ग्राहक—मुझे एक २ दस्ते वाली दो कापियां चाहिएँ।

दुका०—लकीरदार हों या कोरी ?

ग्राहक—कोरी।

दुका०—कितने पौण्ड का काग़ज़ लगा हो ?

ग्राहक—दस पौण्ड

दुका०—मुझे खेद है कि दस पौण्ड वाली कोरी कापियां तैयार नहीं हैं। आठ पौण्ड-बारह पौण्ड वाली तो मिल जायेंगी।

ग्राहक—आठ पौण्ड वाली और बारह पौण्ड वाली कापियों के दाम क्या २ होंगे ?

दुका०—आठ पौण्ड वाली के तीन आने और बारह पौण्ड वाली के चार आने।

ग्राहक—दोनों नमूने दिखलाइये।

दुका०—यह लीजिये। बारह पौण्ड वाली कापी का काग़ज़ बढ़िया है। और इसके काग़ज़ के दोनों तरफ़ अच्छी तरह लिखा जा सकता है।

ग्राहक—मेरे ख़याल में भी यही अच्छी है। दामों की बात नहीं, चीज़ अच्छी होनी चाहिये।

दुका०—बहुत अच्छा। लीजिये दो कापियां।

ग्राहक—यह आठ आने लीजिये।

दुका०—धन्यवाद।

(दो विद्यार्थियों में ईस्टर की छुट्टियों की समाप्ति पर)

मोहन—भाई श्याम, नमस्ते।

श्याम—नमस्ते मित्रवर! सुनाइये छुट्टियां कैसे बीतीं?

मोहन—बड़े मजे में। जो आनन्द अब उठाया, पहले कभी नहीं उठाया।

श्याम—वह कैसे?

मोहन—सुनो। स्कूल बन्द होते ही हमने आगरे जाने का निश्चय किया। तुम्हें मालूम है कि वहां बहुत से ऐतिहासिक स्मृति चिह्न हैं। उन्हें देखने के लिये और खुशी खुशी समय बिताने के लिए एक साथियों की टोली बन गई और हम दूसरे रोज़ आगरे पहुँच गये।

श्याम—खूब! पर वहां क्या २ देखा?

मोहन—बहुत कुछ। पहले रोज़ तो लाल किला और ताजमहल। दूसरे रोज़ सिकन्दरा और फ़तहपुरी की इमारतें। तीसरे रोज़ दयालबाग़ के भिन्न २ कला-कौशल के नमूने।

श्याम—तब तो भाई, बड़ा आनन्द उठाया। काश, मैं भी तुम्हारे साथ होता!

मोहन—अगली बार तुम्हें अवश्य जाना चाहिए। अच्छा! वहां तो ग़ज़ब की इमारतें हैं। कहो तो, तुम्हें उनके फ़ोटो दिखाऊं?

श्याम—कहां हैं?

मोहन—मेरे बस्ते में। मैंने वहां चित्रों की एक किताब मोल ली थी। आठ आने में आई। बड़ी सावधानी से रखता हूं। (बस्ते से निकाल कर दिखाता है)

श्याम—यह किस का फ़ोटो है?

मोहन—ताज का।

श्याम—कैसा सुन्दर है! यह किस की स्मृति में बना था?

मोहन—यह अकबर के पोते शाहजहां ने अपनी प्यारी पत्नी मुमताज़ की स्मृति में बनवाया था। इस पर करोड़ों रुपया ख़र्च हुआ। एक अपूर्व बिल्डिंग तैयार होगई।

श्याम—यह किसका फ़ोटो है?

मोहन—यह किले दीवानेआम का। इसमें......................

(स्कूल की घण्टी की आवाज़ सुनाई देती है) चलो श्याम, उपस्थिति लगने वाली है। शेष सब छुट्टी के बाद बताऊंगा।

श्याम—बहुत अच्छा।

(धोबी और मोची में)

धोबी—भाई, तुम बड़े भाग्यवान् मालूम होते हो। रोज़ नये २ बूट और जूते बनाते हो। हम कम्बख्तों को मैले कुचैले कपड़ों से ही रात दिन वास्ता पड़ता है।

मोची—यह तुम्हारा निरा ख्याल ही है कि हम भाग्यशाली हैं। हमें फटे पुराने जूतों की मरम्मत भी तो करनी पड़ती है। यह बड़ा टेढ़ा काम है। सारा दिन एक जगह पर बैठे २ दिल भी ऊब जाता है। तुम लोग मज़े में हो, खुली हवा में काम करते हो और प्रकृति के दृश्यों का आनन्द उठाते हो।

धोबी—खुली हवा में हम अवश्य काम करते हैं। पर सच तो यह है कि मैं इसे पसन्द नहीं करता। जब कड़ाके की सर्दी पड़ती है, तो पानी में खड़े होने से नानी याद आ जाती है। इसपर तुर्रा यह है कि पानी में खड़े २ पीठ भी दर्द करने लगती है।

मोची—भाई, पीठदर्द की खूब कही। तुम्हें तो थोड़ी बहुत दर्द होती होगी। हम लोगों की यह हालत है कि इस तरह काम करने के लिये बैठना पड़ता है कि हमेशा के लिए हम कुबड़े हो जाते हैं। तुम्हारे काम में एक बड़ा लाभ यह है कि तुम्हें नगर के उत्तम कोटि के लोगों से वास्ता पड़ता है। हमारे पास छोटे २ दर्जे के लोग ही आकर जूते बनवाते हैं। अच्छे लोग तो बाटूजा—महरा—बाटा जैसी

दुकानों पर जाकर ही जूते खरीदते हैं।

...बी—यह ठीक है, पर हम लोगों को इस से कुछ लाभ नहीं। बड़े दर्जे के लोगों का तो यह हाल है कि यदि उनके कपड़े दूसरों से मिल जाएं अथवा उनका फटा पुराना कपड़ा गुम हो जाय तो आफ़त आजाती है। इतनी बुरी तरह गाली गलौच देते हैं कि कुछ न पूछिये। तुम लोगों को यह आराम है कि न किसी के यहां जाना पड़ता है, न इतने भारी २ बंडल उठाने पड़ते हैं, न ही घर २ टक्करें खानी पड़ती हैं। एक जगह बैठ कर मज़े में अपना काम चलाते हो। लोग तुम्हारे पास आते हैं और काम कराते हैं।

...—मैं मानता हूँ कि हमें इस बात का लाभ अवश्य है। परन्तु हम लोगों के पास खड़ा ही कौन होता है ? लोग हमें घृणा की दृष्टि से देखते हैं, दूर ही दूर खड़े रहते हैं। हमें चमार समझकर छूना भी पाप समझते हैं। हम लोग वास्तव में बड़े अभागे हैं।

धोबी—मैं देख रहा हूँ कि हम में से कोई भी अपने भाग्य से संतुष्ट नहीं है। किन्तु इस असंतुष्टि से क्या लाभ ? हमें परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिये कि उसने हमें सब से बड़ी चीज़ 'स्वास्थ्य' दिया है। यह ऐसी चीज़ है, जिसके लिये बड़े से बड़े अमीर भी लालायित रहते हैं।

अभ्यास (५२)

बातचीत लिखोः—

(१) दो मित्रों में, जो किसी मैच के पीछे वापिस घर लौट रहे हों।

(२) माता और उसके बेटे में, जो विदेश यात्रा करनेवाला है।

(३) दो विद्यार्थियों में, परीक्षा के सम्बन्ध में—जो बिल्कुल निकट है।

(४) मोटर और इक्के में।

(५) भाग्य या उद्यम—इनमें कौन शक्तिशाली है ?

(६) धन या विद्या—इनमें कौन श्रेष्ठतर है ?

(७) हैडमास्टर और विद्यार्थी में, जो अपनी फीस माफ कराना चाहता है।

(८) कुत्ता अधिक लाभदायक है या घोड़ा ?

(९) वकालत अच्छी है या डाक्टरी ?

(१०) सिनेमा देखने जाना चाहिये अथवा नहीं ?

विस्तार

विस्तार के नियम

किसी एक पंक्ति अथवा पंक्ति समूह में प्रतिपादित विषय को विस्तृत रूप देना विस्तार कहलाता है। संक्षेप करते समय हम जहां एक वाक्य या परिच्छेद को कम शब्दों में लिखने का प्रयत्न करते हैं, वहां विस्तार करते हुए ठीक उसके विपरीत हम उसे अधिक शब्दों में लिखते हैं। एक वाक्य को विस्तृत कर हम एक परिच्छेद बना सकते हैं। इसके लिये वाक्य के अर्थ को भी खूब खोल कर लिखना होता है और यथा संभव उदाहरण अथवा प्रमाण भी उसमें जोड़ने होते हैं। ऐसा करने से वाक्य में दिये गये विचार पर एक छोटा सा निबंध बन जाता है। विस्तार के लिए प्रायः प्रसिद्ध उक्तियां ही चुनी जाती हैं। यथा—साँच को आँच नहीं, हिम्मते मरदां मदद खुदा।

विस्तार करने के निम्नलिखित नियम हैं:—

१—मूल वाक्य या वाक्य-समूह को बहुत ध्यान से पढ़ो और जब तक उसका अर्थ पूरी तरह समझ न लो, उसे पढ़ते जाओ।

२—विषय को अच्छी तरह समझ लेने के बाद उसका विस्तार करना शुरू करो। उदाहरण, युक्ति, प्रमाण आदि जोड़ो, ताकि एक छोटा सा निबन्ध बन जाय, जो एक ही परिच्छेद में आजाए।

३—यह ध्यान रखो कि मूल वाक्य की कोई बात छूटने न पावे। लेकिन विषय से बाहर की बात आप के लेख में न आवे।

४—यह समझ लो कि मूलवाक्य तो किसी परिच्छेद का सार है। वह परिच्छेद क्या होना चाहिये—यही तुमने लिखना है।

५—निम्न लिखित ढंग से मत आरम्भ करो:—

'इस उक्ति का यह तात्पर्य है' अथवा 'यह पंक्ति हमें यह सिखाती है' अथवा 'यह ऐसी आम बात है कि इसकी व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं'।

६—सरल शब्दों में और विषय की सीमा के अन्दर लिखो। यदि प्रश्न में कोई हद बाध दी हो तो उस से अधिक मत जाओ।

७—अपने लिखे को दोहराओ। व्याकरण, हिज्जे, अथवा मुहाविरे इत्यादि की कोई गलती हो तो उसे ठीक कर लो। इस बात को भी देखलो कि कोई महत्त्वपूर्ण बात रह तो नहीं गई या कोई बात गलत तो नहीं लिखी गई। एक उदाहरण देखिये—

सांच को आंच नहीं

संसार में कई लोगों का यह विचार है कि यदि वह सच बोलने लगें तो उन का काम नहीं चल सकता। दुकानदार यह सोचा करते हैं कि यदि वे चालाकी से काम न लेकर सच्चाई का आश्रय ले तो वे सदैव घाटे में रहेंगे। नौकरीपेशा लोगों का यह आम ख्याल है कि अपने अफसरों को प्रसन्न रखने के लिये कई बातों में सत्यता को तिलाञ्जलि देनी ही पड़ती है। वकीलों और अदालतों में मुकद्दमे लड़ने वालों को तो इस बात का पक्का विश्वास है कि मुकद्दमा जीतने के लिये सच को छोड़ना ही पड़ता

है। किन्तु वास्तव में बात यह है कि सच बोलने में कभी घाटा नहीं रहता। यह जरूर है कि झूठ बोलने से किसी काम में थोड़ी देर के लिये लाभ प्रतीत हो, किन्तु अन्त में सच्चाई की विजय होती है और सच बोलने वाला लोगों से सम्मान और आदर पाता है। राजा हरिश्चन्द्र की सत्यपरायणता को किसने नहीं सुना? सच्चाई पर चलने से उसे कष्ट जरूर मिले—लेकिन क्या उसका कोई बाल बांका कर सका? महात्मा गांधी, जिन्हें सत्यता की जीती जागती मूर्ति कहा जाता है—क्या उन्हें सत्यता का अवलम्बन करने से कोई हानि पहुंची है? इसके विपरीत उन का अपूर्व सम्मान—संसार में ख्याति इस कारण हुई है कि वे सत्यारूढ़ रहते हैं। इसलिये हमें मानना पड़ेगा कि सचाई पर चलने वाला कष्ट सहता हुआ भी हानि नहीं उठाता।

अभ्यास (५३)

निम्नलिखित वाक्यों का विस्तार करो:—

१. दया धर्म का मूल है।

२. ऊंचे बोल का सिर नीचा होता है।

३. जो बादल गरजते हैं, वे बरसते नहीं।

४. शीशे के घर में बैठकर दूसरे पर पत्थर फेंकना ठीक नहीं।

५. पुनि पछताये क्या होत है, जब चिड़ियां चुग गईं खेत।

६. जिसको राखे साइयां उसे मार सके न कोय।